लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा

हेम बरुवा

MT
891.450 92
B 469 B

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.45092
B469B

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहि मे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या कें लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा

लेखक
हेम बरुवा

अनुवादक
लेखनाथ मिश्र

साहित्य अकादेमी

Lakshminath Bezbarua : Maithili translation by Lekhanath Mishra of Hem Barua's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1989), **SAHITYA AKADEMI**

REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 891.450 92 B 469 B
00117171

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण 1989

MT
891.450 92
B 469 B

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029
29, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

11717
10/12/04
SHIMLA

मुद्रक
रुचिका प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

प्राक्कथन

कमलक सौरभ कमलक प्रत्येक दल जे कमलक स्वरूप बनबैत अछि, केर सुगन्धक सार थीक। भारतीय संस्कृति एवं साहित्यक मिश्र सौन्दर्यक सार ओएह थीक जे विभिन्न प्रान्तीय क्षेत्रमे उपलब्ध भेल अछि अथवा उपलब्ध कएल जा रहल अछि। जँ कमलक दलकेँ पृथक् कए देल जाए तँ कमलक अस्तित्व समाप्त भए जाएत तहिना प्रान्तीय क्षेत्रक उपलब्धिक जँ उपेक्षा कए देल जाए तँ भारतक मिश्र छवि विकृत (धूमिल) एवं भंग भए जाएत।

एहि उद्देश्य सँ संस्कृति एवं साहित्यक संसारमे प्रान्तीय क्षेत्रमे जे किछु प्राप्त कएल गेल अछि तकरा पोथी द्वारा हमरा लोकनिक देशक दोसर क्षेत्रक लोककेँ संसूचित करबाक प्रयास स्वागत योग्य थीक। साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा (1868-1938) क सम्बन्धमे ई छोट छिन पोथी एहने एक विनम्र प्रयास थीक।

एहि रूपक ग्रन्थमालाकेँ प्रकाशित करबाक निर्णय लए साहित्य अकादमी निश्चित रूपेण एहि प्रशंसनीय भावनाकेँ एक आकार देलक अछि।

जँ ई विनम्र पोथी एहि उद्देश्य केँ पूर्ति करैत अछि जाहि उद्देश्य सँ ई योजना बनाओल गेल अछि, तँ हम अपन प्रयास केँ यथेष्ट पुरस्कृत बूझब। गौहाटीक प्रो० नन्द तालुकदार पोथी सभसँ हमरा साहाय्य देलैन्हि अछि तथा पोथीक सम्बन्धमे निरन्तर जिज्ञासा करैत रहलाह अछि, हम अपन पुरान शिष्य केँ एहि लेल धन्यवाद दैत छिऐन्हि।

नयी दिल्ली
मई, 1966

—हेम बरुवा

विषय-सूची

संक्षिप्त जीवनवृत्ति	9
निबन्धकारक रूपमे	18
नाटककारक रूपमे	36
कथाकारक रूपमे	46
कविक रूपमे	55
उपसंहार	61
ग्रन्थ-सूची	63

संक्षिप्त जीवनवृत्ति

नवम्बरक आकाश सँ बाढ़ि सुन्दर कोनो वस्तु नहि अछि, ई एक कवि कहलैन्हि अछि। नवम्बरक आकाश नवम्बरक आकाश सँ किछु विशेष थीक जखन कि ई दिग्दिगन्त धरि देदीप्यमान पूर्णचन्द्रक धवल ज्योत्स्ना सँ धौत रहैत अछि जेना कि लक्ष्मीनाथ वेजबरुवाक जन्म पर भेल छल। वेजवरुवाक जन्म 1868क नवम्बर मासमे भेल छलैन्हि। जाहि रूपक वातावरण एवं परिसरमे ओ जन्म लेने छलाह से स्वयं सौन्दर्यक दृश्यपटल छल। एवं जन्मदिनक भविष्यवाणीक अनुसार नवम्बर मासमे जे जन्म लैत अछि से अवश्यमेव बहुप्रतिभा सम्पन्न होइत अछि।

ब्रिटिश सरकारक अधीन हिनक पिता दीनानाथ वेजबरुवा एक उच्च सरकारी पदाधिकारी छलाह। सड़क यातायातक विकाससँ पूर्व आवागमनक मुख्य साधन जल मार्ग छल। हिनक बदली भेला पर परिवारक सदस्यगण नाव द्वारा नौगाँव उपत्यकाक उपरी भागसँ उपत्यकाक निम्नभागमे अवस्थित बरपेटाक यात्रा कएल। जे हेतु ई एक दीर्घ एवं कठिन यात्रा छल तेँ गन्तव्य स्थान पर पहुँचबामे कतेक दिन लागल। नावकेँ रातुक समयमे ब्रह्मपुत्रक बालुकामय तट पर बान्हए पड़ैत छलै। एहने एक अवसरमे बालुकामय कछेरमे आँहटगुड़ी नामक स्थान पर बालक लक्ष्मीनाथ ओहि नावमे जन्म लेलैन्हि जे हुनक परिवारकेँ बरपेटा लए जाए रहल छलनि। एही रूपक संगीत ओ ज्योत्स्नापूर्ण आदर्श वातावरणमे जखन धवल इजोडियामे ओ बालुकामय तट चानी जकाँ चमकि रहल छल तथा ब्रह्मपुत्र अपन राजसी संगीतक लहरि तथा गर्जनध्वनिक संग बहि रहल छल, आधुनिक असमी साहित्यक एहि विक्टर ह्यूगोक जन्म भेलनि। जे हेतु हिनक जन्म लक्ष्मी पूर्णिमाक रातिमे भेल छलैन्हि तेँ युवक वेजबरुवाक नाम लक्ष्मीनाथ राखल गेलनि। एहि रूपक आदर्श वातावरणमे वेजबरुवाक जन्म स्वयं अपनामे एक प्रगीत अछि। ओ नाव तथा बालु भरल कछेर जतए लक्ष्मीनाथ जन्म लेलैन्हि, आब नहि अछि किन्तु पुरातन ब्रह्मपुत्र जे हिनक जन्मक साक्षी अछि, एहि महाकाव्यत्वपूर्ण घटनाक स्मृति-लेख अछि। वेजबरुवा अपन आत्मकथा 'मोर जीवन सौवरण'मे कहलैन्हि अछि जे ताहि दिनक आसामक समाजमे ई प्रचलित रीति छल जे जखन कोनो बालक जन्म

लत छल तखन शंख-ध्वनि होइत छल तथा अन्य शुभ धार्मिक कृत्य होइत छल। जे हेतु अनस्थरिमे तथा असाधारण परिस्थितिमे जन्म लेने छलाह, तें ई सभ वस्तु होएब सम्भव नहि छल। बालक लक्ष्मीनाथ अपन परिवारक पाँचम सन्तान छलाह।

लक्ष्मीनाथक पिताजी बरपेटा जकर ख्याति आसामी वैष्णव सांस्कृतिक वाराणसीक रूपमे छल, मे प्रायः तीन वर्ष छलाह। एहि रूपक संस्कृति एवं धर्मक स्वस्थ वातावरणमे बालक लक्ष्मीनाथक व्यक्तित्व निरन्तर विकसित एवं प्रस्फुटित भेल। तत्पश्चात् प्रशासकीय स्थानान्तरणक क्रममे हिनक परिवार तेजपुर, जकर यथेष्ट ऐतिहासिक महत्त्व अछि, आएल। तेजपुरक पहाड़ी एवं उपत्यकाक दृश्यगत सौन्दर्य बालक लक्ष्मीनाथकें नव आनन्दसँ विभोर कए देलक। रविनाथ नामक व्यक्तिक, जकरा बृद्ध बेजबरुवा धीया-पुताक तालता करबा लेल रखने छलाह, गम्भीर प्रभाव बालक लक्ष्मीनाथ पर पड़लनि। रविनाथ कठोर अनुशासक छलाह, हुनक लोक-संस्कृति एवं धार्मिक अनुशासनक ज्ञान गहन छलनि। जेना पुस्किन रूसी लोकगीत एवं लोकगाथा रूपी पुरातन सेविकासँ शिक्षा प्राप्त कएने छलाह तहिना बेजबरुवा सेहो एहि भद्रपुरुषसँ शिक्षा प्राप्त कएलनि, संगहि लोकगाथासँ, महाकाव्य सभक बहुतो कथा सभसँ तथा अन्यो बहुतो भारतीय पौराणिक कथा सभसँ ई सिखने छलाह। जतबा बेजबरुवा सम्भ्रान्त सम्पर्कसँ अपन बाल्यावस्थामे सिखने छलाह से पछाति हुनका लेल अन्तःप्रेरणा बनि गेलैन्हि। एहि रूपक ज्ञानक लाभप्रद उपयोग ओ अपन साहित्यिक रचना विशेषतः धीया-पुताक लेल लोक-कथामे कएलैन्हि अछि।

तेजपुरसँ बेजबरुवाक पिता उत्तरी लखीमपुर जे पछाति उच्च उपत्यका भेल, अएलाह। रविनाथ जे एहि छोट बालकक मित्र, दार्शनिक, एवं पथप्रदर्शक छलथिन, एहि परिवारसँ सम्पृक्त रहलाह। अपन आत्मकथामे एहि भद्रपुरुषक जे कि धीया-पुताकें खूब नीक जकाँ जनैत छलाह, सुन्दर लेखनी-छवि अंकित कएने छथि। हिनका लोकनिक घरक पड़ोसमे उत्तरी लखीमपुरमे सिद्धेश्वर नामक एक सोनार छलाह। ओ बच्चा सभक आनन्दक एक पैघ स्रोत छलाह। बच्चा सभ हुनक मड़ैया लग जमा होइत छल तथा हिनका दिश विस्मय ओ आश्चर्यपूर्ण नेत्रसँ देखैत छल जे कोना ई लोकप्रिय आभूषणमे अपन बुद्धिकौशल प्रदर्शित करैत छथि तथा कोना हिनका बड़ थोड़ औजार छैन्हि, जाहिमे जरैत भट्ठी एवं चर्मपम्प सेहो सम्मिलित छल जकरासँ ओ आगिकें फुकैत छलाह। स्वर्णकारक ई छोट दीप्ति हुनका हेतु विशाल अजात सम्भावनाक दीप्ति छल जे लक्ष्मीनाथक हाथसँ, जेना-जेना ओ पूर्णताकें प्राप्त करैत गेलाह, फलवती होइत गेल। बहुधा बालक लक्ष्मीनाथ तमहा पाइ सोनारक ओहि ठाम लए जाइत छलाह तथा ओकर छोट-छोट पात्र बनबबैत छलाह। जखन ओ बच्चा छलाह तखन पड़ोसक प्रतिमा बनओनिहार दुर्गेश्वर शर्मा

नामक व्यक्तिसँ एक प्रकारक संगीतवाद्य 'सुतुली' प्राप्त कएने छलाह। अल्पवयस्क बालक एहि वाद्य-यन्त्रकेँ बजएबामे बड़ आनन्दक अनुभव करैत छलाह। स्वर्णकार सिद्धेश्वरकेँ जया नामक एक बालिका छलैन्हि जे लक्ष्मीनाथक खेलक संगी छलैन्हि। ओ सोनक दीप्ति सन खराजलि अपूर्व भगवती सन सुन्दरि छलि। बेजबरुवाक सुरुचिपूर्ण छोट कविता 'मालती' जे ओ किशोरावस्थामे लिखने छलाह, निश्चित रूपेण बाल्यावस्थाक सहचरी अपूर्वसुन्दरीक स्मृतिमे लिखल अछि, एहन अनुमान होइत अछि।

ओकरे मुस्की सङ हम हँसवे
ओकरे नोरक संगे कनवे
माथ मालती केर कोरमे दए
हम नयन निमीलित करवे
परम शान्त भए रहवे॥

लक्ष्मीनाथ सर्वप्रथम गौहाटीमे स्कूल जाएब आरम्भ कएलैन्हि जतए हुनक पिता स्थानान्तरणक पश्चात् आएल छलथिन्ह। तत्पश्चात् ओ शिवसागरमे अपन प्रारम्भिक शिक्षा लेलैन्हि जतए हुनक परिवार वृद्ध बेजबरुवाक अवकाश ग्रहणक पश्चात् अन्तिम रूपसँ निवास कएलक।

ओहि समयमे बंगालीक प्रभाव केहन प्रबल छल तकर विस्तृत चर्चा बेजबरुवाक आत्मकथामे अछि। ओहि समयक सरकार 'आदर्श वंग विद्यालय' नामसँ आसामी धीया-पुताक लेल प्रारम्भिक विद्यालय स्थापित कएलक। तर्कालङ्कारक लिखल "शिशु-शिक्षा" नामक बंगलाक प्रथम प्रवेशिका पोथीसँ बालक लक्ष्मीनाथ अपन प्रारम्भिक शिक्षा आरम्भ कएलैन्हि। ओहि समयमे बंगला भाषा आसामक स्वीकृत राजभाषा छल, तेँ शिक्षाक माध्यम सेहो तावत् धरि रहल यावत् धरि अमरीकी बैप्टिस्ट मिशन तथा आनन्दराम ढेकियाल-फुकन (1829-1859)क अविराम प्रयाससँ असमी शिक्षाक माध्यम नहि भेल। बंगला भाषाक प्राबल्य राज-भाषाक रूपमे प्रायः पचास वर्ष धरि रहल। ई बूझल जाइत छल जे असमी भाषा बंगला भाषाक पतोइस (उपभाषा) थीक, एक स्वतन्त्र भाषा नहि। एहि रूपक भाषाशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक शोषणक विरोधमे बेजबरुवा अपन अथक साहित्यिक अभियानक द्वारा विरोध ठाढ़ कएलैन्हि। हुनक धारणा छलैन्हि जे असमी भाषाक मामिला उत्पादक साहित्यिक उपजसँ स्थापित होएबाक चाही। बेजबरुवाकेँ रचनात्मक उपगमन छल।

लक्ष्मीनाथक पिता कट्टर हिन्दू छलाह तथापि जीवन एवं सामाजिक समस्याक प्रति व्यवहार किछु सीमा धरि उदार चिन्तन जकर झुकाव तर्क एवं प्रगति दिश छल, पर आश्रित रहैत छलैन्हि। एहि रूपक भावना बालक बेजबरुवा अपन पिता-सँ दुर्लभ लोभक संग ग्रहण कएने छलाह तथापि ई अपन पिता जकाँ धर्ममे एक-

व्यक्तित्ववादी नहि छलाह। यद्यपि ओ वैष्णव कथाभित्ति पर प्रचुर रचना कएलैन्हि तथापि ओ कखनहुँ ऊहापोह जे वैष्णव धर्म शाक्त धर्मकेँ छोड़ि अन्य उपासनाक विरोधी वा विकल्प छल, नहि कएल। ऐतिहासिक कारणक हेतु वैष्णव धर्ममे शाक्त धर्मक विरोध अन्तर्निहित अछि।

यावत् धरि तर्कक दूरबीन पर कोनो वस्तु परीक्षित नहि भए जाइत छल तावत् धरि ओ ओकरा एहि कारणसँ मानवा लेल प्रस्तुत नहि छलाह जे सामान्यतया परम्परासँ ओ पवित्रीकृत अछि। उन्नतिक धाराकेँ रोकि देवाक प्रयासकेँ ओ जेना तर्कसंगत नहि मानैत छलाह तहिना विना उचित तर्ककेँ कोनो वस्तुकेँ स्वीकार करब अग्राह्य एवं तर्कहीन बुझैत छलाह। कारण, चूँकि ई विकासक नामसँ वर्णित अछि तेँ मानि ली से हिनक मन्तव्य नहि। इएह लक्ष्मीनाथक पिता कएलैन्हि तथा एकरे पुत्र जीवनपर्यन्त मानैत रहलाह। हुनक रचने सभ एकर प्रमाण थीक। हिनका मतेँ संदिग्ध प्रकृतिक वर्तमानक मूल्य लेल भूतसँ सम्बन्ध विच्छेद करबे उन्नति नहि बूझल जा सकैत अछि, अपितु भूत आ वर्तमान दूनूमे निहित सर्वोत्तम विशेषताक समन्वय उन्नति थीक।

यद्यपि अपना अंग्रेजीक प्रारंभिको ज्ञान धरि नहि छलैन्हि तथापि दीनानाथ बेजबरुवा अंग्रेजी शिक्षासँ विरक्त नहि छलाह। परिवर्तनक ई वसात ब्रिटिश शासन एवं अंग्रेजी शिक्षाक एक शीर्षस्थ प्रचारक लॉर्ड मेकालेक समयमे अनिवार्य छल। वृद्ध बेजबरुवा अपन धीया-पुताकेँ अंग्रेजी सिखबाक लेल उत्साहित कएलैन्हि अओर एहि उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि ओ उत्तरी लखीमपुरमे एक अंग्रेजी पाठशालाक स्थापना कएलैन्हि। ई पाठशाला जिला भरिमे अपना रूपक प्रथमे छल। जे अमरीकी बैप्टिस्ट मिशन शिवसागरमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार लेल कएलक, सएह काज दीनानाथ बेजबरुवा लखीमपुरमे कएलैन्हि। ई बहुत दूरगामी परिणाम दिश डेग उठओनाइ छल। बेजबरुवा अपन निबन्ध 'धर्म आरु ईश्वर' (तत्त्वकथा)मे एकर उल्लेख कएलैन्हि अछि जे वर्तमान समयक शिक्षा पाण्डित्यक एके आयाम जीवनक अत्यधिकता सभ 'नास्तिक शिक्षा' धरि सीमित अछि। ओ शिक्षाकेँ आस्तिक भावना सँ युक्त रूपमे देखए चाहैत छलाह।

बेजबरुवा शिवसागर सरकारी उच्च विद्यालयसँ 1886 ई० मे प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। एकर पछाति उच्च शिक्षाक लेल ओ कलकत्ता गेलाह जाहि ठामसँ ओ 1888 ई० में बीस वर्षक अवस्थामे एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। एतत् पश्चात् 1890 ई० मे जेनरल एसम्बली कॉलेज, कलकत्तासँ ई स्नातक परीक्षाक उपाधि प्राप्त कएलैन्हि। बी० ए०क उपाधि लेलाक पश्चात् अग्रिम शिक्षाक लेल बेजबरुवा इंगलैण्ड जाए चाहलैन्हि किन्तु परिवारक किछु कट्टरपन्थी सदस्यक विरोधक कारणे ई संभव नहि भए एकलैन्हि। ओहि समयमे सात समुद्र पार गेनाइ समाज द्वारा धर्मविरोधी मानल जाइत छल।

जखन उच्च शिक्षा लेल इंगलैण्ड जएबामे ई असफल रहलाह तखन एम० ए० एवं बी० एल० करबाक लेल कलकत्ता गेलाह। कानूनक पढ़ाइ लेल ई रीपन कॉलेज, कलकत्तामे प्रवेश लेलैन्हि। कलकत्ता उच्च न्यायालयमे ई कानूनक नैबन्धिक लिपिकक रूपमे नियमित रूपसँ उपस्थित होइत छलाह जाहिसँ हुनका मनुष्य एवं वस्तु सभक पूर्ण अनुभव प्राप्त भेलैन्हि। बजारक पश्चात् कचहरीक हाता मनुष्य एवं वस्तुसभक अनुभवक संग्रह लेल प्रायः उत्तमोत्तम स्थान थीक। बेजबरुवा तथापि बी० एल० एवं एम० ए० परीक्षामे सफल नहि भए सकलाह। जेना ओ अपन आत्मकथामे उल्लेख करैत छथि बी० एल० परीक्षामे अनुत्तीर्ण रहबाक कारण ओहि साल परीक्षोपरान्त कलकत्ता विश्वविद्यालयक अभिपद् द्वारा उत्तीर्णांकक प्रतिशत बढ़ा देनाइ छल। विश्वविद्यालयक एहि रूपक निर्णय किछु तीस छात्रक जीवनकेँ प्रभावित कएलक। बेजबरुवा कलकत्ताक उच्च न्यायालयमे विश्वविद्यालय अभिपदक विरुद्ध कानूनी मोकदमा चलओलैन्हि किन्तु ओ हारि गेलाह। एहिसँ ओकील बनबाक स्वप्न हिनक धराशायी भए गेलैन्हि। बेजबरुवा सन व्यक्तिक लेल कानूनक मार्गमे नहि होएब, निष्ठुर दुर्भाग्ये कहल जा सकैत अछि। जेना लैण्डोर एवं कार्लाइल रॉबर्ट ब्राउनिएक विषयमे कहलैन्हि अछि जे ओ कानून अथवा कूटनीतिमे अथवा कोनो मस्तिष्कपूर्ण कार्यमे बड़ नीक कएने रहितथि तेना साधारण सम्पर्कमे सामान्यतथा निष्कपट एवं सामान्यतया अशान्त नहि रहनिहार बेजबरुवो बड़ नीक कएने रहितथि।

एकर स्थानमे बेजबरुवा बी० बरुवाक प्रमुख हिस्सेदार भएकेँ काठक व्यापार आरम्भ कएलैन्हि। एहूसँ विशेष ई जेठ बरुवाक प्रायः छोट भाइ जकाँ भए गेलाह। ई दूनू गोटा संग मीलि अपन ऊहिसँ व्यवसायमे नीक उन्नति कएलैन्हि। ब्रह्मो विधिक अनुसार 11 मार्च, 1881 ई० मे कलकत्तामे बेजबरुवा महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुरक पौत्री प्रज्ञासुन्दरीसँ विवाह कएलैन्हि। हिनक विवाहक अवसर पर दस हजार रुपया व्यवस्थाक रूपमे टैगोर देमए चाहलथिन्ह जकरा ई अस्वीकार कए देलैन्हि। बंगाली समाजक मर्मस्थानकेँ गिड़निहार व्यवस्थाप्रथा एक कुरीति छल जे आसामक समाजमे कतहु देखबामे नहि अबैत छल। अपन आत्मकथा 'मोर जीवन सौवरण'मे बेजबरुवा व्यवस्थाक कुरीति पर अत्यन्त कटु विचार प्रकट कएलैन्हि अछि। ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे छात्रक रूपमे बेजबरुवा मध्यम योग्यता सभकेँ प्रदर्शित कएलैन्हि, ओ बी० ए० धरिक परीक्षा ने अपयशक संग आने प्रतिष्ठाक संग उत्तीर्ण भेलाह।

बेजबरुवाक बाल्यावस्था स्नेहपूर्ण, प्रज्ञव्यक्ति हुनक पिताक कुलपतित्वक सौहार्द्रपूर्ण गमैया वातावरणमे बीतल। हुनक जीवन नियमित क्रिया, यथा—पढ़ब, खेलाएब, प्रार्थना करब तथा अन्य धार्मिक विधि आदिक पालन करबमे बितलैन्हि। अरस्तू कहलैन्हि अछि जे प्रसन्न होएबाक अर्थ थीक स्वयंमे पूर्ण होएब। बेजबरुवा

अपन बाल्यावस्थाक प्रारम्भेसँ स्वयंमे पूर्ण छलाह अओरतेँ प्रसन्न छलाह। ओ आधुनिक असमी साहित्यक संसार पर शासन कएलैन्हि एहि हेतु नहि जे ओ अपन प्रतिपक्ष सभसँ जेना कि सी० के० अग्रवालसँ विशेष मेधावी छलाह अपितु एहि हेतु जे ई जेना 'वीठोविन' संगीतमे आसक्त छलाह, ताही भावसँ ई आधुनिक असमी साहित्यमे अनुरक्त छलाह। जीवन हुनका लेल विशिष्ट युगान्तरकारी घटना सभक चित्रावलीक समान छल। ई वैशिष्ट हुनक बहुतो साहित्यिक रचना सभमे सारगर्भित रूपमे लक्षित भेल अछि।

वस्तुतः वेजबरुवा दुइ संसारसँ जीवित छलाह—(1) वैष्णव साहित्य एवं संस्कृतिक संसार तथा (2) अंग्रेजी साहित्य एवं उदार विचारक संसार। एकर अतिरिक्त कमलावाड़ी सन वैष्णव सत्रसभ जकरा ओ अपन माता-पिताक संग बाल्यावस्थामे बहुधा देखने छलाह, केर सांस्कृतिक प्रेरणा तथा अपन पारिवारिक पुस्तकालय जाहिमे यथेष्ट संख्यामे पौराणिक एवं धार्मिक पाण्डुलिपि सभ जकरा पुथी कहल जाइत छल, सेहो हिनका थोड़ नहि प्रभावित कएने छल। हिनक पिता दीनानाथ वेजबरुवा जे स्वयं संत कवि शंकरदेवक (1449 सँ 1569) जीवन-वृत्तान्त 'गुरुचरित' नामसँ लिखने छलाह, पछाति हिनका 'श्री शंकरदेव' एवं 'महा-पुरुष शंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव' लिखबाक हेतु आवश्यक प्रेरणा प्रदान कएल-कैन्हि।

जखन वेजबरुवा रीपन कॉलेजक तृतीय वर्ष बी० ए० वर्गक छात्र छलाह तखन हिनक परिचय पाल्ग्रेभक 'गोल्डेन ट्रेजरी ऑफ लिरिक्स' जे कॉलेजक पाठ्यग्रन्थमे निर्धारित छलसँ कराओल गेल। एहि तरहेँ वेजबरुवाकेँ अंग्रेजी साहित्यक रोमा-ण्टिक युगक वाइरोन, कीट्स, शेली तथा अन्य कवि सभक 'स्वर्णिम राज्य'मे प्रवेश कराओल गेल जे हिनक किशोर एवं विकासशील मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव उन्पन्न कएलक। छात्रक रूपमे ई सशक्त बुद्धिजीवीक जीवन बिताओल। उत्सुकताक संग रंगशाला दर्शन एवं टैगोरक रचना पढ़बाक अतिरिक्त ई पोथीसभ पत्रिकासभ तथा सामयिक पत्रिका सभ सेहो खूब पढ़ैत छलाह, संगहि ख्यातिप्राप्त व्यक्तिक भाषण सुनवा लेल सभा सभमे सेहो उपस्थित होइत छलाह। भाषणकर्ताक प्रसंगानुकूल वक्तव्यक अंश सभकेँ टीपि लैत छलाह तथा कोनो सचेत बुद्धिजीवी जकाँ ओकरा कंठस्थ कए लैत छलाह।

अंग्रेजी शिक्षा एवं अंग्रेजी साहित्य वेजबरुवाकेँ सघन रूपेँ प्रभावित कएलक तथा हुनका हेतु यथेष्ट संभावना सभक आकाशकेँ उन्मुक्त कएलक। सघन प्रयासक बलेँ ओ अंग्रेजी शिक्षा अओर साहित्य दूनूक सौन्दर्यकेँ हृदयंगम कएलैन्हि, पचओ-लैन्हि तथा आत्मसात् कएलैन्हि। 1890 सँ 1930 ई० धरि परिवर्तनक युगकेँ ई एहन युग प्रदान कएलैन्हि जकरा अपरिभाषित दिशा, एक तादात्म्य एवं एकीकृत बानगीक रूपमे वर्णन कएल जा सकैत अछि। यथार्थे हमरा लोकनिक साहित्यक

इतिहासमे इएह विशेष काल थीक जकरा वेजवरुवाक युग कहल जाइत अछि। एकर कारण ई थीक जे वेजवरुवा एहि कालमे जे किछु रचना कएलैन्हि से तद्युगीन आवेगकेँ प्रकाशित करैत अछि। फ्रेन्च साहित्यक विक्टर ह्यूगोक समान हमरा लोकनिक साहित्यक ई श्रेष्ठ राजनयिके एहि साहित्यिक कालक केन्द्रीय आलोक छलाह।

स्वभावतः कलकत्ता बुद्धिजीवी जीवनक स्नायु-केन्द्र जकाँ काज कएलक जे आसामकेँ वैचारिक जीवन दिश प्रेरित कएलक जकर वेजवरुवा समकालीन ख्याति-लब्ध सी० के० अग्रवाल (1867-1938) तथा हेम गोस्वामी (1872-1928) जकाँ प्रवल समर्थक छलाह। कलकत्तेमे 1889) ई०मे सामयिक पत्रिका 'जोनाकी' जकरा आधुनिक असमी साहित्यक प्रकाशस्तम्भ कहल जाइत अछि प्रादुर्भूत भेल। सी० के० अग्रवाल एकर संपादक एवं स्वत्वाधिकारी छलाह। एहि पत्रिकाकेँ निरन्तर वेजवरुवाक सक्रिय सहयोग एवं समर्थन प्राप्त भेलैक। वस्तुतः वेजबरुवाक छद्म पात्र कृपावर वरुवा जोनाकीक पृष्ट सभ पर एकर द्वितीय वर्षक अस्तित्वक समयमे सर्वप्रथम प्रकट भेल।

25 अगस्त 1888 ई० मे वेजवरुवाक तत्त्वावधानमे 'असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा' प्रादुर्भूत भेल जे असमी साहित्यक लेल दुर्लभ लोकाचार एवं उत्साहक वातावरणक सृष्टि कएलक। कलकत्तामे असमी छात्र सभक शनिवासरीय अध्ययन-केन्द्र इएह साहित्यिक संस्था छल। एकर प्रारंम्भिक कालमे वेजबरुवा एकर सचिवक रूपमे काज कएलैन्हि। 1889 ई० 'जोनाकी' पत्रिकामे 'असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा'क उद्देश्य प्रकाशित भेल। ओ छल—(1) आसामी भाषा ओ साहित्यक विकास, (2) प्राचीन पाण्डुलिपि सभक संग्रह एवं प्रकाशन, (3) स्कूल सभमे शिक्षाक माध्यम आसामी स्वीकृत होअओ तदर्थ आन्दोलन, (4) साहित्यिक प्रयोजन सभ लेल भाषाक मानकीकरण, (5) वैष्णव साहित्यक आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्याक संकलन प्रस्तुत करब, (6) आसामक सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक इतिहासक संकलन करब, (7) संस्कृतक पोथी सभकेँ असमीमे अनुवाद प्रस्तुत करब तथा (8) असमी भाषामे समाचार पत्र ओ पत्रिकाक प्रकाशन करब।

कलकत्तेमे किछुएक राष्ट्रप्रेमी आसामी विद्यार्थी सभ द्वारा असमी साहित्यक लेल वातावरण उद्भूत भेल जकर कारणेँ शेक्सपियरक नाटक 'दी कॉमेडी ऑफ एरर्स' केर असमी भाषामे अनुवाद भेल। 'असमीज लिटरेचर' नामक पोथीमे एकर सम्बन्धमे कहल गेल अछि—'हमरा लोकनिक नाटक पर पाश्चात्य शिल्प-विधानक निरभ्रान्त प्रभाव कोन विशेष तिथिसँ पड़ल से यथार्थ निरुपण करब कठिन, किन्तु ई 'भ्रमरंग' (1888) मे शेक्सपियरक 'दी कॉमेडीऑफ एरर्स' केर अनुवाद थीक,सँ प्रारम्भ भेल। एहिमे किंचित अथवा कनियो सन्देह नहि जे एहि कृतिक अनुवाद

कलकत्तामे एल० एन० वेजवरुवाक निर्देशनमे आर० डी० वरुवा, आर० के० बड़-काकटी, जी० वरुवा तथा जी० एस० वरुवा द्वारा सम्मिलित रूपसँ कएल गेल। यद्यपि पाश्चात्य नाट्य-शिल्पक प्रारम्भ शेक्सपियरक एहि पोथीक भसमी अनुवादसँ भेल तथापिमुक्त छन्द एखन धरि नहि अपनाओल गेल छल। 'भ्रमरंग' गद्यमय अनुवाद थीक। कुशल एवं कल्पनापूर्ण समर्पणक कारणे अनुवाद नाटकमे क्रियामे स्थानीय क्षेत्र राखल गेल आ पात्र सभमे सेहो स्थानीय रंग-टीप देल गेल। ई अनुवाद हमरा लोकनिक साहित्यक नव नाटक पर दूरगामी प्रभाव उत्पन्न कएलक।

बाल्यावस्थामे शान्तिपूर्ण सम्पर्कसँ वेजवरुवा जे शिक्षा ग्रहण कएलैन्हि ओ हुनक मानसपटल पर अंकिते नहि रहलैन्हि, अपितु घरसँ दूर रहितहुँ रोमांचकारी साहित्यिक मुहावरा सभमे प्रस्फुटित भेल एवं नव भूमिका प्रस्तुत कएलक। विल डुराँक अनुसार समय एवं दूरीक चलचित्र द्वारा देखल गेल प्राचीन स्मृति सभ नव दिशा ओ दृश्यपट उपस्थित करैत अछि। यथार्थमे वेजवरुवा सामाजिक रूपसँ धार्मिक कट्टर परिवारमे पालित भेलाह, किन्तु जखन धार्मिक कट्टरताक बन्धन, कलकत्ताक अन्यदेशीय एवं उदार वातावरणमे वेजवरुवा जखन कलकत्तामे छलाह, शिथिल भेल तखन ई बन्धनक शैथिल्य अतिवादी प्रकारक प्रतिक्रियामे समाप्त नहि भेल।

हुनक पुरुषार्थक अन्यदेशीय वातावरण वेसी दिन धरि अन्यदेशीय नहि रहल तथापि वेजवरुवा ओहि मे डूबल नहि रहलाह। एकर विपरीत ई सम्पर्क हुनका लेल दूधारी प्रभाव उत्पन्न कएलक, ई हिनक मेधाशक्ति एवं प्रज्ञाशक्ति कें तीक्ष्ण कएलक, संगहि साहित्यक माध्यमसँ आसामवासी सभक सेवाक नैसर्गिक आवेग कें नव दिशा प्रदान कएलक। सर्वोत्तम एवं प्रबलतम अर्थमे वेजवरुवा संसारक व्यक्ति छलाह। हुनक मेधाक सुदृढ़ एवं अटल जड़ि यथार्थ-जीवनमे छलैन्हि। वेजवरुवा सशक्त हृदयक लोक छलाह जनिक रॉवर्ट ब्राउनिंग जकाँ जीवन दर्शन प्रबल आशावादी छलैन्हि। जीवनमे विपत्ति हुनका ने निराशा प्रदान कए सकैत छल आ ने हतोत्साहे कए सकैत छल। जीवन, ग्रीक नाटकक ओहि पात्रक समान अछि जाहिमे नायक अपन ओज प्रदर्शित करैत अछि तथा संघर्ष एवं अन्त-विरोधक द्वारा शिखर कोटिकें प्राप्त करैत अछि। एकर बोध वेजवरुवा कें छलैन्हि तथा एहि रूपक आदर्श कें पूर्ण करबाक लेल सभ आवश्यक रुचिकें कार्यान्वित कएलैन्हि।

वेजवरुवा महोदय जे किछु लिखलैन्हि से देशभक्तिक भावना एवं सामाजिक आदर्शवाद सँ ओतप्रोत छल। आसामक जीवन कें ई एहने किछु सर्वोत्तम व्याख्या प्रस्तुत कएलैन्हि अछि। संक्षेपमे इएह कहल जा सकैत अछि जे ई भावप्रवणतामे स्थानीय छलाह। हुनक प्रधान साहित्यिक उद्देश्य लोककें आसामी जीवन एवं संस्कृतिक पुनर्जागरणक सन्दर्भ मे नव सामाजिक मानदण्ड जगाएब छलैन्हि। मुख्यतः हुनके आयासक कारणे आसाम अपन व्यक्तित्वक विशेषताकें जानए लागल

अओर ओकर प्रतिभाक लेल स्वाभाविक भाषा एवं साहित्यमे गप्प करए लागल।

वेजवरुवाक रचना सभ जे बोधक दीप्ति आ अपना मे निहित शाश्वत शक्तिक विश्वासक गरिमा कें उत्प्रेरित कएलक, वड़ पुष्ट एवं प्रसिद्ध अछि। ओ कोनो महाकाव्य नहि लिखलैन्हि आ ने 'जयमति कुँवरि' एवं 'चक्रध्वज सिंह' छोड़ि कोनो पैंघ नाटके लिखलैन्हि। देशभक्तिपूर्ण कृति सभ पर ओ जतवा पुष्ट एवं अपूर्व रचना कएलैन्हि से हुनका अमरत्व प्रदान करबाक लेल निश्चिततम शीर्षक निर्माण करैत अछि, यद्यपि एकमात्र शीर्षक नहि बनबैत अछि। उदाहरणार्थ वेजबरुवा कें मैथ्यू आर्नल्ड जकाँ नहि मरए पड़लैन्हि जनिका लोक पथप्रदर्शक, प्रतिनिधि लोकक गौरवक रूपमे नमस्कार कएलकैन्हि, ओ अपन जीविते अवस्थामे एक संस्था भए गेलाह। लोक सभ हुनक उपहास सभकें एवं गम्भीर प्रभावी रचना सभकें पसिन्न करैत छल।

वेजवरुवाक साहित्यिक रचना सभ भव्य आसामक आडम्बरहीन एवं हरियर देहातक संग सामंजस्य वेसी रखैत अछि जाहि ठाम ओ अपन बाल्यावस्था बितओने छलाह। ओ आसामकें यथार्थ उत्कर्षमे चित्रित कएने छथि, मुक्त अधित्यका एवं मुक्त निम्न भूमिमे, संगहि ओकर अक्लिष्ट विवरणक संग मृदु वैभवक निष्कपट सौन्दर्यक चित्रणमे सेहो।

निष्कर्षतः एही सभ कारण सँ नॉर्वेक लेखक जॉर्नसनक सम्बन्धमे ब्रेण्डेजक शब्द मे हमरा लोकनि वेजबरुवाक सम्वन्ध मे कहि सकैत छी जे आसामवासी भीड़ मे हुनक नाम उल्लेख करव राष्ट्रध्वज फहराएब समान अछि। 1939 ई० केर 26 मार्च कए डिब्रूगढ़ मे हिनक निधन भेल अओर हिनक पार्थिव शरीरकें ब्रह्मपुत्रक वालुपूर्ण किछेर मे जतए डिब्रूगढ़ नगर वसल अछि, अग्निदाह संस्कार कएल गेल। फ्रायडक सम्वन्ध मे डब्लू० एच० ऑडेनक शब्द कें पैंच लैत हिनका विषयमे कहल जा सकैत अछि :—

वहुधा मिथ्या छलाह ओ, कखनहु काल अनर्गल,
किन्तु हमरा लोकनिक हित छलाह,छलाह ने व्यक्ति विशेष,
विचार धाराक पूर्ण जलवायु हित, अपितु आब अवशेष॥

निबन्धकारक रूपमे

बेजबरुवाक वैयक्तिक निबन्ध, जाहि मे ओ रचनात्मक लेखकक रूप मे श्रेष्ठ सिद्ध होइत छथि, साहित्यिक एवं आलोचना सहित अन्य रूपक निबन्ध जकाँ हुनक पाश्चात्य साहित्यिक प्रभावक उपज थीक। बेजबरुवाक लेखन-शैली वैयक्तिक छल, ओ एहन शिल्प विधान छल जे थोड़ प्रतिभावान् व्यक्तिक हाथेँ एकमात्र जोड़जाड़ जकाँ भ्रष्ट होएवाक संभाव्य होइत। एहन भाषामे साधल जे सामान्यतया हास्योत्पादक एवं उपदेशात्मक अछि, लेखकक वैयक्तिक निबन्ध सम सांसारिक प्रज्ञाक यथार्थ रत्न सभ थीक। वर्गसनक अनुसार 'सभ तरहक हास्य आचरणमे सामाजिक अछि' किन्तु बेजबरुवाक लेल वैयक्तिक सेहो भए सकैत छल।

एहि रूपक निबन्ध 'मस्तिष्कक बन्धनमुक्त आवेश' यथार्थ अर्थमे अपन स्वभावे सँ आचरणमे अप्रासंगिक अछि, कारण ओकर परिधि जेना रोवर्ट लिण्ड कहलैन्हि अछि अकल्पनीय रूपमे विस्तृत भए सकैत अछि : कखनहुँ काल ई उपदेश सन प्रतीत होइत अछि आ कखनहुँ काल लघुकथा जकाँ। ई आत्मकथाक अंश भए सकैत अछि अथवा निरर्थक एक खण्ड। ई व्यंग्यात्मक भए सकैत अछि अथवा उपहासात्मक भए सकैत अछि अथवा भावप्रवण। कोनो विषय एकर वर्ण्य भए सकैत अछि, निर्णयक दिन सँ लए कैंचीक जोड़ा धरि।

हाइने एक वेर कहलैन्हि जे जीवन निष्कर्षतः एहन भीषण रूप सँ गम्भीर अछि जे रुदनहास्यकर' मिश्रणक बिना ई असह्य भए जाइत। बेजबरुवा किएक हँसलाह ? आ एहि हेतुएँ नहि हँसलाह जेना कि हाइने कहलैन्हि अछि—'जीवन भीषण रूप सँ गम्भीरता नेने अछि', अपितु हुनक जीवन एतेक विहित छलैन्हि जे ओ बाल्यावस्थे सँ दुर्भाग्य ओ विपत्ति की थीक से वड़ थोड़ बुझैत छलाह।

1914-18 क युद्धक पश्चात् अंग्रेजी साहित्यमे यथेष्ट साहित्यिक वर्ग सभ प्रादुर्भूत भेल जे सामान्यतया 'व्यंग्य लेखक' बूझल जाइत छलाह। जाहि अर्थ मे अंग्रेजी साहित्यक ई समकालीन लेखक लोकनि 'व्यंग्य लेखक' बूझल जाइत छथि ताहि अर्थमे बेजबरुवा 'व्यंग्य लेखक' नहि छलाह। जे किछु व्यंग्य हिनक रचनामे अछि से अंग्रेजी साहित्यक प्रारम्भिक लेखकक व्यंग्य सँ समता रखैत अछि। बेजबरुवाक साहस, प्रतिभा उन्मुक्त मस्तिष्कयुक्तता एवं जीवनक प्रति प्रेम आदि गुण सभ, अर्धप्रकाशित नहि स्वयं सूचक अछि।

डेविड एस० जॉर्डनक विचार अछि जे 'दण्ड देनाइ समाजक कर्त्तव्य भए सकैत अछि किन्तु एहिसँ बाढ़ि ओकर कर्त्तव्य होइत अछि जखन सुधार संभव अछि तखन सुधार करब'। वेजबरुवाक वैयक्तिक निबन्ध सभक मुख्य मुद्रा सुधार करब रहैत छल यद्यपि कखनो काल ओ आलोचनापूर्ण ओ व्यंग्यात्मक स्वर ओ भाव सँ पूर्ण रहैत छल। मैथ्यू आर्नल्ड द्वारा अन्य प्रसंग मे कहल गेल शब्द सभकेँ व्यवहार करैत हुनका विषय मे ई कहल जा सकैत अछि—

"मनन कएल सम घाव केँ देखल सभ दौर्बल्य,
राखल अंगुलि अपन तत जत छल वेस प्राबल्य,
घोषित कएल सवेग ओ एतए आधि पुनि व्याधि ।।"

वेजबरुवाक लेल व्यंग्यरचना प्रधानतः समाज सुधारक एक अस्त्र छल। कैथ-लीन रैने कहैत छथि—व्यंग्यरचनाकार ओ थीक जे प्रीति करैत अछि, नहि कि जे ओकरा सँ घृणा करैत अछि तकरा घृणा करैत अछि। वेजबरुवा कखनहुँ घृणा नहि कएलेन्हि आ हुनक जाहि व्यंग्य-प्रधान रचना मे स्पष्टतः घृणा बुझाइत अछि ताहूमे अति यथेष्ट मात्रा मे अपन देशवासीक लेल प्रीतिक फुहार अछि। अओर यदि सामान्तया व्यंग्य रचनाकारक सम्बन्ध मे रैने जे किछु कहैत छथि से यदि सत्य तँ ई कहब अत्युक्ति नहि होएत जे वेजबरुवा शीर्ष कोटिक व्यंग्य-रचनाकार छलाह। यद्यपि कखनहु काल मध्यवर्गीय अहं स्पष्ट देखाइ पड़ैत छल तथापि मानवीय दुर्बलता एवं अवगुणक हुनक व्याख्या श्रेष्ठ अवज्ञाक सामान्य रंग मे रंगल नहि अछि। संक्षेप मे एना बुझू जे वेजबरुवा विषम व्यंग्य सभ जे मानवीय दृश्यक उत्तराधिकारी अछि, पर उपहास कए सकैत छलाह।

यथार्थ मे वेजबरुवाक वैयक्तिक निबन्ध सभमे लेखकक आनन्द, गर्व, पक्षपात जे बहुधा आच्छादित रहैत अछि तथा कखनहुँ काल कृत्रिम रूपसँ उद्देश्य विशेषक हेतु उपयुक्त होएबाक लेल तोड़ि मरोड़ि कए प्रस्तुत रहैत अछि, केर सार निहित रहैत अछि। उदाहरणार्थ 'कृपावर बरुवार काकोटोर टोपला' जे विभिन्न एवं असंगत रूपक हास्यसँ भरल अछि, मे स्पष्टतः बड़ थोड़ अथवा नहिएँ जकाँ एहन किछु अछि जे एकर हास्यपूर्ण संसारमे धक्का देअए। वैयक्तिक निबन्ध सभ ओएह थीक जकरा ओ लोकनि 'उच्च सुखान्तिकी' कहैत छथि। ओ प्रतिविम्बित चिन्तन मात्र जकरा प्रकृतवाद कहल जाइत अछि केर अपेक्षा बहुधा जीवनक प्रबुद्ध व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि। वस्तुतः मौलिक मानवतावाद आ यथेष्ट सामाजिक प्रकाशे बेजबरुवाक रचना केँ अश्लील प्रकृतवादक धरातल सँ स्वर एवं भाव मे ऊपर उठा दैत अछि। कृपावर सन बेजबरुवाक पात्र सभ फालस्टाफ्स छथि बोबाडिल नहि। सृष्टि एवं निर्माणक बीच सतत अन्तर अछि, जहाँ धरि हुनक पात्र सभ सँ सम्बन्ध अछि केओ सहजहि अनुमान कए सकैत अछि जे वेजबरुवा सृष्टि करबा पर बेसी प्रभुत्व रखैत छलाह निर्माण करबाक अपेक्षा पात्र सभक यथार्थ सृष्टि लेल ककरो अपन गंभीर

नाटके पर ध्यान राखए पड़त ।

ई वात यथार्थ थीक जे वेजवरुवाक व्यंग्यात्मक अनुकृति सभ विशेषतः हुनक प्रहसन सभ अस्वाभाविक प्रतीत होइत अछि । आओर एही कारण सँ ई कहव प्रायः अत्युक्ति नहि होएत जे हुनका हाथे जकरा साधारण लोक युक्ति नाम सँ बुझैत अछि केर वहुधा आत्महत्या होइत अछि। उदाहरणार्थ 'काकोटोर टोपलामे जखने भण्डारक पात्र सभ अपन सृष्टिकर्ताक लेल निवास करए चाहैत अछि कि तखने लेखक ओकरा सभकेँ अस्थिर वना दैत अछि । एहि रूपक वहूदेशीय प्रक्रियामे प्रहसन मात्र सँ वेसी काल्पनिक आकार ओ धारण करए लगैत अछि। परिणामतः केओ सहजहि ई पाबि जे जे किछु हास्यपरक प्रतीत होइत अछि से गम्भीर रूपसँ उपहासात्मको भए सकैत अछि, आश्चर्यित भए सकैत अछि ।

हुनक वैयक्तिको निवन्धसँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचल जा सकैत अछि जे जीवनक प्रति वेजबरुवाक सामान्य अभिगम सन्दिग्धताक रहल अछि। ई सन्दिग्धता द्राक्षा-संचयनक छल जे लेखकक मनोवृत्तिक वैशिष्ट्य छल, विस्तृत अर्थमे जीवनक प्रति मनुष्यक गम्भीर आकर्षण प्रीति द्वारा वेसी प्रतीत होइत अछि, भावात्मक अर्थमे जेना कि डब्लू० एच० ऑडेनमे प्रतीत होइत अछि, अपेक्षा ठोस शब्दमे घृणा द्वारा। यथार्थमे विद्वेष एवं अनुराग (आदि एत आमो) ओहि व्यक्तिक जीवनी शक्ति थीक जे वहुत वेसी सचेत अछि । वेजवरुवा जाहि वातावरणसँ घेरल रहैत छलाह तकर प्रति वड़ सचेष्ट रहैत छलाह । तथापि एही अर्थमे विद्वेष एवं अनुराग (आदि एत आमो) क ई सिद्धान्त हुनक प्रकृतिक अनुकूल नहि छल ।

वाल्तेअरक सम्बन्धमे अनातोल फ्रांस कहने छलाह जे वाल्तेअरक आंगुरमे लेखनी दौड़ैत अछि एवं हँसैत अछि । ई वेजवरुवाक सम्वन्धमे सेहो सत्य अछि। हुनको आँगुरमे लेखनी दौड़ल एवं हँसल । ओ हमरा लोकनिक साहित्यिक दृश्यमे प्रादुर्भूत भेलाह तथा ब्रैण्डेक शव्दमे हास्यक संग अस्तित्व मेटा देलैन्हि । सामान्यतया वाग्वैदग्ध्य केँ नैसर्गिक विद्यु त कहल जाइत अछि एवं जकरा सामान्य गप्प-सप्पमे हास्य कहल जाइत अछि तकरा अपेक्षा एहि वाग्वैदग्ध्यमे दुर्लभ आकस्मिकता एवं तीव्रता होइत अछि, एहिमे भिन्न रूपक दीप्ति एवं शाश्वत भेदक गुण होइत अछि । संक्षेपमे कहि सकैत छी जे हास्यकारक कला एक प्रकारक सृष्टि कला थीक । वेजवरुवा एहि कलासँ पूर्ण छलाह, किन्तु हुनका ओ दोसर कला नहि छलैन्हि जकरा 'नैसर्गिक विद्यु त' कहल जाइत अछि ।

वेजबरुवाक समयमे समाज किछु-किछु विदेशी पद्धतिमे नष्ट-भ्रष्ट भए रहल छल अओर एकरा सुरक्षित रखबाक एकमात्र उपाय छल वर्तमानक पृष्ठभूमिक विरुद्धमे अपन संस्कृतिमे निहित मूल्यकेँ यथेष्ट रूप सँ जानव एवं अनुभव करव । इएह मूल भावना वेजबरुवाक सम्पूर्ण रचनाक स्वरग्रामक प्रेरणा-शक्ति प्रदान करैत अछि । प्रतिभावान् चिकित्सक जकाँ वेजबरुवा समाजक ओहि रोगकेँ जे विदेशी

प्रभावसँ रोगग्रस्त छल तथा अंकुरित भए रहल छलकेँ निरूपण कएलैन्हि, विशेषतः बंगालक समाजकेँ देखि कए जे विशिष्ट मध्यवर्गीय मनोदशासँ ग्रसित छल जे कि साधारणतया पण्डिताउ छल, संवेदनापूर्ण नहि। बेजबरुवाक रेखाचित्र सभ समग्र कथा भए सकैत अछि जेना कि ईलियड एवं ऑडेसी अछि। जेना हम प्रारंभिक ग्रीक आचारक नीक ज्ञान ओहिसँ प्राप्त कए सकैत छी तेना आसामवासी, विशेषतः निम्न मध्यवर्गीय समाजक आचार सभक एवं आकांक्षा सभक परिवर्तनक संकटकालीन घड़ीमे जाहिमे लेखक जीवित छलाह केर नीक ज्ञान हमरा लोकनि बेजबरुवाक रेखाचित्र सभसँ प्राप्त कए सकैत छी। एहि रेखाचित्र सभक सार ओहि समयक यथार्थ जीवन अछि।

यदि आल्डुअस हक्सले पर विश्वास कएल जाए तँ चौसर प्रतिवाद नहि कएलैन्हि, ओ स्वीकृतिक कवि छलाह। बेजबरुवा एहिसँ भिन्न छलाह, ओ कोनो वस्तुकेँ बिना प्रतिवादक स्वीकार नहि कएलैन्हि। जाहि वातावरणमे हुनक वैयक्तिक निबन्ध प्रसारित अछि ताहिमे मनोवेग मसखरीमे आश्रय लैत अछि एवं भावावेश हास्यसँ ओतप्रोत एक प्रकारक संशयवादमे अपनाकेँ नुकओमे रहैत अछि। जियौफी बुलो कहैत छथि—'व्यंग्यकार जाहि कोनो वस्तुकेँ स्पर्श करैत छथि ताहि पर अपनाकेँ आरोपित कए दैत छथि आ हुनक सफलताक एक संकेत ई थीक जे ओ कोन मात्रामे जीवन एवं मनुष्यक अनुपम बोधकेँ संसूचित करैत छथि'। बेजबरुवाक व्यंग्य-रचनामे प्रमुख विचार एवं भावनाक अपरिहार्यताक भीतर अनेको तनाव मिझराएल रहैत अछि जे कि सामान्यतया व्यंग्य विधाक सार तत्त्व होइत अछि अओर एहिमे सँ प्रत्येक तनाव जकरा सामाजिक चेतना कहल जाइत अछि, केर भावनासँ परिपूर्ण रहैत अछि। निष्कर्षतः अहोम राज्यक पश्चात् आसामक साहित्यिक इतिहासमे जे वर्षों धरि अवरोध आबि गेल छल ताहि समयमे बेजबरुवा हमरा लोकनिक साहित्यमे स्वच्छ वायुक संचार कएलैन्हि।

तैयो यदि हुनक साहित्यिक संरचनाक आदर्श सँ हुनक तुलना कएल जाइत अछि तँ बेजबरुवाक व्यक्तित्व केँ एक सकीर्ण परिधि मे सीमित कएल जाइत अछि। बेसी सँ बेसी हुनक तुलना एक एहन आलोचक सँ कएल जा सकैत अछि जे सामाजिक आदर्श सभक वैशिष्ट्य केँ पुनः प्राप्त करबाक चेष्टा कएलैन्हि तथा निपुण विशुद्धता एवं विश्वसनीयताक संग हुनक मनोविनोद करबाक चेष्टा कएलैन्हि। ओ मनुष्य केँ ओही आवास मे चित्रित कएलैन्हि अछि जाहि मे ओ बसैत छलाह अओर अपना लेल ओ स्वयं बजैत छलाह।

संक्षेप मे कहि सकैत छी जे बेजबरुवाक हास्य मृदु नहि अछि अपितु प्रफुल्ल हास्य परिपूर्ण अछि अओर कखनहु व्यंग्य रचनाक एक प्रकारक कतरन अछि। संक्षेप मे बेजबरुवा यथार्थतः एक वाग्वैदग्ध्ये नहि छलाह अओर जे किछु वाग्विदग्धता हुनक रचना मे भेटैत अछि ओ आकस्मिक मात्र थीक। बेजबरुवाक रचना केँ पढ़ि

केओ अनुमान कए सकैत अछि जे ओ 'दर्पण समान बुद्धिक' लोक छलाह जकरा कोलाहलपूर्ण हास्य ने मिटा सकैत छल आ ने नुका सकैत छल। ओ विषयवस्तुक विस्तृत क्षेत्र मे भ्रमण कएने छलाह। संक्षेप मे हुनक रचना सभ साहित्यिक गरिमे लेल विख्यात नहि अछि अपितु मानसिक क्रोधावेश जे हुनक अभिगमक असंगति सँ कनियो व्याघातित नहि होइत अछि, लेल सेहो। विशेष रूप सँ कहि सकैत छी जे हुनक वैयक्तिक निवन्ध सभक मर्म एवं सारतत्व कटु हास्य अछि। विना एहि सभकेँ जनने कहि सकैत छी जे हुनक रचना सभ जीवनक अभिज्ञता बड़ प्रदर्शित करैत अछि।

स्पष्टतः हुनक कटु हास्यक आभ्यन्तर हुनक यथार्थ शक्ति निहित अछि जे आवश्यक रूप सँ आलोचनात्मक छल तथा जे सूक्ष्म रूप सँ प्रमाणमे भेटैत अछि। एहिमे सन्देह नहि जे समय-समय पर ओ कटुप्रहारक छथि तथापि अपन गम्भीर नैतिक एवं दार्शनिक रचना सभयथा 'श्रीशंकरदेव', 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव' तत्त्वकथा आदि केँ छोड़ि विशेषतः अपन वैयक्तिक निवन्ध सभमे निरन्तर अप्रासंगिक एवं विसरणशील छथि। असमी साहित्यमे वैष्णव युगक समय सँ हास्य एक पक्ष रहैत आएल अछि। वैष्णव युगक वाग्वैदग्ध्यपूर्ण, जीवन्त तथा प्रफुल्ल 'भीमचरित' एहि बिन्दुक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। 'रुक्मिणीहरण' सन किछु नाटक सभक ऊपर विचार कएला सँ बुझाइत अछि जे शंकरदेव (1449-1569) पर्यन्त एहि प्रभाव सँ वंचित नहि रहि सकलाह। बेजबरुवा जे किछु कएलैन्हि से इएह जे ओ हास्य केँ साहित्यिक रचनाक कोटिमे रखलैन्हि। हुनक हास्यक दू मौलिक विशेषता थीक—

(1) हास्य हास्यक हेतु, (2) अत्यन्त कटु व्यंग्य मिश्रित हास्य।

बेजबरुवाक ज्ञात प्रस्थान एवं अप्रासंगिकताक बावजूदो एहन किछु नहि अछि जे रचयिताक उदार दृष्टिकोण, प्रशस्त विषयवस्तु तथा शैलीक निश्चितताक लेल पाठकक प्रशंसा केँ दुर्बल बना सकए। जतबा ओ कहैत छथि एवं वर्णन करैत छथि ताहिमे यथेष्ट जान अछि। नापल जोखल घृणा जकरा द्वारा बेजबरुवा पर्य्यवेक्षण करैत छथि एवं कोनो व्यक्ति विशेष सभक तथा सामाजिक संस्था सभक स्फुट खोखलापनीक व्याख्या करैत छथि, केँ बूझब एवं अनुभव करब सुकर अछि। यद्यपि बेजबरुवा एक संभाव्य राष्ट्रीय शक्ति छलाह तथापि ई अपन संपूर्ण उपगमन मे विचार स्वातन्त्र्य एवं किछु मात्रा धरि विरक्ति निर्वाह करैत छथि।

बेजबरुवाक उपलब्धि केँ ओहन सामाजिक सिद्धान्तक एकता अछि जे ज्ञानक व्यापक आदर्श दिश समाजक नवीकरणमे मार्गदर्शन करैत अछि। चित्र ने सीमित अछि आ ने हेय। एहिमे शैलीक एकता अछि जे विस्तृत क्षेत्रक लोक केँ सम्बोधित करैत अछि अओर जे उत्तमोत्तम रूप सँ देदीप्यमान अछि। बेजबरुवाक सामाजिक सिद्धान्त ने मतवाद अछि आ ने नारा, अपितु एक निष्कर्ष अछि जे ऐतिहासिक आँकड़ा एवं प्रचलित सामाजिक प्रवृत्तिसभ सँ उद्देश्यक गम्भीरताक संग उत्पन्न भेल अछि। बेजबरुवाक शैली अपन विभिन्नताक लेल प्रसिद्ध अछि, तथापि जँ एक बेर

केओ हुनक रचना अध्ययन कए लैत अछि तँ ई स्पष्ट धारणा बना लैत अछि जे ओ जे किछु लिखलैन्हि से प्रकृतवाद सँ पलायन नहि अछि। यथार्थमे बेजबरुवा मतवादक प्रचारक कहियो नहि छलाह, ओ एक दक्ष पर्य्यवेक्षक छलाह। चाहे ओ जे किछु होअए हुनक रचनामे भविष्यसूचक एवं रहस्यात्मक स्वर प्रायश: कखनहु पाएल जाइत अछि—यथा हुनक वैयक्तिक निबन्ध-सभ। एकर अतिरिक्त इहो स्मरण रखबाक थीक जे हुनक वैयक्तिक निबन्ध सभ चेस्टरटनीय चारुलेख (वेलेज लेटर्स) प्रकारक नहि अछि, ओ भिन्न द्राक्षा-संचयन थीक। बेजबरुवा बिना दुर्भावना कें प्रहार करैत छलाह अओर यद्यपि हुनक त्वचा बड़ मोट छलैन्हि तथापि ई कहब बड़ कठिन अछि जे कखनहु काल ओ अपन रचनामे जाहि रूपक कटु भाषण प्रस्तुत कएलैन्हि, ताहि लेल खेद व्यक्त कएलैन्हि। प्रकृति सँ ओ ककरो प्रति ईर्ष्या एवं द्वेष रखबा सँ असमर्थ छलाह। गम्भीर दृष्टि एवं बुद्धिक कारणे बेजबरुवा प्रत्यक्ष प्रहार सामाजिक अनुकृतिक विलक्षण खण्डसभ अछि। कहल जाइत अछि जे व्यंग्य-रचना आत्म-परीक्षण सँ जन्म लैत अछि। लेखकक वैयक्तिक निबन्ध सभकें पढ़लाक पश्चात् एके धारण होइत अछि—यथा अप्रत्याशित परितृप्तिक भावना। ओएह लेखक जे बेजबरुवा जकाँ अपूर्व क्षमता रखैत छथि, एहि रूपक परितृप्तिक भावनाक निर्माण कए सकैत छथि।

बेजबरुवा एक एहने लेखक छलाह जनिक लेखनी दूनू दिश चलैत छल—(1) मस्तिष्क व्यापार सम्बन्धी एवं दीर्घवृत्तीय तथा (2) नैसर्गिक एवं चञ्चलता तथा आत्महीन वाह्य लालित्य दिश झुकैत हास्य सँ आप्लावित। हुनक वैयक्तिक निबन्ध सभ सांसारिक प्रज्ञा कें स्पर्श करबाक लेल तथा कुटिल वाचालतोक लेल ख्यात अछि। बेजबरुवाक हास्यक अनुभूति हुनक सभ सँ पैद्य अस्त्र छल जाहि सँ ओ निर्मम प्रहार करैत छलाह—यथा जेना कि 'भोकेन्द्र बरुवा' (जौनबीरी)क मामिला मे अथवा 'खाता दिमरु सत्राधिकार (बुलकी)क मामिला मे। दोसर दिश ई मानब असत्य होएत जे हुनक प्रहार सभ ड्राइडन जकां स्पष्टत: हिंसक छल जे बहुधा चटकन सभ जकाँ ध्वनित होइत छल।

वेसी स्पष्ट होएबा लेल कहि सकैत छी जे बेजबरुवाक दृश्य सभ एवं परिस्थिति सभ, वर्णन सभ तथा संवाद सभ भने ओ प्रहसन सभमे होअए अथवा हुनक वैयक्तिक निबन्ध मे होअए, अबाध बैडमिण्टन प्रतियोगिता जकाँ अछि जाहिमे शट्ल सभक लग धरि तीव्रता सँ उड़ैत रहैत अछि तथा लोक तेज एवं कुशाग्र संवेदन सँ ओकर अनुभव करैत अछि जकरा ब्राउनिंगक वाग्धारा में प्राय: आधा शताब्दी पाछाँ 'मस्तिष्क, उच्च रक्त चिन्हित' कहल गेल अछि। कृपावर बरुवा, एक छद्म पात्र बेजबरुवाक हल्लुक पक्ष पर प्रकाश दैत अछि, बहुधा ई पात्र लेखक ध्वनि पर विश्वासघात करैत अछि।

अपन किछु व्यंग्य रचना सभमे बुद्धिहीनताक अपरिशोधनीय शक्ति, जे प्रत्येक

युगक वैशिष्ट्य रहल अछि, पर बेजबरुवा प्रहार कएलैन्हि अछि। विस्तृत रूपेँ कहि सकैत छी जे ई अपन 'काकोटोर टोपला' द्वारा विशेष रूप सँ निबन्धक सामाजिकीकरण कएल तथा जनसाधारण केँ दैनन्दिन जीवनक क्षेत्रमे एकरा आनि अवगत कराओल एवं मनोविनोदपूर्ण बनाओल। यथार्थमे लैम्ब एवं डीक्विन्सी जकाँ ई निबन्ध केँ अन्तरंग आत्मप्रकाशक साधन बनाओल। जँ सभ किछु कहल जाए तँ बेजबरुवाक माध्यम सँ निबन्ध एक 'विकसित प्रकारक पत्रकारिता भए गेल जे विशेष रूप सँ गढ़ल गेल छल, निर्मित भेल छल, संश्लिष्ट भेल छल एवं एक निश्चित धारणा एवं विचार केँ ओहि युग मे एकीकरण करैत छल जाहि युग मे पत्रकारिताक विकास निम्नतम कोटिक छल। एहि बेजबरुवा द्वारा व्यंग्यात्मक चिनगी बरा-एल किन्तु दग्ध कएनिहार विषम क्रोधमे एकर विस्फोट नहि भेल। जे किछु क्रोध ई निबन्धकार प्रकाशित कएलैन्हि ओ औचित्यपूर्ण छल, सत्य छल आ एकर सत्य वाटकिन्सक शब्दमे कहि सकैत छी 'हीरा सँ बेसी क्रूर रूपमे' कटैत अछि।

हिनका द्वारा चारि गोट वैयक्तिक निबन्धक पोथी सभ लिखल गेल—(1) बरुवरुवार काकोटोर टोपला, (2) ओवतनी, (3) बरबरुवार भावर बुड़बुड़नी तथा (4) बरुवरुवार बुलनी। हास्यक तरंगक तर मे लेखक केर समाजक प्रति मूल प्रवृत्ति जे हुनक निबन्ध सभक मर्म थीक आ जकर उद्देश्य लेखक प्रज्ञाक अनुसार समाजक कायाकल्प छल, कदाच विलुप्त होइत अछि। यथा 'एखन मुकलि चिठि' (ओवतनी) नामक निबन्ध मे तथाकथित 'देशभक्त' जे देशभक्तिक हेतु कृत्रिम प्रेम मात्र देखबैत छथि मुदा जे सरेआम बजैत प्रतीत होइत छथि तदनुकूल कखनहुँ काज नहि करैत छथि तनिका ई अत्यन्त कटु केन्द्रबिन्दु बनबैत छथि तथा हुनका पर कठोर तीव्रताक संग प्रहार करैत छथि। 'इएह कारण थीक जे हम कहैत छी जे अहाँ असमी छी, असमी जकाँ रहू। विदेशी रीतिक अनुकरण करब आवश्यक नहि'''आसामवासी मे सँ बहुतो गोटे घुरि जाइत छलाह तथा आसामक पत्र-पत्रिका सभ पर चुटकी लैत छलाह। एहि ठाम भाषा कटुताक चोटी पर पहुँच जाइत अछि आ जाहि रूपक प्रहार ई आसामक नव बुद्धिजीवी सभक दुर्गुण सभ पर एहि ठाम कएलैन्हि अछि ताहि रूपक प्रहार कतहु नहि कएलैन्हि अछि।

एही तरहेँ सामाजिक (काकोटोर टोपला) निबन्ध जकरा उपयुक्त रूप सँ एक प्रकारक स्वप्न-दृष्टान्त कहल जा सकैत अछि, मे मिथ्या धार्मिक कट्टरता रूढ़िवादी आचार शास्त्र, कृत्रिम देशभक्ति तथा वैयक्तिक अहं पर लेखक साहस एवं तीव्रताक संग प्रहार कएलैन्हि अछि। बेजबरुवा सम्पूर्ण हृदय सँ असमी भाषाक प्रति प्रेम करैत छलाह आजे केओ एहि भाषाक अन्तःशक्ति केँ तुच्छ देखएबाक चेष्टा करैत छलाह ओहि सभ व्यक्ति पर प्रहार करैत छलाह। भाषाक प्रयोग मे ओ शुद्धिवादी छलाह, किन्तु जहाँ धरि अन्य स्रोत सभ सँ शब्द पैंच लेबाक प्रश्न छल ताहिमे ओ बड़ उदार छलाह। गम्भीर लक्ष्यपूर्ण अपन वैयक्तिक निबन्ध—'चिन्तार चकनैया

(बुलनी) मे सस्त मनोवृत्ति तथा लोकक एक वर्ग जे विदेशी सभ वस्तु कें उत्तम बुझैत छथि, केर अनुकरणमूलक सहजबुद्धिक निन्दा करैत छथि। ब्रिटिश शासनक प्रारम्भिक कालमे तथा वंगलाक सम्पर्कक अवधि मे एहि प्रवृत्ति कें सुस्पष्ट कएल गेल छल। एहि निबन्ध मे लेखक के०के० भट्टाचार्यक (1853-1937) केर उल्लेख करैत छथि जनिक क्रोध एहि रूपक सस्त मनोवृत्ति जे समाजक स्वरूप कें नष्ट करैत छल, केर विरुद्ध उपद्रवी छल।

यद्यपि एकरा विविध विषयक संकलन कहल जा सकैत अछि तथापि 'ओवतनी' केर निवन्ध सभमे सुधारवादी उद्देश्य निहित अछि अओर लेखक समकालीन आसामी पात्र सभक वैचित्र्य कें तथा निकटवर्ती वंगाली समाजक पद्धति जे कोनो रूपें आदर्श एवं प्रेरणामूलक नहि छल, कें स्वीकार एवं प्रतिविम्बित करबाक प्रवृत्तिकें ओहिमे निन्दा करैत छथि। आसामवासीक जीवन ओ समाजक विशिष्टता पर वेजबरुवा वल दैत छलाह। एही मूल तथ्यक अनुभूति पर आसामक समाजकें जीवित रहवाक चाही आ अपना कें पुष्ट करवाक चाही। तथापि ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे वेजवरुवाक अधिकांश वैयक्तिक निवन्ध सभ जेना 'बरुवरुवार राजाहवर लक्ष्मण', 'हाँहचुरी मुकद्दमा' आदि वहुत वेसी वैयक्तिक अछि जखन कि अन्य निवंध सभ जेना 'कविता वेदना,' 'दिमरु सत्राधिकार' आदि स्पष्ट रूपसँ प्रहसनात्मक अछि। ई निबन्ध सभ चरम विन्दुक विपरीत अछि।

जतए धरि विषयवस्तुक सम्वन्ध अछि 'काकोटोर टोपला' (1904) तथा 'ओवतनी' (1909) सँ 'बुलनी' धरि निश्चित रूपसँ परिधिक विस्तार भेल अछि। 'बुलनी' वेजवरुवाक वैयक्तिक निवन्धक संग्रह अछि जकर संग्रहकर्ता प्रो० अतुल हजारिका छथि तथा जकर प्रकाशन साहित्य प्रकाशसँ 1964 ई० मे भेल अछि। एहि ठाम प्रश्न ई उठैत अछि—की ई, बेजवरुवाक मस्तिष्क एवं कलाक विशिष्ट विकास कें प्रदर्शित करैत अछि? मस्तिष्कक विकासक सम्बन्धमे विशिष्ट साक्ष्य सभ भेटैत अछि जे सर्वथा स्वाभाविक थीक। अल्पविकाससँ विकास दिश बढ़ब एक पद्धति थीक आ वेजवरुवा सेहो एहि पद्धति सँ कखनहुँ मुक्त नहि छलाह। किन्तु इएह वस्तु हिनक कलाक सम्बन्धमे नहि कहल जा सकैत अछि। हिनक कला स्थिर नहि छल तथापि ने ओकरा गतिशीले कहल जा सकैत अछि। बेजबरुवामे वाग्वैदग्ध्य आ ओहि बौद्धिक मनोरञ्जनक अभाव छल जे सामान्यतया मनोवृत्तिसभकें जीवन्त बनवैत अछि। हुनक हास्यपूर्ण रचनासभमे जे किछु बौद्धिक तत्व छल से सभ हास्यक समुद्र सभमे आप्लावित रहैत छल। हिनक हास्य निरन्तर व्यंग्यक स्पर्श सँ ढौरल रहैत छल। जेना कि एहि निबन्ध सभसँ प्रतीत होइत अछि कोनो वस्तुक हास्यजनक पक्ष ओकर सोझ दृष्टिकोणक अपेक्षा हिनका वेसी अभिभूत करैत छल। लॉर्ड बायरन जकाँ नहि, किन्तु अपन विशिष्ट पद्धतिमे वेजवरुवा भंगिमा रखैत छलाह। ओ जे किछु लिखलैन्हि ताहिमे मध्यवर्गीय अहं स्पष्ट लक्षित होइत अछि।

अन्ततोगत्त्वा ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे हुनक रचना सभमे देशभक्ति एवं आवेगपूर्ण उमंगक तरंग अछि। ई तरंग कोनो परिस्थितिमे हिनक रचना सभमे तिरोहित नहि भेल।

बेजबरुवाक हास्य मुख्यतः शाब्दिक छल। हिनक हास्यक प्रहार करबाक शक्ति प्रधानतः अनुकूल शब्द सभक विस्तार पर जे निरन्तर हास्योत्पादक होइत छल, आश्रित रहैत छल। हुनक हास्यक द्वितीय वैशिष्ट्य लेखकक वातावरण निर्माणक अद्‌भुत शक्ति जे अनिवार्यतः हास्यक छटा छिटकबैत छल, अपरिहार्य परिणाम छल। 'जाग्रत' शब्दक स्थानापन्न कोनो दोसर शब्द देब दुरूह अछि, कारण अन्य कोनो दोसर शब्द एहन सारवाही नहि होएत। बेजबरुवाक साहित्य जेना कि हिनकर वैयक्तिक निबन्ध सभ मे स्पष्ट होइत अछि, अनुभूति एवं उत्थानक मध्य मार्ग पर अवस्थित अछि। सामान्यतया कहि सकैत छी हुनक ध्वनिक स्वर वाक्-भंगिमासँ कखनहुँ ई नहि बुझाइत अछि जे द्वेष किंवा लज्जासँ प्रज्वलित छथि अपितु गंभीर एवं भयंकर परिस्थितियोक सोझाँ हास्यक प्रतिभायुक्त छथि। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे एकर कारणे चित्रणमे हुनका बड़ व्याघात पहुँचैत छलैन्हि।

जँ बेजबरुवा एहन व्यक्तिक प्रयोग कएलैन्हि अछि जकर वैचित्र्य सभकेँ लए ई अपन हास्यक तन्तुविन्यासक संरचना कएलैन्हि अछि तँ एकरा ध्यान रखैत जे ओ सभ कोन रूपक सामाजिक वातावरणमे जीवित एवं कार्यरत छलाह। ई पूर्वे कहि चुकल छी जे यद्यपि हुनक मस्तिष्क समयक विकासक संग गतिशीलता प्रदर्शित करैत अछि तथापि हुनक ई गुण नहि प्रकाशित होइत अछि। ई सत्य थीक जे वातावरण एवं पात्र सभ पर जोर दैत काल हिनकामे वाक्‌पटुताक अभाव नहि अछि, किन्तु वाक्‌पटुता मात्र कखनहुँ सौन्दर्यबोधक प्रमाणक नहि भए सकैत अछि। वैयक्तिक निबन्ध एक एहन कला-माध्यम थीक जे अपनामे विस्तृत क्षेत्रकेँ समेटने अछि। एहिमे असंगति सभ अप्रासंगिकता, विचित्रता एवं एही रूपक अन्यो भेद सभ समाविष्ट रहैत अछि। सौन्दर्यबोधक दृष्टिसँ बेजबरुवाक अधिकांश निबंध असंगत प्रतीत होइत अछि, एतबे नहि, ओ सभ अन्य निबन्ध—यथा 'बुलनी'क प्रस्तावना जकाँ अछि जाहिमे रूप-बोध एवं अभिगमक बृहत् ज्ञान लक्षित होइत अछि। एहि सन्दर्भमे 'फू', 'विश्वरूप दर्शन', 'बरबरुवार वेदान्त व्याख्या' आदि सन निबन्ध सभक उल्लेख कएल जा सकैत अछि। यद्यपि ई सभ हल्लुक मने लिखल गेल अछि तथापि बुद्धि एवं अभिगमक दृष्टिएँ उत्तेजक एवं पठनीय अछि।

पाखण्डसँ बेजबरुवा घृणा करैत छलाह। तथापि की हुनक सामाजिक आलोचना कोनो रूपक क्षोभ किंवा अरुचि ओहि व्यक्तिक मस्तिष्कमे उत्पन्न करैत अछि जनिक विरुद्ध ओ उपहास अथवा अपशब्दक प्रयोग करैत छलाह? केहनो पैघ परिहास किएक नहि हो, लोक अपन हृदयक भीतर इएह बुझैत छल जे बेजबरुवा वस्तुतः हुनका सँ प्रीति करैत छथि, अओर हुनका लोकनिक द्वारा एहन

अनुभवे हुनका लोकनिक सहनशीलता कें हुनका प्रति अनिवार्य कए देलक। ओ लोकक सोझाँ मे दर्पण रखैत छलाह तथा ओ लोकनि ओहि दर्पण मे अपन विचित्र आकृति संग मुखाकृति देखैत छलाह तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण लेल दर्पणक यथार्थ पर विश्वास करैत छलाह। आलोचनाक क्रममे ओ जे किछु कहने होथि, किन्तु आसामवासीक ओ कखनहुँ अवमानना नहि कएलैन्हि अछि, कारण ओ ओही लोकक छलाह आ ओकर गुण अवगुण सभक ज्ञाता छलाह। वेजबरुवा जे किछु लिखलैन्हि तथा चिन्तन कएलैन्हि ताहिमे ओहि उदार प्रज्ञाक लोप कखनहुँ नहि छल जे लोकक संवेदनाकें सम्भाव्य बनबैत अछि। वेजबरुवाक उपरि लिखित प्रायः प्रत्येक वैयक्तिक निबन्ध प्रवृत्तिएँ एवं अभगमक दृष्टिएँ भावुकतापूर्ण सेहो अछि। चारुलेख सनक निबन्ध सामान्यतया स्वर एवं प्रकृतिमे स्वभावगत वैशिष्ट्ययुक्त अछि। किन्तु वेजबरुवामे जे आश्चर्यजनक गप्प अछि से ई थीक हुनका द्वारा रचल स्वभावगत वैशिष्ट्ययुक्त रचना, बहुधा असम्भाव्यताक सीमान्तभूमि थीक। हुनक लेखन शैली हुनका वैशिष्ट्य प्रदान करैत अछि। ओ हँसि सकैत छलाह। जँ हुनक हँसी मानवक मिथ्या मूल्यक हेतु आकर्षणक प्रति रोषपूर्ण रहैत छल तँ ओ रम्य ओ प्राञ्जल गद्यमे अभिव्यक्त रहैत छल। मानवक मूढ़ता, दुर्बलता तथा असफलता सभ पर वेजबरुवाक पर्य्यवेक्षण कखनहुँ अस्वस्थ नहि छल। हुनक निबन्धक परिधि-मे समेटल लोक आ कथाक क्षेत्र विलक्षण अछि। ओ ककरो अनुकृति कए सकैत छलाह, किन्तु हुनक अनुकृति केओ नहि कए सकैत छल।

वैयक्तिक निबन्ध सभसँ जखन वेजबरुवाक साहित्य एवं धर्मक गम्भीर अध्ययन दिश मुड़ैत छी तँ ओ एक मनमोहक व्यापार होइत अछि। एहि सभमे, साहित्य एवं नीति विषयक धार्मिक दर्शनक हिनक वैदुष्य एवं प्रज्ञा उत्तमोत्तम दीप्तिक संग परिलक्षित होइत अछि। ई अपन धारणा जे हिनक एहि रूपक अध्ययनमे उपलब्ध होइत अछि, कें शास्त्र सभसँ विशेषतः वैष्णव नीतिपरक शास्त्र सभसँ महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ सभकें उद्धृत कए परिपूर्ण कएलैन्हि अछि।

रेभरैण्ड तिसुल डेवाज अपन एहि कथनमे यथार्थे कहलैन्हि अछि जे विगत तीन हजार वर्षमे केओ एहन महात्मा भारतमे प्रकट नहि भेलाह अछि जे संसारक सभसँ प्राचीन एवं संसारक सभसँ सहिष्णु दर्शनक अन्तरात्मा वेदान्त-शिक्षाक आवश्यकताकें नहि स्वीकार कएलैन्हि अछि। स्पिनोजा कहलैन्हि अछि—ईश्वरसँ अपनाकें परिचित करू ओ शान्तिमे रहू। अनन्त एवं अविनाशी तत्त्व ईश्वरक प्रति जखन प्रीति केन्द्रित होइत अछि तखने आत्माकें अपरिवर्तनशील एवं अमिश्रित आनन्दसँ सन्तुष्टि होइत अछि। ई वेजबरुवा अपन वैष्णव साहित्यक गहन अध्ययनक बलें एहि वस्तुक अनुभव कएने छलाह। वैष्णव-दर्शन, विशेषतः शंकर-देव (1449-1569) तथा माधवदेव (1489-1596) केर सम्प्रदायक, बहुत अंशमे वेदान्तसँ प्रेरणा ग्रहण कएने छल।

आसामक वैष्णव साहित्यक अध्ययन एवं तत्त्वकथा सन गम्भीर दार्शनिक रचना सभमे सेहो अपन दुर्लभ प्रज्ञा एवं भावावेशक संग बेजबरुवा एकरा प्रकट कएलैन्हि अछि। 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव'मे जे किछु ओ अपूर्ण छोड़ि देने छलाह तकरा ओ 'तत्त्वकथा'मे यथेष्ट रूपसँ निर्वाह कए देलैन्हि अछि। हुनका संग धार्मिक बोध वंशपरम्परानुगत छल। जाहि रूपक वातावरणमे ओ पालित भेल छलाह ताहिसँ ई धारणा अओरो पुष्ट भेल छल। तथापि हुनक धार्मिक प्रवृत्ति कखनहुँ हठधर्मी नहि छल। हिनक धार्मिक प्रवृत्ति नम्यताक भावनासँ एक निश्चित मात्रा धरि युक्त रहैत छल, कारण ओ पूर्णता तथा अध्यात्मिक विवेकसँ रचना करैत छलाह। जँ जोलाक कला विषयक ई परिभाषा—'कला विश्वकेँ अपन स्वभावक अनुकूल देखबाक नाम थीक' सत्य तँ ई बेजबरुवाक विषयमे पूर्णतः घटित होइत अछि।

अंग्रेजी साहित्यक आगस्टन युग साहित्यमे राजनीतिक मिश्रण लेल विश्रुत अछि। बेजबरुवामे सामाजिक नीति साहित्यमे मिझराएल अछि एहन मोटामोटी कहल जा सकैत अछि। हुनक क्रोध एवं कटुता निष्कपट छल, संगहि न्यायिक सेहो। एहि रूपक संयोग सुपरिचित प्रतिमान छल। हुनक धार्मिक एवं दर्शन सम्बन्धी निबन्धक गम्भीर स्वरसँ ई जानल जा सकैत अछि जे आवश्यकता पड़ला पर एहि रूपक संयोगकेँ तेजियो सकैत छलाह। एहि रूपक रचना ओ नितान्त भिन्न शैलीमे लीखि सकैत छलाह देजबरुवाक लेल भाषा एक 'कौशल' थीक एवं 'कर्म' सेहो। हिनका लेल दर्शन एवं धर्म एक दोसरा सँ अभिन्न थीक अओर जँ आन कथूमे नहि तँ एहिमे ओ मध्यकालीन मन. प्रवृत्तिक लोक छलाह। किन्तु जे किछु होअओ तत्त्वकथाक धार्मिक-दार्शननिक विश्लेषण हिनक सार्वभौम, व्यापक एवं आडम्बरहीन अछि।

हुनक विविध रचनाक अवलोकनोपरान्त ई कहल जा सकैत अछि जे सरस्वतीक ई वरदपुत्र दुनू प्रकारक क्षमतासँ युक्त छलाह—एक दिश ओ सामान्य व्यक्तिक विचार ओ भावना सभकेँ विशिष्ट साहित्यिक वाग्धारामे अभिव्यक्त कए सकैत छलाह तँ दोसर दिश पाण्डित्यपूर्ण विदग्धताक संग सूक्ष्म नीतिपरक एवं दर्शनपरक भावना एवं विचार सभकेँ प्रकट कए सकैत छलाह। यथार्थमे बेजबरुवा एक भाषाक अपितु अपन दू भिन्न भाषाक निर्माण कएलैन्हि। जखन हुनक तत्त्वकथाक भाषाकेँ हुनक वैयक्तिक निबन्धक भाषाक तुला पर रखैत छी तँ ओ भिन्न बुझाइत अछि। एही रूपे समकालीन लेखक जेना एच० सी० बरुवा (1835-1897)क 'कानिया-कीर्तन'क भाषासँ सेहो भिन्न अछि। साहित्यिक दृष्टिकोणसँ यद्यपि काण्ट अस्पष्ट शैलीमे अपन भावनाक प्रस्तुति कएलैन्हि तथापि संसार हुनक भावनाक त्याग नहि कए सकैत अछि। साहित्यिक कलाकारक विषयमे ई नहि कहल जा सकैत अछि। साहित्यिक कलाकारकेँ पूर्ण स्पष्ट शैली चाही आ से

वेजबरुवाकेँ छलैन्हि । वेजबरुवाक शैली हृष्ट-पुष्ट क्षमता लेल सुविख्यात छल आ जखन ओ दार्शनिक विषयक निबन्ध लिखैत छलाह तखनो ओ दुरूहता नहि आवए दैत छलाह । हिनक शैली प्राञ्जल अछि, एवं पूर्व निर्धारित निष्कर्षकेँ सहज अभिव्यक्ति देवाक लेल सरल अछि । यदि ककरो बँरोक शब्दक उपयोग करवाक अनुमति देल जाए तँ कहल जा सकैत अछि जे हिनक शैली 'प्रभावपूर्ण यथार्थ भाषा' अछि ।

'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव' (1914) जे पन्द्रहम एवं सोलहम शताब्दीक आसामक शंकरदेव एवं माधवदेवक जीवन-वृत्तान्त थीक, मुख्यत: हिनका लोकनिक जीवन एवं कृति जे कि हिनक धार्मिक मतानुयायी व्यक्ति सभ जे कि हिनका सभक समकालीन छलाह अथवा हुनक अविच्छिन्न पश्चात् केर पीढ़ीक छलाह, द्वारा लिखल गेल जीवनवृत्तान्तक आधार पर प्रस्तुत कएल गेल अछि । वेजबरुवा जे किछु एहि सन्त कवि सभक विषयमे अपन पिता डी० एन० वेजबरुवा जे 'गुरु-चरित' नामक ग्रन्थक लेखक छलाह, सँ शिक्षा ग्रहण कएने छलाह तकरा पूर्णत: अभिव्यक्ति देलैन्हि अछि । वैष्णव जीवन, संस्कृति एवं धर्मक ज्ञान हुनक (डी०-एन० वेजबरुवाक) महान् छल । किछु पौराणिक आख्यान एवं दन्तकथा सभक आकस्मिक संकेतसभकेँ छोड़ि वैष्णव जीवन एवं धर्मक स्वर्णयुगक प्रामाणिक अध्ययन 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव' प्रस्तुत करैत अछि । यद्यपि ई अपन विषयमे पूर्ण निमग्न रहैत छलाह तथापि अपन वैयक्तिक भविष्यवाणी सभकेँ निरुद्देश अनुचित अभिव्यक्ति दए विषयवस्तुकेँ अमानवीय एवं विकृतिपूर्ण बनएवाक भ्रम नहि कएलैन्हि अछि ।

तत्त्वमीमांसा तथा तद्जात प्रथा सभक दृष्टिएँ वैष्णवमत पुराणपन्थी ब्राह्मण दर्शनक विरोधी आन्दोलन छल । शंकरदेव, माधवदेव एवं हुनक अन्य वैष्णव मतानुयायी सभकेँ ओहि व्यक्ति सभक खुलेयाम शत्रुताक मुठभेर करए पड़लैन्हि जे सभ अपनाकेँ धार्मिक मतक गुटतन्त्रमे संगठित कए नेने छलाह तथा अपनाकेँ पूर्वी आसामक प्रशासन कएनिहार अधिपति बना नेने छलाह । प्राच्य आसामक अधिपति विशेष पक्ष छलाह । हुनका लोकनिक प्रेरणाप्रद आश्रयमे धर्म, साहित्य, ललितकला एवं सामाजिक प्रबोधन एकहि संग विकसित भेल । 'महापुरुषीय सम्प्रदायर धर्ममत' नामक पोथीक अन्तिम परिच्छेद (पृ० 286-322) कामरूपक इतिहासक रचयिता के० एल० बरुवाक वैष्णव धार्मिक दर्शनक पाण्डित्यपूर्ण अध्ययन अछि । पहिने ई सभ वेजबरुवा द्वारा सम्पादित 'बह्नि' नामक पत्रिकामे क्रमबद्ध प्रकाशित भेल छल ।

अरस्तू महोदयकेँ न्यायालय द्वारा ई अभियोग लागल छलैन्हि जे पूजाक वेदी पर ओ बलिदानक शिक्षाक व्यर्थता लोककेँ सुझबैत छलथिन्ह । एही रूपक अभियोग राजकोपक भाजन होएबाक कारणे शंकरदेव पर सेहो लागल छलैन्हि । शंकरदेव एवं माधवदेव सनक वैष्णव सन्त लोकनि 'रचनात्मक शंका' सँ प्रेरणा ग्रहण

करैत छलाह आ एकर समाधान आत्म परीक्षण द्वारा एक ईश्वरमे आस्थाकेँ मानैत छलाह। इएह उपनिषदो करैत अछि---जखन केओ ईश्वरीय तत्त्वक अनुभव अपन आत्मामे करैत छलाह आ एकर समाधान आत्म परीक्षण द्वारा एक ईश्वरमे आस्था केँ मानैत छलाह। इएह उपनिषदो कहैत अछि—जखन केओ ईश्वरीय तत्त्वक अनुभव अपन आत्मामे करैत अछि तखन हर्ष ओ विषादजन्य सभ भ्रम लुप्त भए जाइत अछि। राजकोपक कारणे शंकरदेव बड़ चतुरताक संग पूर्वी आसामकेँ तेजि पश्चिमी आसाममे आबि बसि गेलाह। की एहि रूपक देशान्तरण हिनक डेरबूह होएबाक प्रमाण थीक? जखन नगर तेजि रहल छलाह तखन अरस्तू महोदय बाजल छलाह जे एथेन्सकेँ दर्शनक विरुद्ध दोसर बेर पाप करबाक अवसर हम नहि दए सकैत छी। वैष्णव सम्प्रदायक धर्म एवं दर्शनक प्रचारक लेल अधिक सुरक्षित स्थान बूझि शंकरदेव कूचविहार तथा पश्चिमी आसाम लेल चलि देने छलाह।

'श्रीशंकरदेव आरु श्री माधवदेव' वैष्णव सम्प्रदाय एवं दर्शनसँ सम्बन्धित अपेक्षाकृत सत्यक समर्थनक पाण्डित्यपूर्ण प्रयास थीक। एहिमे नैतिक आदर्शवादक किछु एहन तत्त्व निहित अछि जे जेना-जेना कथ्यक विकास एवं विस्तार होइत अछि तेना-तेना ओकरो विकास एवं विस्तार होइत अछि। बेजबरुवा जनिक धार्मिक प्रवृत्ति कखनहुँ कट्टरपन्थी नहि छल, विचारलैन्हि जे शंकरदेव एवं माधवदेवक वैष्णव मत आसामक समाज लेल निश्चित रूपसँ आसामक जीवन, संस्कृति एवं धर्मक केन्द्रबिन्दु होएबाक चाही। अन्य सन्दर्भमे कहल गेल मैथ्यू आर्नाल्डक शब्दकेँ पैंच लेत कहि सकैत छी जे 'भावनायुक्त नैतिकता' वैष्णव संप्रदाय थीक।

जीवनीमे अमूर्तीकरणक कोनो सम्भावित स्थान नहि होइत अछि। मनुष्यक जीवन विशेष एवं मानवीय छोड़ि अओर किछु नहि थीक। बेजबरुवाक आत्मकथा "मोर जीवन सौवरण" जीवनी कोन रूपक होएबाक चाही तकरा ध्यानमे राखि लिखल गेल अछि। हिनक ई आत्मकथा जीवनक मानवीय पक्ष पर बल दैत जीवनक अभिलेख थीक। एतदतिरिक्त जीवनी एक सामाजिक इतिहास सेहो थीक। मनुष्य जीवनक एक जीवन्त अभिलेखक अतिरिक्त बेजबरुवाक आत्मकथा उन्नैसम शताब्दीक सामाजिक जीवनक एक विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे किछु सीमा धरि कलात्मक एकते नहि अछि अपितु उद्देश्यक एकता सेहो अछि। सम्पूर्ण रूपेण जीवनी इतिहास जकाँ भूत एवं वर्तमानक पृथक् एवं अव्यवस्थित आशुचित्रक शृंखला मात्र नहि थीक। ई जीवनक यथार्थ एवं महत्त्वपूर्ण क्षणक हृदयस्पर्शी चित्र थीक। निस्सन्देह बेजबरुवाक आत्मकथा एहने वस्तु थीक। 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव'क भूमिकामे आत्मकथाक कलाक विषयमे ओ जे किछू कहलैन्हि अछि तकरा अपन आत्मकथा लिखबा काल आदर्शक रूपमे बेजबरुवा ध्यान रखलैन्हि अछि। ओ कहलैन्हि अछि जे जँ जीवनीकार अपन वर्ण्य विषयक विषयवस्तुमे तल्लीन नहि भए जाथि तँ जीवनक पुनः सृष्टि करबाक समग्र प्रयास

निष्फल भए जाइत अछि। संक्षेपमे ई सन्त कवि सभ शंकरदेव एवं माधवदेव सभ एहन व्यक्ति छलाह जे एक निश्चित आस्थासँ प्रेरित छलाह। एहि बातकेँ वेजवरुवा 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधवदेव'मे ज्वलन्त रूपमे प्रकाशित कएलैन्हि अछि। अपन एहि व्याख्यामे ओ दू औपनिषदीय भावसभकेँ सूक्ष्मताक संग तानी-भरनी देलैन्हि अछि जे वैष्णव मतक मूलाधार अछि—1. आत्म-दर्शनक भाव किएक तँ ब्रह्मक दर्शन अपन अन्तरात्मामे लोक करैत अछि अओर 2. ई भाव कि ईश्वरक ईश्वरीय प्रकाश संसारक अणु-अणुमे प्रतिविम्वित होइत अछि।

वेजबरुवाक आत्मकथा 'मोर जीवन सौवरण' शिक्षात्मक रससँ आप्लावित अछि। एहिमे लेखक केर वाल्यावस्थाक विशद स्मृति सभ जे उदार एवं घटनापूर्ण वातावरणमे पल्लवित भेल छल, वर्णित भेल अछि। वाल्यावस्थामे जे आदर्श लोक प्राप्त करैत अछि सएह परवर्ती जीवनमे यथार्थ आचरणक प्रेरणा एवं सामर्थ्य दैत अछि।

वेजवरुवा द्वारा संपादित 'बह्नि'क अंक सभसँ प्रो० अतुल हजारिका द्वारा संकलित तत्त्वकथा (1962) मे वैष्णव दर्शन एवं नीति सम्वन्धी अध्ययन अछि जे स्वतन्त्र भेलहु उत्तर अनमेल नहि अछि। वेजवरुवा एहि निवन्ध सभकेँ एक एहन मनुष्यक दृष्टिसँ रचना कएलैन्हि अछि जकर तुलना मसीही आदर्शवादी व्यक्तिसँ कएल जा सकैत अछि। एक एहन व्यक्तिक भावनासँ जे दिव्य तत्त्वमे कल्याण अध्यात्मिक सौन्दर्यक मूल स्रोत एवं सिद्धान्त-सूत्रक दर्शन पवैत अछि। वैदुष्यक गाम्भीर्य एवं अध्यात्मिक प्रज्ञा जे एहि निवन्ध सभमे लक्षित होइत अछि, केर एहि आधार पर निर्णय करैत ई कहल जा सकैत अछि जे एहन प्रवन्ध सभ ओहि समयमे लिखत गेल होएत जखन हुनक अशान्त चित्तकेँ 'शान्त वातावरण एवं अध्यात्मिक निर्वेदक प्रतीति भए गेल होएत। एहि निवन्ध सभसँ निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे वेजवरुवा समकालीन साहित्यमे विचारप्रधान गद्यक प्रारम्भ कए-लैन्हि। ई कहव अत्युक्ति नहि होएत जे वेजवरुवा मूलतः धर्मप्राण व्यक्ति छलाह।

जीवनक संग्राममे ईश्वरमे आस्था अजेय शक्ति अछि। 'धर्म आरु ईश्वरतत्त्व' (तत्त्वकथा) मे वेजबरुवा गीता एवं अन्य धार्मिक मत एवं आदर्श सभजे एहि महान् पुस्तकक दर्शनसँ समता रखैत छल, केर प्रेरणा-प्रद व्याख्या प्रस्तुत कएलैन्हि अछि। गीताक दर्शन मसीही वाइबिल अथवा इस्लामी कुरान जकाँ एकान्तवादी नहि अछि। जखत गीता मेई कहल जाइत अछि—'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' तखन ईश्वरक प्रति सर्वान्तः करणक निष्ठा संग समर्पण वूझल जाइत अछि। केवल दृष्टि-कोणे मात्र नहि, मूल्यांकनक शैली सेहो प्राञ्जल, सूक्ष्म तथा स्वर एवं भंगिमामे विचार-गाम्भीर्यपूर्ण अछि। श्रीधर स्वामीक श्रीकृष्ण नामक व्युत्पत्तिपरक व्याख्याकेँ जकरा मोटामोटी पृथ्वी पर महान् आनन्द देनिहारक रूपमे अनुवाद कएल जा सकैत अछि, आधार बनाए वेजबरुवा प्रेरणाप्रद अध्यात्मिक वचनावलीक विकास 'श्रीकृष्ण

तत्त्व' मे कएल। अध्यात्मिक अस्तित्वक चेतना, दिव्य प्रेरणाक डुब्बी मारए केर तख्ता थीक। 'वस्त्रहरण तत्त्व' में श्रीकृष्णक दू रूपक प्रतिमूर्त्ति अछि जकर व्याख्यामे बेजबरुवाक गाम्भीर्यपूर्ण पाण्डित्य एवं प्रज्ञा परिलक्षित होइत अछि—एकटा तँ गीताक श्रीकृष्णक रूप अछि जे बौद्धिक दृष्टिएँ महान् आ यथार्थ अछि, तथा दोसर श्रीकृष्णक लोकप्रिय रूप अछि जे वृन्दावनमे लीला एवं विविध क्रीड़ाक रूपमे प्रचलित छल। रामकृष्ण परमहंस सदृश अनेको विचारक एवं द्रष्टा जकाँ बेजबरुवा सेहो विचारलैन्हि तथा आस्था रखलैन्हि जे श्रीकृष्णक एहि दूनू आकृतिकेँ निश्चित रूपसँ पृथक् नहि कएल जा सकैत अछि।

'रासलीला तत्त्व' एक गूढ़ विषय पर बौद्धिक रूपसँ प्रेरणाप्रद प्रबन्ध थीक जे बहुधा लोक द्वारा अशिष्ट नहि मानल जाइत रहल अछि। कृष्ण सर्वज्ञ ओ सर्वशक्तिमान विष्णुक अवतार मानल जाइत छथि। वस्तुतः ओ ईश्वर छथि एवं रासलीला पर निर्णय ओहो दृष्टिकोणसँ होएबाक चाही। दार्शनिक भाषामे कहि सकैत छी जे 'वस्त्रहरण तत्त्व' विवेचित ईश्वरक द्वैतभाव एक अवधारणा अछि जाहिमे प्रतीकात्मक व्याख्या द्वारा ईश्वरीय निवेदनक प्रज्ञाकेँ गम्भीर एवं तीव्र कएल गेल अछि। बेजबरुवा एहि भावनाकेँ सामान्य कोटिक बिम्ब द्वारा प्रकाशित करैत छथि। जेना धानक भुस्सामे अक्षतक वास अछि तेना लोकप्रिय क्रीडा सभमे भगवानक दिव्य आलोक अवस्थित अछि। मोटामोटी दार्शनिक दृष्टिकोणसँ ईश्वरक अस्तित्व दू भिन्न रूपमे स्वीकार कएल जाइत अछि —एक स्वीकारात्मक रूपमे 'रसौ वै सः' तथा दोसर निषेधात्मक रूपमे 'नेति नेति'। जन साधारणक मोनमे भगवानक पहिल रूप बसल अछि तथा ओकरेसँ सम्बन्ध रखैत अछि। बेजबरुवा अपन 'रासलीला तत्त्व' मे भगवानक एही स्वरूपक व्याख्या ओ आख्यान कएलैन्हि अछि। लोक-प्रचलित लीला रूपक तहमे ओ चरम आनन्द अवस्थित अछि जे हिन्दू विचार एवं आदर्शक सर्वोच्च प्रकाश अछि। ईश्वरक प्रतीति अनुभवक द्वारा कएल जा सकैत अछि। ओ व्यक्तिक अन्तःकरणमे बजैत छथि। ईश्वरक अनेक रूप अछि, तथापि ओ एक छथि। भौतिक बन्धन सभसँ ऊपर उठले उत्तर ईश्वरक निर्मल एवं विशद प्रतीति होइत अछि। यावत् धरि भक्तक पूर्ण व्यक्तित्व उत्सर्ग एवं समाहित नहि भए जाइत अछि तावत् धरि ईश्वरक प्रतीति असम्भव अछि। आत्मोत्सर्ग, पारिवारिक बन्धनक त्याग एवं अन्य सांसारिक सम्पर्कक त्यागे द्वारा वृन्दावनक स्त्री सभ (गोपी सभ) कृष्णक संग अपन एकात्मता प्राप्त कएलैन्हि। कृष्ण एवं गोपी सभक सांसारिक लीला सभ ऊपरसँ भने उच्छृंखल लगैत हो तथापि ओहिमे गूढ़ अध्यात्मिक दर्शन अन्तर्निहित अछि जे वैष्णव धर्मावलम्बी सभसँ प्रतिपादित कएल गेल अछि—

शृंगार रसे आरा आचे रति
आको सुनि होक निर्मल मति। —शंकर देव

अर्थात्— 'शृंगार रसमे जनिक अछि रति
से एकरा सुनि होअओ निर्मल मति ।।'

अर्थात् जनिक मोन रति आनन्दमे निमग्न रहैत अछि तनिक मोनकेँ एकरे श्रवण द्वारा स्वच्छ होअओ देल जाओ ।

भगवानक विभिन्न अवतार ओही एक दिव्य आत्माक स्वरूप अछि । बेजबरुवा अपन निवन्ध 'वेदादि तत्त्व'मे एही भावकेँ प्राञ्जल विश्लेषण कएलैन्हि अछि । विभिन्न अवतार सभ अओर वेद सभक रूपमे भगवानक प्रकाशक कल्पनाक उदय आर्य सभक द्वारा भूमिक विजयसँ उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन सभसँ सम्भूत गहन सामाजिक चिन्तनक प्रतिफलन थीक । किन्तु वेद जतए अपन आधारभूत अर्थमे धार्मिक आचरणक नियम-संग्रह अछि ओतए परवर्ती उपनिषद् स्थूल रूपमे अध्यात्मक अमूर्तीकरण अछि । अध्यात्मिक रूपसँ उपनिषद् सभमे जीवन एवं सृष्टिक रहस्य सभक अन्वेषणक तथा ओकरा सार्थकता प्रदान कएनिहार दिव्य ज्योतिक प्रकृतिक अन्वेषणक प्रयास अछि । भगवान् सर्वज्ञ सर्वविद्यमान तथा स्थूल एवं सूक्ष्म जगतक रचयिता छथि । संक्षेपमे ईश्वर परमात्मा छथि जकरा टेनीसन 'उपरि आत्मा' कहलैन्हि अछि । अपन 'वेदादि तत्त्व' मे वेजबरुवा एही विचारकेँ प्राञ्जल रूपसँ उजागर कएलैन्हि अछि ।

जतेक धार्मिक ग्रन्थ सभ अछि ताहिमे गीते टा एहन ग्रन्थ अछि जाहिमे दार्शनिक सत्यक निखरल एवं गहनतम सार पाओल जाइत अछि । कलियुगमे, अर्थात् मानव-सभ्यताक समकालीन चरणमे नानारूपक सांसारिक सम्मोहनक कारणे अध्यात्मिक आसक्ति पृष्ठभूमिमे पड़ि गेल अछि । जीवनक एहि जंजालसँ मुक्ति पएबाक लेल वैष्णव धाराक जनक शंकरदेव एक मार्गक जाहिमे ईश्वरक प्रति समर्पणक भावसँ मोक्ष प्राप्त होइत अछि, निर्देश कएलैन्हि अछि जकरा वैष्णव शब्दावलीमे भक्ति-मार्ग कहल जाइत अछि । गीता एवं भक्ति-मार्ग पर दार्शनिक प्रबन्ध प्रस्तुत करबाक अतिरिक्त बेजबरुवा अपन निबन्ध 'गीता तत्त्व' मे धार्मिक चिन्तनक तीन अन्य मार्ग—ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग एवं योग मार्ग पर सेहो प्रकाश देलैन्हि अछि । कर्म मार्गक अर्थ जीवनक पार्थिव व्यापार सभसँ घेरल रहब नहि थीक, अपितु उत्सर्ग भावनासँ प्रेरित भए कर्तव्य पालन करैत रहब थीक । शंकरदेवे जकाँ बेजबरुवा सेहो जीवनसँ निवृत्तिक दर्शनक विरोधी छलाह, कारण एकर अर्थ जीवन संग्रामसँ एक तरहेँ विमुख होएब थीक ।

गीतामे जाहि धर्मक प्रतिपादन भेल ओकर मूल प्रेरणा निष्काम-दर्शन अछि । अन्यथा मानव एवं पशुमे अन्तर स्पष्ट कएनिहार अन्य दोसर कोन वस्तु अछि । काम, क्षुधा, आहार एवं प्रजनन मूलभूत आवश्यकता दूनूमे समान अछि । कामना जीवनक प्रमुख क्षुधा थीक । किन्तु ओ व्यक्ति सभ जे जीवनक कामना पर विजय पएबामे सक्षम छथि तथा जे एकान्त निष्ठासँ प्रभुक अन्वेषण करबामे समर्थ छथि से

यथार्थमे ईश्वरक यथार्थ सन्तान छथि। आत्मानुभूति 'आत्मानं विद्धिः' कठिन सिद्धि अछि, किन्तु विना एकरे अध्यात्मिक ज्ञान संभव नहि। वेदान्त दर्शनक अनुसार जन्म विस्मरण अछि। ईश्वर प्राप्तिक अर्थ थीक जन्म पर विजय। भक्ति आत्म-प्रतीतिक वाटकेँ आलोकित करैत अछि। कोनो धर्म जे अपन सार्वभौम निवेदन एवं प्रेरणाक रूपमे वर्णित होइत अछि, विना एकरे नहि भए सकैत अछि। उत्सर्ग एवं वैराग्य आत्माक गम्भीर सरोवरमे हिलकोर उठा दैत अछि। स्वामी विवेकानन्दक शब्दमे—ईश्वरक दर्शन आत्मासँ होइत अछि, बुद्धिसँ नहि। बुद्धि तँ गलीकेँ बहार-निहार थीक जे हमरा लोकनिक वाटकेँ स्वच्छ रखैत अछि, ई आरक्षी जकाँ सह-सेवक थीक। विद्युत वा अन्य कोनो वस्तुसँ वेसी प्रवाहपूर्ण गतिमे एहि कार्यकेँ बूझल जा सकैत अछि। ईश्वर सर्वोपरि छथि तथापि हुनक राम अथवा कृष्णक रूपमे पार्थिव अवतार हुनका सीमावद्ध नहि करैत अछि। वेजबरुवाक निवन्ध 'कीर्तन आरु घोष तत्त्व'क मूल भावना इएह अछि। हिनक नीति एवं धार्मिक विषयक निवन्ध 'तत्त्वकथा' पृथ्वी पर कृष्णक रूपमे प्रकट एहि ईश्वरीय आस्थाकेँ पुष्ट करैत अछि। एहि निबन्ध सभसँ अभिज्ञ होएवाक लेल वेजबरुवाक ओहि मूलभूत मनोविज्ञानसँ अभिज्ञ होएव आवश्यक जे हुनका एहि निवन्ध सभकेँ लिखवाक लेल प्रेरित कएलकैन्हि। 'पिकविक' शैलीक हुनक किछु निवन्ध सभसँ स्पष्ट अछि जे ओ तथाकथित ईश्वरक आत्मजलोकनिक मिथ्या अहँ एवं आसक्तिसँ धुरखेरि कएलैन्हि अछि। जीवनक रंगीन चित्रक प्रति हुनका लोकनिक अभिरुचिक संगहि जीवनक अतिशयताक मिथ्या अधिकारक प्रसार प्रसंग धार्मिक भावनाक यथार्थ सारतत्त्व रूपमे प्रवहमान भेल भावनाकेँ सेहो उपहास कएलैन्हि अछि। हुनका लोकनि तथाकथित अस्पष्ट कट्टरपन्थी भूतकाल एवं स्फीत अहं केर वन्दी छलाह। वेज-बरुवाक धार्मिक-दार्शनिक निवन्ध 'तत्त्वकथा'मे एहि रूपक एकपक्षीय धार्मिक भावनाक उपयुक्त उत्तर निहित अछि। एहि निबन्ध सभमे निवन्धकार धार्मिक एवं दार्शनिक भावनाक प्रति अपन स्वीकारात्मक अभिगमक विश्लेषण करैत छथि। अतः हुनक किछु वैयक्तिक निवन्ध सभमे जे भाव सभ रिक्त रहि गेल छल से हिनक रत्नस्वरूप नीति एवं अध्यात्मिक भावनाक एहि निवन्ध सभसँ पूर्ण भए जाइत अछि।

जेना हिनक वैयक्तिक निबन्धसँ स्पष्ट होइत अछि वेजबरुवा सामान्यतः वैज्ञानिक तटस्थताक रूपमे अथवा विना कोनो अनावश्यक मिथ्या-प्रलापक रूपमे कोनो वस्तुक विवेचन नहि कए सकलाह अछि। हुनक 'श्रीशंकरदेव आरु श्रीमाधव देव' सन प्रौढ़ कृति सेहो एहि रूपक शिल्प-विधानक दोषसँ पूर्ण मुक्त नहि रहल अछि। दाँते महोदय गद्यक परिभाषा 'शृंखलाबद्ध-शब्द'क रूपमे कएने छलाह, वेजबरुवाक वैयक्तिक निवन्ध सभ एकर उपयुक्त प्रमाण थीक। अनुभव करब, बूझब, आनन्द करब एवं जाहि कोनो शैलीमे हो अनुभूति एवं भावनाकेँ यथावत्

व्यक्त करवा लेल वाणी प्राप्त करब भने ओ जाहि कोनो मानसिक प्रवृत्तिसँ सम्बद्ध हो, मे वेजबरुवाक अस्तित्व छल। इएह गप्प हुनक वैयक्तिक तथा नैतिक ओ धार्मिक निबन्धक विषयमे कहल जा सकैत अछि। हुनक वैयक्तिक निबन्धक आकर्षण स्वभावतः समयबद्ध छल, वस्तुतः ओ निबन्ध सभ आब समय सापेक्ष नहि रहल अछि, किन्तु हुनक नैतिक एवं धार्मिक निबन्ध सभमे कालसीमा नहि अछि आ ओ सभ काल पथ पर ध्वनित होइत रहत। ओलिवर एल्टन केर शब्दमे—'मनुष्यक एकात्मता तथा व्यक्तित्व अबैत अछि, जाइत अछि, अपितु हुनक मानसिक आन्तरिक वृत्ति सभ दोसरामे संचारित होइत अछि एवं लुप्त होइत अछि।' वेजबरुवाक वैयक्तिक निबन्ध सभक मानसिक अन्तरवृत्ति सभ संचरित नहि भेल अओर ने हुनक केओ समकालीन लेखक कोनो महत्त्वपूर्ण मात्रामे एहि भावकेँ प्रतिबिम्बित कएलैन्हि अछि। निकट वर्तमानक चारुलेखनमे वेजबरुवाक प्रभाव लेश मात्रो देखबा मे नहि अबैत अछि।

वेजबरुवाक एहन धारणा छलैन्हि जे लेखककेँ अपन पाठककेँ अपन रचना शैलीसँ अवश्य प्रसन्न करवाक चाही भने ओ रचना शैली हुनक वैयक्तिक निबन्ध जकाँ कृत्रिम मुद्राक रूप किअए नहि धारण कए लिअए। 'काकोटोर टोपोला'मे ढेकि कविक धारणा वंकिमचन्द्रक कमलाकान्तसँ लेल गेल अछि। ओ अपन समकालीन किछु साहित्यिक प्रतिस्पर्द्धीक प्रति घृणा कएलैन्हि अछि, की नहि से कहब तँ कठिन अछि किन्तु ओहिमेसँ किछु व्यक्तिक प्रति गर्वयुक्त उपेक्षाक भाव रखैत छलाह से सहजहि कहल जा सकैत अछि। तथापि ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे वेजबरुवाक स्वभाव एवं कल्पनामे अवसाद क्षणक एकान्त ओ सुखद अनुपस्थिति छलैन्हि। अत्यन्त सूक्ष्म रूपमे शेष हुनक निबन्धमे छैन्हि, हुनक व्यंग्य-विद्रूप बड़ उन्मादकारी अछि तथापि जीवनक प्रति धारणा हिनक कखनहु विषाक्त नहि भेलैन्हि।

स्फीत शब्दजाल अथवा तथाकथित शब्दचातुरीसँ सर्वथा उन्मुक्त वेजबरुवाक रचना-शिल्प हुनक मानस केर यथार्थ द्योतक अछि जे कि हम हुनक नैतिक-धार्मिक निबन्ध सभमे देखि सकैत छी। हुनक रचना-शिल्प जीवनक गहनतर पक्ष सभकेँ बौद्धिक प्रतीतिक उच्च स्तर धरि पहुँचेबामे समर्थ अछि। संक्षेपमे हुनक रचना-शिल्प हुनक मानस केर यथार्थ द्योतक तँ अछिए संगहि हुनक मनक पारदर्शी प्रतिबिम्बन सेहो करैत अछि। वेजबरुवा निरन्तर एक सुधारक तथा सोद्देश्यपूर्ण साहित्यिक कलाकार छलाह जे ओ आमरण रहलाह। 'तत्त्वकथा'क गद्य संयत एवं सौम्य अछि, संक्षिप्त और सारगर्भित अछि। एकरा संगहि ई मृदुल एवं बर्षोपरान्त सूर्यक रश्मि जकाँ दीप्तिमान अछि।

नाटककारक रूपमे

ई कहल जाइत अछि जे 'कॉमदी'मे सामाजिक व्यवस्थाक विपथगमन सभकेँ हास्यास्पद रूपमे प्रतिबिम्बन कएल जाइत अछि, किन्तु वेजबरुवा द्वारा लिखित स्थितिविशेषक एहि नाटक सभमे जतए नाटकक प्रकार सभ संचालित होइत अछि, सामाजिक व्यवस्था सभ एवं ओकर विपथगमन सभक संयत, वस्तुपरक आकलनक लेखकीय क्षमता कतहु नहि प्रकट होइत अछि। ई सत्य थीक जे ई नाटककार वेन जॉनसन जकाँ मानवक त्रुटि सभसँ खेलएबाक चेष्टा कएलैन्हि अछि, मानवक अपराध सभसँ नहि। वाचाल बालकक प्रगल्भता जकाँ वेजबरुवाक प्रतिभा मूलतः अंगभीर तत्त्व दिश उन्मुख छल। अपन अंगभीर कॉमदी तथा प्रहसन आदि द्वारा वेजबरुवा मानव चरित्रक दोष दिश संकेत अवश्य कएलैन्हि अछि, मुदा एकमात्र संकेत कए देब एक रिक्तताकेँ छोड़ैत अछि जँ सामाजिक चिन्तनसँ ओ दोषसंकेत उत्प्रेरित नहि अछि।

यद्यपि शिल्पगत भिन्नता रहितहुँ वेजबरुवाक अगंभीर कॉमदी (प्रहसन) सभ एक तरहेँ लेखकक नाटकीय कथोपकथन एवं हुनक मानसिक स्थिति एवं भावना सभ जे हुनक अगंभीर निबन्ध सभमे उपस्थापित भेल अछि, तकरे प्राचीन शास्त्रार्थ अछि। उदाहरणार्थ 'नोमल' नामक नाटकक कथावस्तु ठीक ओएह अछि जे हिनक 'बुड़िआइर साधु'मे वर्णित 'नोमलिया पो' नामक कथानकक अछि। हिनक व्यक्तिपरक निबन्ध सभमे 'कृपावर बरुवा'मे जाहि रूपक जीवनक प्रति भावहीन दृष्टिकोण, हास्यक क्षमतासँ परिपूर्ण व्यक्त भेल अछि ताही रूपेँ हिनक प्रहसनमे सेहो पाओल जाइत अछि।

एच॰सी॰ बरुवा (1835-97)क 'कानियाकीर्तन' (1861) नामक प्रारम्भिक कृति असमी साहित्यमे अगंभीर कॉमदी अथवा प्रहसनक पथकेँ प्रशस्त कएलक। ओकर तुलनामे अथवा विशिष्ट समसामयिक पी॰ एन॰ गोहाँई बरुवाक 'गाँवबुड़ा' (1899), 'टेंटुन टामुलि' (1909) अथवा 'भूत ने भ्रम' (1923) सन-सन अगंभीर कॉमदी तथा प्रहसन सभक तुलनामे वेजबरुवाक अगंभीर कॉमदी अथवा प्रहसन यथा 'लितिकाइ' (1890), 'नोमल' (1913), 'चिकरपति निकरपति' (1913)

तथा 'पाचनि' (1913) सभमे निम्नस्तरक कृतिक भास होइत अछि। ई नाटक सभ बिना कोनो सामाजिक उद्देश्यसँ लिखल गेल अछि। एच० सी० बरुवा तथा पी० एन० गोहाँई बरुवाक अगंभीर कॉमदी अथवा प्रहसन सभमे असमिया सामाजिक जीवनक अभिव्यक्ति भेल अछि, कमसँ कम ओकर आभास अवश्य होइत अछि, किन्तु बेजबरुवाक अगंभीर कॉमदी अथवा प्रहसनक विषयमे ई बात ओतबे बल दए नहि कहल जा सकैत अछि।

उद्दीपित चरित्र-चित्रण तथा स्थितिक घनीभूत उल्लास द्वारा मंचप्रभावकेँ सृष्टि करबामे अपन सीमित रूपमे बेजबरुवाक प्रहसन सभ निस्सन्देह सफल भेल अछि, किन्तु एहि तत्त्व सभकेँ नाटकक प्राण नहि कहल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ 'लितिकाइ' केर किछु दृश्य एतबा अनर्गल अछि जतबा दूर धरि अनर्गलता जा सकैत अछि। पात्रक विसंगति, अन्तर्विरोध तथा अस्पष्टता, हठात् छल-छद्मसँ उत्पन्न स्थिति सभ कोनो साहित्यिक कृतिक जीवनीशक्ति नहि भए सकैत अछि खारा कए नाटककर्तृ नहिएँ भए सकैत अछि। एहि अगंभीर प्रहसन सभकेँ जखन सामान्य भावसँ विवेचन करैत छी तखन ई कहब अत्युक्ति नहि होएत जे बेजबरुवा जे हमरा लोकनिक वैष्णव साहित्यक शाश्वत स्रोतमे नीक जकाँ अवगाहन कएने छलाह,केँ सम्भवतः ई प्रहसन सभ लिखबा काल राम सरस्वतीक 'विदग्ध, जीवन्त एवं प्रफुल्ल प्रहसन 'भीमचरित' ध्यानमे छलैन्हि।

बेजबरुवाक प्रहसनक जीवनीशक्ति छल विनोद एवं हास्यक स्थितिक निर्माण —हिनक विनोदक सृष्टि विशेषतः कथोपकथनक एक प्रकारक मोड़ द्वारा, यत्र-तत्र ग्रामीण मुहावराक प्रयोग द्वारा एवं एक सीमा धरि शब्दक अनुचित व्यवहार द्वारा होइत अछि। चरित्रक विचित्रता सभकेँ प्रकट करबा लेल तथा बढ़ा-चढ़ा कए प्रस्तुत करबा लेल शब्द सभकेँ मोड़वा ओ घुमएबामे बेजबरुवाक समान दोसर लेखक ताकब अविश्वसनीय अछि। स्थिति अथवा चरित्रक विचित्रता सभकेँ धार देबाक लेल ओ बहुधा जानि-बूझि कए पौराणिक सन्दर्भ सभसँ मिथ्या उद्धरण प्रस्तुत कए दैत छलाह जाहिसँ हठात् हँसी लागि जाइत छल। इहो कहब कोनो मिथ्या नहि होएत जे एहि प्रकारक युक्ति सभक प्रयोगसँ किछु दूर धरि लेखकक सामान्य अहं भावना सेहो प्रकट होइत अछि। उदाहरणार्थ 'नोमल'मे सत्राधिकारक साहित्यिक रचनाक प्रयासमे वर्णसंकर साहित्यिक लहरि जे सभ तरहेँ घृणास्पद अछि केर दृष्टान्त उल्लेख द्वारा बड़ पटुता संग आघात कएल गेल अछि। 'गालर रकम शुनि मेदिनी माओ कंपिसे।'

स्थितिक निर्माण लेल सर्वस्वीकृत नाटकीय द्वन्द्वक स्थानमे बेजबरुवा षड्यन्त्र तथा प्रतिषड्यन्त्र सभकेँ, विस्फोट तथा प्रतिविस्फोट सभकेँ व्यवहार करैत छथि। एहि प्रहसन सभकेँ अनेक आयाम अछि किन्तु ओहिमे जे सर्वप्रमुख आयाम अछि ओ अछि अतिरंजित चरित्र-चित्रण एवं स्थिति। एहि सभक अतिरिक्त, मूल्य सभक

अनुचित आग्रह एवं निष्ठुर मानसिक मनोग्रन्थि सभसँ उत्पन्न सामाजिक विचित्रता सभक व्यंग्यात्मक उल्लेख हिनक प्रहसनक बृहत् मात्रामे 'पार्श्व प्रकाश' निर्माण करैत अछि। एतवे नहि, जे किछु रहओ हिनक कथोपकथन अपरिहार्य लगैत अछि। ई सत्य अछि जे वेजवरुवाक शैली कखनहुँ रहस्यमय भए जाइत अछि किन्तु एहन गप्प दशवेरमे कखनहुँ एकवेर होइत अछि।

यथार्थतः वेजबरुवाक प्रहसनकेँ उत्थर आकि गम्भीर कॉमदीक संज्ञा नहि देल जा सकैत अछि, कारण कॉमदीकेँ प्रहसनसँ भिन्न कएनिहार वस्तु मनःस्थिति एवं लक्ष्य अछि। कॉमदीक लक्ष्य जेना सामान्यतः बूझल जाइत अछि 'विचारप्रवण हास्यकेँ उपस्थापित करव रहैत अछि। ई सर्वोच्च अर्थमे सामाजिक होइत अछि किन्तु प्रहसन प्रकृतितः एहन नहि होइत अछि। उदाहरणार्थ 'लितिकाइ' किछु मानसिक रूपसँ अविकसित पात्रकेँ उपस्थित करैत अछि जे सभके सभ सोदर भाइ सभ छथि अओर इएह पात्र सभ अपन मूढ़ता एवं विचित्रतासँ एहन परिस्थितिक जन्म दैत छथि जाहिमे हास्य छिलकैत अछि। नाटकक मुख्य लक्ष्य ओही पात्र सभक धूरी पर नचबाक संगहि नाटकक मुख्य पात्र देउराम जे ब्राह्मण अछि आजे अपन भाइ सभकेँ भृत्यक रूपमे नियुक्त करैत अछि, केर चारू कात घुमैत अछि। प्रहसनक सन्दर्भमे अतिनाटक अनिवार्य होइत अछि, 'लितिकाइ' केर परिणति प्रतिशोधमे अछि। सातो नोकरमे प्रमुख तिताइ अन्तमे क्रोधातुर ब्राह्मणक सारिसँ विवाह करैत अछि। ब्राह्मणक स्त्री चण्डीकेँ छोड़ि अन्य सभ पात्रक चित्रण कत्थइ रंगसँ भेल अछि।

यद्यपि 'पाचनि'क रचना दू दशकक पश्चात् भेल तथापि 'लितिकाइ' जकाँ प्रहसन स्थिति पर आधारित अछि। चरित्र अध्ययनक वैषम्य परस्पर भिन्न दू मानसिक प्रवृत्तिक चित्रण द्वारा कएल गेल अछि : पाचनिक अतिथि-सत्कारक भावना जे ओकर हृदयमे बद्धमूल भए गेल अछि तकरा द्वारा तथा ओकर पत्नीक एहि मानसिक भावनाक प्रति नितान्त शीत उपेक्षा द्वारा। जाहि युक्ति सभक बलेँ एवं जोगार सभक बलेँ ओकर स्त्री अतिथि सभकेँ अपन अबुझ स्वामीकेँ बिनु बुझने कात कए दैत अछि ओ स्थितिक नाटकीयताकेँ अओरो तीव्र बना दैत अछि। पत्नीकेँ किछु वैष्णव सिद्धान्तक ज्ञान गम्भीर अछि, विशेषतः एहि सिद्धान्तक जे ईश्वरक दृष्टिमे सभ प्राणी समान अछि। एकर ज्ञान एहि प्रहसनक स्तरकेँ ज्ञानक उच्चतर स्तर धरि उठबैत अछि अन्यथा ई प्रहसन उटपटांगे एवं अपरिष्कृते रहि जाइत।

विहंगम दृष्टिएं 'चिकरपति निकरपति' कोनो आधारभूत मानवीय दुर्बलताक उपहास नहि अछि, मुदा चिकरपति एवं निकरपति नामक दू पकिया चोरक जे एक दोसराकेँ चातुर्य्यमे परास्त करए चाहैत अछि, चातुर्य्य एवं धूर्त्तता पर प्रकाश दैत अछि। दूनूमे पहिल चिकरपति वेसी चतुर अछि जे दोसर निकरपतिकेँ चातुर्य्यमे

परास्त करैत अछि अओर जेना कि एहि रूपक सभ अगंभीर प्रहसनमे होइत अछि, एकर अन्त वड़ सुखद अछि। तथापि धूर्त्ततांक संगहि नाटकक दोसर दृश्यमे मानव चरित्रक दुर्वलतासभक चित्रण सेहो भेल अछि। वूढ़ विधिवेत्ता गंगाराम आयु वाचालता एवं छद्म ज्ञानक अवांछित मुद्राक प्रतिनिधित्व करैत अछि। दोसर दिस सुतुली गोहाँईदेउ ओहि संभ्रान्त व्यक्तिक प्रतिनिधित्व करैत अछि जे अपनाकेँ निरन्तर दुखीत मानैत अछि कारण शाश्वत रुग्नक ई मुद्रा ओहि समयमे एक प्रकारक सामाजिक वैशिष्ट्यक जन्मजात सौभाग्य मानल जाइत छल। ड्राइडन कहने छथि—प्रहसन विकटता एवं काल्पनिकता द्वारा हमरा लोकनिक मनोरंजन करैत अछि। विकटताक स्थान पर जँ असम्भाव्य शब्दकेँ राखि दी तँ केओ वेजबरुवाक प्रहसन सभक थोड़-वहुत परिचय प्राप्त कए सकैत अछि। वस्तुतः हुनक प्रहसन सभमे व्यंग्य वड़ थोड़ अछि आ द्वेपकतँ नामो नहि अछि। यथार्थ कहल जाए तँ वेजवरुवाक ई प्रहसन सभ हुनकर विनोदपूर्ण रेखा-चित्र सभ जकाँ सरल, सामान्य, शैलीयुक्त, अट्टहासक गन्धयुक्त, विशिष्ट धुरखेरि परिपूर्ण, अकल्पनीय मूर्खता सभसँ भरल एवं हास्यक अक्षय उर्वरताक लेल उल्लेखनीय अछि। एहि रूपक नाटकमे कथातत्त्व सामान्यतः दुर्वल एवं स्वादहीन अछि तथापि ओहिमे निहित अदम्य शब्द-क्रीड़ा अओर स्थिति नियोजनक क्षमता पाठकक अर्द्धविश्वासी अओर अर्द्धसंशयी कल्पनामे परितृप्तिक एक एहन भावनाक सृष्टि करैत अछि जकर कारणसँ प्रहसन संज्ञा पओनिहार ई नाटक सभ लोकप्रिय अछि।

गार्डन हेकक वाणीमे कहि सकैत छी जे वेजवरुवाक प्रहसन सभक पात्र सभमे अपन पृथक् रंगक रंगमे रंगल व्यक्तित्व अछि। नाटककार अपन निजी शैली एवं दृष्टिकोणक विकास कएल जाहिसँ हुनक वर्णन यथार्थ एवं यथार्थ जीवनक प्रति-विम्बन बुझि पड़ए। एहि उद्देश्यकेँ ओ अपन कथोपकथन जाहिमे शब्द सभक आकस्मिक किन्तु स्वाभाविक पुनरावृत्ति अछि, द्वारा प्राप्त करबाक चेष्टा कएल। एकर पाछाँ इएह भावना छलजे कथोपकथनकेँ धीरे-धीरे एहि रूपेँ विकसित कएल जाए जाहिसँ समयक यथार्थताक बोध होअए संगहि यथार्थ जीवनमे जेना पात्र सभ गप्प करैत अछि तेना प्रतीत होअए। वस्तुतः चपलता, विशिष्टता, मृदुल व्यंग्यमे हास्यक दिव्य अन्तर्गुम्फन आदि सभगुण वेजवरुवाक प्रहसन सहित सभ रचना सभमे प्रचुर मात्रामे भेट जाइत अछि। तथाकथित भद्रपुरुषक दृष्टिमे ई प्रहसन सभ भने अभद्र एवं अनसोहाँत प्रतीत होअए मुदा एहिमे कोनो सन्देह नहि जे ओ सभ अस्त-व्यस्तक धूलि एवं अनावश्यक अतिरेकसँ मुक्त अछि।

जेना केओ बुझैत अछि ई बात सत्य थीक जे वेजवरुवाक प्रहसनक अधिकांश पात्र हूबहू प्रतिरूप नहि भए यथार्थक अतिरंजित रूपान्तर अछि। एहि सम्बन्धमे ई कहव अत्युक्ति नहि होएत जे बेजबरुवाक अशान्त मनोदशा उत्कर्ष धरिक लेल घातक छल, किन्तु एतबा होइतहुँ, ई संकेत करब आवश्यक जे हुनक प्रायः सभ पात्र भने

ओ केहनो अतिरंजित किएक नहि हो, अपन-अपन पद्धतिसँ संगीतपूर्ण अछि। बेजबरुवाक चेतना तीक्ष्ण एवं तीव्र छल जे अधिकतर हुनक विचित्र अभियानक प्रेरणा बनि जाइत छल, किन्तु एकरा संगहि हुनक मन एतेक संयत छल जे जखन कखनो नियन्त्रणक आवश्यकता छल तखन नियन्त्रित कए सकैत छल। हुनक ई गुण विशेष रूपसँ हुनक गम्भीर नाटकमे लक्षित होइत अछि जकर कथावस्तु मुख्यतः, ऐतिहासिक छल। बेजबरुवाक गम्भीर नाटक 'बेलिमार', 'जयमति कुँवरि' एवं 'चक्रध्वज सिंह' (सभ 1915 ई०मे लिखल गेल छल) नाटकीय सामग्रीसभ एवं नाटकीय क्षण सभसँ परिपूर्ण अछि। एही सभ कारणसँ हिनक कोनो ऐतिहासिक नाटक सभमे जीवन्तताक अभाव नहि अछि। संक्षेपमे कहि सकैत छी नाट्य-रचना बेजबरुवाक प्रतिभाकेँ अनुशासित कएलक अओर हुनका शैलीक शिक्षा देलक। ई ऐतिहासिक नाटक सभ देशभक्तिक ज्ञानक उद्देश्यक पूर्ति कएलक। 'असमी लिटरेचर'सँ उद्धरणक उल्लेख करैत हम कहि सकैत छी जे 'ब्रिटिश शासन कालमे हमर साहित्यकेँ जे रोमाण्टिक आदर्श प्रभावित कएलक, इतिहासक प्रति अभिरुचि ओकर प्रेरक पक्ष अछि। दासताक राजनीतिक परिस्थिति सभमे ओ अओरो तीव्र भए उठल। हमर ऐतिहासिक नाटक सभ उत्पन्न भेल। पी० एन० गोहाँई बरुवाक दुखान्त नाटक 'जयमति' हमर भाषाक सर्वप्रथम ऐतिहासिक नाटक अछि। साकार साहित्यिक रूपमे ऐतिहासिक अतीतक पुनुरुज्जीवन वर्तमान जीवनमे नव प्राण भरबामे सहायक भेल। जेना बेन जॉनसन 'सेजानस'मे रोमक इतिहासक आश्रय लेलैन्हि तहिना बेजबरुवा जे आब प्रहसन लेखकक रूपमे अपनाकेँ प्रतिष्ठित कए चुकल छलाह, अपन गम्भीर नाटक सभमे अहोम इतिवृत्ति सभक आश्रय लेलैन्हि। वैषम्य द्वारा चरित्र-चित्रणमे एवं विनोदपूर्ण विलासिका सभमे ई नाटक सभ शेक्सपियरक प्रभावसँ अतिशय प्रभावित लगैत अछि।

'बेलिमार'क रचना आसाम पर वर्माक आक्रमणक पृष्ठभूमिमे भेल अछि। वर्मा द्वारा लगातार तीन बेर आक्रमण सभ आसामक भूमिकेँ 'शुष्क-अस्थिपंजर' बना देलक। 'रक्तपात एवं अशान्तिक एहि पृष्ठभूमिक आधार पर आसामक स्वाधीनताक अपहरण प्रस्थापित कएल गेल अछि। ई प्रस्थापन अतीतक शक्ति सभक गहन अर्न्तदृष्टिसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। नाटकक प्रथम तीन अंकमे अतीतक ओहि शक्ति सभक चित्रण भेल अछि जे देशक स्वतन्त्रताक भयंकर अन्तक लेल उत्तरदायी अछि। बड़ कौशल एवं प्रबोध द्वारा एहि दुर्दशाक लेल उत्तरदायी चारि प्रमुख ऐतिहासिक पात्र सभक पारस्परिक कलहकेँ उजागर कएल गेल अछि। ई सम्बद्ध पात्र सभ अछि—चन्द्रकान्त पूर्णानन्द, वदनचन्द्र एवं सतराम। हीनवंशीय सतरामकेँ राजा चन्द्रकान्तक संरक्षण प्राप्त छल तेँ हुनक महत्त्वाकांक्षा सभकेँ गगनचुम्बी होएब पूर्ण स्वाभाविक छल। ई ओहि समयक अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्रप्रेमी पूर्णानन्दसँ हुनका कलह करा देलक। फलस्वरूप सतरामक चारूकात प्रपञ्च

एवं षड्यन्त्रक पसार पसरि जाइत अछि आ ओ अपनाकेँ एक चक्रवातक बीच पबैत छथि, अन्ततः हुनका देशनिष्काशन भए जाइत अछि।

एकर अतिरिक्त दुश्चरित्र चन्द्रकान्तक चरित्रक वीभत्स पक्षक चित्रण पूर्ण चमकदार रंगमे कएल गेल अछि, कत्थइ रंगमे नहि। पूर्णानन्द एवं वदनचन्द्रक द्वन्द्वक चित्रण बड़ पटुता संग कएल गेल अछि। एहि द्वन्द्व सभकेँ बड़ ऐतिहासिक महत्त्व अछि। अन्तिम अंकमे अहोम शासनक अन्त देखाओल गेल अछि। संगहि ई अनेको ऐतिहासिक तथ्य पर प्रकाश दैत अछि—यथा :—(1) वर्माक आक्रमण जे देशकेँ अकथनीय विपत्ति सभमे निमग्न कए देलक, (2) राजा चन्द्रकान्तक कामरूप पलायन, (3) ब्रिटिशक आगमन।

इतिहासक शक्ति सभकेँ चित्रण करबामे नाटककार असाधारण तथ्यनिष्ठासँ काज लेलैन्हि अछि। तेँ एहि आधार पर ई मानव भ्रम होएत जे वेजबरुवामे पात्र सभक सृष्टि करबामे अथवा परिस्थिति सभकेँ चरमोत्कर्ष धरि लए जएबामे मौलिक क्षमताक अभाव छल। अनैतिहासिक सहचरित्रक निर्माण करबामे नाटककार अपन महान् कौशल एवं कल्पनाक परिचय देलैन्हि अछि। संगहि नाटकमे किछु दृश्यसभ वेसी विश्लेषणात्मक एवं कथावस्तुक दृष्टिसँ वेसी व्याख्यात्मक अछि अपेक्षाकृत नाटकक तत्त्व सभक। तनावपूर्ण वातावरणमे जकरा इतिहासक शक्ति सभ जन्म दैत अछि, नाटकक विनोदपूर्ण अन्तर्कथा नाटकीय संघर्ष मात्रकेँ वैषम्यक माध्यमसँ तीव्रता प्रदान नहि करैत अछि अपितु इतिहासक शुष्क अस्थि सभकेँ अधिक सप्राण एवं संभाव्य बनबैत अछि। धनसिरि, वक्तियाल फुकोन, माजुमेलिया बरुवा आदिकेँ चित्रित कएनिहार दृश्यसभ एहि उक्तिक प्रमाण उपस्थित करैत अछि।

वेलिमार जनताक त्रासदी अछि। ई त्रासदी जे चन्द्रकान्त, वदनचन्द्र तथा पूर्णानन्द सनक व्यक्तित्वकेँ स्पर्श करैत अछि, एक गहनतर त्रासदीक अंश अछि जे स्वतन्त्र जनक विशिष्ट व्यक्तित्वक लोप कए दैत अछि। राष्ट्रक त्रासदीकेँ रंगमंच पर उजागर करबाक अपन प्रयासमे नाटककार अपन दृष्टिकेँ इतिहासक आधारभूत तथ्य सभ पर विशेष केन्द्रित करैत छथि नहि कि ओहन चरित्र पर जे इतिहासक संवल सभकेँ एक विशेष दुखान्तपरक बनएबाक हेतु उत्तरदायी अछि। तथापि ई कहए पड़त जे पात्र सभक समुचित विकास भेल अछि।

'वेलिमार' विस्तारपूर्वक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि। वेजबरुवाक अन्य दू ऐतिहासिक नाटक जकाँ ई नाटक शेक्सपियरीय नाटकक धारणा पर निर्मित कएल गेल अछि। विनोदपूर्ण अन्तर्कथाक अतिरिक्त भूमुक बरुवा नामक रोचक पात्र शेक्सपियरीय मूड़क स्मरण करबैत अछि जकरामे जन्मजात बुद्धिमत्ता एवं नैसर्गिक मसखरीय सम्मोहक संयोग अछि। भूमुक बरुवा जे किछु कहैत अछि ताहि सभमे आलोचनात्मक स्पर्श अछि। राजमाउ एवं पिजौ आदि नारी पात्रक चित्रणमे नाटककार महत्त्वपूर्ण रूपसँ मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टिक परिचय दैत छथि। राजनीतिक घटना

सभक विपम प्रवाहसभक कारणे एवं अपन पिता वदनचन्द्रक वर्मी आक्रमक संग साँठगाँठक कारणे पिजौ अपन मानसिक सन्तुलन गमा दैत अछि तथा शेक्सपियरक ओफीलिया जकाँ दुःखद मृत्यु केँ प्राप्त करैत अछि।

शिल्पक दृष्टिसँ 'वेलिमार' त्रुटिरहित नहि अछि। नाटकक प्रारम्भिक तीन अंकक गति मन्थर अछि जखन कि अन्तिम दू अंक जतए कि चरमविन्दु एवं परिणतिक निर्माण होइत अछि, ओहन नहि अछि। नाटकक शिल्पगत विकासकेँ ई तथ्य अवरुद्ध करैत अछि तथा वांछित अन्विति सँ वंचित करैत अछि।

मंच-शिल्पक दृष्टिसँ प्रभावक एकाग्रताक लेल ख्यात 'जयमति कुँवरि' पूर्ण सफल अछि। नाटक सिद्धान्त सभक एवं व्यक्तित्त्व सभक संघर्षक प्रतिनिधित्व करैत अछि जकर परिणाम होइत अछि परिस्थितक विरेचन जतए पात्र सभ अनिवार्य रूप सँ जुड़ल रहैत अछि। यद्यपि एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिसँ एहि नाटकमे इतिहाससँ एक उल्लेखनीय प्रत्यन्तर भेटैत अछि तथापि ई नाटक केवल भावनामे धनी नहि अछि अपितु विस्तृत अर्थमे ऐतिहासिक सत्य सेहो अछि। इतिहासक अनुसार लोरा रजा केँ दिग्भ्रमित कएनिहार लालुक बड़फुकन छल नहि कि अतन बुड़ागोहाँई जेना कि वेजबरुवा चित्रित कएने छथि। जँ ई भ्रम ऐतिहासिक ज्ञानक अभावक कारणे नहि अछि अपितु नाटककारक द्वारा एहि दृष्टिसँ कएल गेल अछि जे अतन बुड़ागोहाँई सनक व्यक्तिकेँ सम्बद्ध कए इतिहासक दुःखद मोड़केँ तीव्रतर आयाम देवाक लेल, तखन तँ इतिहासक ई त्रुटि किछु दूर धरि बुझवा योग्य होइत अछि।

ऐतिहासिक नाटकक सम्बन्धमे बेजबरुवाक अवधारणा छल जे एहिमे इतिहास कोनो नग्न एवं अनलंकृत नहि होइत अछि। एलारडाइस निकल कहने छथि जे संघर्ष नाटकक आत्मा थीक। एहि नाटकमे संघर्ष चिक्कन अछि तथा ठाम-ठाम कड़गर अछि तथापि एहिमे संवेगात्मक प्रभावक अभाव नहि अछि। बेजबरुवा एहि नाटकमे किछु सर्वोत्तम पात्रक निर्माण कएल अछि। किछु गौण पात्र सभ सेहो अछि जे नाटककारक ध्यान आकर्षित करवामे सफल भेल अछि। स्पष्टतः तन एवं मनसँ असंस्कृत पृथु चंगमईक हृदय 'मानवीय करुणाक्षीर' सँ ओतप्रोत अछि। ओ एक साधारण घरैया नोकर अछि। संकटक घड़ीमे ओ अपन वैयक्तिक संरक्षणक असाधारण साहस देखबैत अछि तथा जाहि परिवारमे काज करैत अछि तकर प्रति अटूट स्वामिभक्तिक परिचय दैत अछि। एहि दुःखान्त नाटकक प्रधान नारी पात्र जयमतिक चित्रण संयत रंगसँ कएल गेल अछि। ओ अपन प्रतिपक्षक संग पर्याप्त समता रखैत अछि जेना कि शेक्सपियरक कोरियोलेनसक प्रतिपक्षी एन्फिडियसक चित्रणमे भेल अछि। अन्य नारी-पात्र—यथा राजमाउ, तरवारि (एक दासी), सेउत एवं डालिमी संवेगात्मक रूपमे जीवनक यथार्थ चित्रण अछि। नगा कन्या डालमीक रूपमे बेजबरुवा पर्वत सभक प्राकृतिक शुपमाक अवोध प्राचुर्य सँ उद्भासित तरुण जीवनक चित्र अंकित कएलैन्हि अछि। डालिमी रोमाण्टिक परिवेश मे एक चरित्रक

वस्तुनिष्ठ आकलन अछि। वेजवरुवाक एहि रचनाक तुलनामे पी० एन० गोहाँईक वरुवाक नाटक 'जयमति' (1900) जकर आधार पर वेजवरुवा अपन 'जयमति कुँवरि' (1915) प्रस्तुत कएने छथि, केवल काव्यात्मक दृष्टिसँ अनुर्वर नहि अछि, अपितु आदर्शसँ वास्तविक स्खलनक प्रमाण सेहो अछि। तराइक भगोड़ा राजकुमार गदापाणि वन्य-प्रान्तक सम्पूर्ण सौन्दर्यकबोधमे ओकर स्वाभाविक सहचर बनि-जाइत अछि। संक्षेपमे वेजबरुवा यद्यपि अपन नैतिक एवं धार्मिक निबन्धमे अध्यात्मक चर्चा करैत छथि तथापि ओ अपन पात्र सभकेँ अध्यात्मक दृष्टिसँ कखनहुँ नहि देखलैन्हि ओ सभ धरती परक छथि, पार्थिव छथि। एकमात्र डालिमी अपवाद अछि।

नाटकक दृश्य सभ कखनहुँ सहर-जमीन आ कखनहुँ पर्वतीय प्रदेशमे तीव्रताक संग अदलैत वदलैत एक दोसराक संग जुटैत अछि। सहरजमीन पर कटु यथार्थ, संघर्ष एवं षड्यन्त्र अछि—लोरा रजाक नैश शंकट एकर उदाहरण अछि। पर्वत मे रोमान्स अछि जे जीवनक रुच्छ तत्त्व सभ केँ काव्यमय बना दैत अछि। डालिमी वेजवरुवाक अमर रचना अछि, अपन अल्हरता मे ई रचना वर्ड्सवर्थक रचना सन अछि। नाटककार अपन पात्र एवं वातावरणकेँ एहन प्राञ्जल एवं नीललोहित गद्य मे चित्रण कएलैन्हि अछि जे वातावरणक लेल सर्वथा उपयुक्त अछि। डालिमी भावना एवं रोमान्स दूनू दृष्टिसँ यथार्थ पात्र अछि एवं पर्वतमे लुप्त संगीत जकाँ अछि। यथार्थ मे 'जयमति कुँवरि' एक राजनीतिक काव्य अछि।

चक्रध्वज सिंहक सम्बन्ध मे कमसँ कम एतेक त कहले जा सकैत अछि जे ई ऊर्जासँ परिपूर्ण अछि। यद्यपि ई बड़ सामान्य स्थान पर प्रारम्भ होइत अछि तथापि कथा मे अन्तर्निहित द्वन्द्व एवं भावना अन्ततः स्वयं जोर पकड़ैत अछि एवं मन्त्रमुग्ध कए लैत अछि। एहि नाटकक प्राक्कथन मे वेजबरुवा स्वयं स्वीकार करैत छथि जे ई नाटक लिखबाक हिनक मुख्य उद्देश्य प्राचीन इतिहासक सम्पदा पर ध्यान केन्द्रित करब रहल अछि। ओलिवर एल्टनक कथन अछि 'भूतकालक बुद्धिमत्तासँ बर्तमान केँ शिक्षित करबाक लेल सामान्यतः इतिहासक आह्वान कएल जाइत अछि। 'किन्तु वेजबरुवा एहि पद्धतिक विपरीत चलैत छथि ओ वर्तमानक आलोक मे भूतकेँ देखबाक प्रयास करैत छथि। ई विपर्यस्त अन्तः सम्बन्ध सामाजिक विवेककेँ संगत एवं यथार्थताक अभिनय साँच मे राखि देलक अछि।

वेजवरुवा स्वयं कहैत छथि जे प्रियराम एवं गजपुरियाक चरित्र शेक्सपियरक पात्र प्रिन्स हॉल एवं फॉल्सटाफक अनुरूप बनाओल गेल अछि। प्रियरामक चित्रण प्रिन्स हॉल एवं गजपुरियाक चित्रण फॉल्सटाफ एवं गजपुरियानीक चित्रण श्रीमती क्विकलीक रूप मे सामान्यतः भेल अछि। गजपुरियामे नाटककार एक एहन दम्भी चरित्रकेँ प्रस्तुत करैत छथि जे सम्पूर्ण नाटक मे अपन डींग हँकैत अछि। जखने एकर कृतिम बहादुरी समाप्त होइत अछि तखने ई नष्ट भए जाइत अछि। वस्तुतः गजपुरिया केवल वाह्य रूप मे फॉल्सटफक प्रतिरूप अछि। ओ पटु एवं छद्म वीर

अछि। जीवनक प्रति ओकर प्रवृत्ति अदालती अछि। यथार्थ मे फॉल्सटाफ जकाँ ई 'संश्लेपणात्मक चरित्र' नहि अछि। ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे बेजबरुवाकेँ अपन गौण पात्रक चित्रण मे निरन्तर विवरण मे मौलिकता अछि एवं आकृति मे नीरसता नहि अछि। नाटककार महज भोला-भाला आचरणसँ सूक्ष्मता सभकेँ उजागर करवा मे दक्ष छथि। ई सत्ये थीक जे गजपुरिया सन हास्य पात्रकेँ नाटकाकार विशेष हास्यपूर्ण बना देलैन्हि अछि तथापि अन्ततः ई अवश्य कहल जा सकैत अछि जे ओसभ मनुष्य छथि, यन्त्र नहि।

नाटक मे सदियाखोवा गोहाँई एवं सनेहीक बीच उद्घाटित प्रेम गौण प्रसंग मात्र अछि। ई अपन प्रधान ऐतिहासिक कथासँ ओही तरहेँ जुटल रहैत अछि जेना चन्द्रमण्डल मे चन्द्रमाक निम्नस्थ भाग मे तारा रहैत अछि। एहि नाटकक पात्र सभ मे अन्तर्द्वन्द्व बड़ थोड़ अछि। भाग्याश्रित पात्रक सिद्धान्तकेँ मानैत ई पात्र सभ ओहि परिस्थिति सभक चपेट मे पड़ल छथि जे हुनका लोकनिक साध्यसँ बाहर अछि। यद्यपि नाटकक नाम चक्रध्वज सिंहक नाम पर राखल गेल अछि, शीर्पकक अनुसार चरित्रक विकास स्पष्टतः नहि भेल अछि। ओ एक मोमबत्तीक प्रकाश जकाँ छथि जकर चारूकात इतिहासक सम्पूर्ण कड़ाह भट्ठी जकाँ बड़कैत रहैत अछि। एहन बुझाइत अछि जेना कि नाटककार अपनसभ यत्न एवं ध्यानकेँ गजपुरिया सन गौण पात्र पर उझीलि देलैन्हि अछि जकर कारण चक्रध्वज निष्प्रभ भए गेल अछि। दोसर दिश लाचितक चरित्र पृष्ठभूमिक प्रकाश नहि अछि। अपितु निरन्तर पूर्ण प्रभासँ जाज्वल्यमान अछि। शिल्प-विधानक दृष्टिसँ 'चक्रध्वजसिंह' मे किछु स्पष्ट त्रुटि सभ अछि। ई त्रुटि सभ कथावस्तुक निर्माण तथा दृश्यविधानमे दृष्टिगोचर होइत अछि। जाहि सीमाधरि विभिन्न दृश्य नाटकक चरम परिणतिकेँ परिपुष्ट करैत अछि ताहि विन्दुधरि सबल नहि अछि।

बेजबरुवा निश्चित उद्देश्यसँ ऐतिहासिक नाटकक एक शृंखला ठाढ़ करबाक प्रयास कएलैन्हि आ ई उद्देश्य छल उत्तमोत्तम अर्थमे देशभक्ति। बेजबरुवाक एहि ऐतिहासिक नाटक सभमे टेनिसनक 'क्वीन मेरी' नाटक जकाँ शेक्सपियरक प्रेरणा स्पष्ट लक्षित होइत अछि। एहि नाटक सभक सर्वोत्तम चित्रात्मक गुण नाटककारक अपन थीक। ई अवश्ये कहल जा सकैत अछि जे 'जयमति कुँवरि' मे प्रचुर काव्यात्म प्रभा अछि एवं पी० एन० गोहाँई बरुवाक ओही ऐतिहासिक कथावस्तु पर लिखल 'जयमति' (1900) नाटकसँ एहि तथ्यकेँ लए भिन्न अछि।

साहित्यिक मुहावरा सभमे इतिहासक पुनुरुत्थान विशेषतः नाटक सभमे बड़ कठिन वस्तु अछि। ई यथार्थ कहल गेल अछि जे 'मानवक अतीतक अध्ययन एक कला थीक' एकरा प्राप्त करबाक लेल ई आवश्यक अछि जे व्यक्ति विशेषमे असाधारण मानसिक विशेषता होअए। 'असमी साहित्य' नामक ग्रन्थमे स्पष्ट उल्लेख अछि—'अतीतक रचनात्मक पुनुरुत्थान तखने सम्भव अछि जखन कि लेखककेँ उप-

भाषीय यथार्थक ज्ञान होअए संगहि ऐतिहासिक शक्ति सभक उत्थान ओ पतनक संग तादात्म्य कए देवाक क्षमता होअए।' हमरा सभकेँ निश्चित रूपसँ स्मरण रखवाक थीक जे इतिहास कोनो निर्मम क्षण सभक नृत्यकला नहि थीक। वेजवरुवाक ऐतिहासिक नाटक सभ एहि तथ्यक आंशिक स्वीकृतिक प्रमाण मात्र थीक तेँ ओकर परिचय अव्यवस्थित एवं आंशिक अछि।

वेजबरुवाक दू प्रकारक नाटक-प्रहसन एवं ऐतिहासिक नाटकक लेखक छथि। ब्रिटिश शासनक परिवर्तित राजनीतिक परिस्थिति सभ परंपरागत मूल्य सभकेँ चुनौती देने छल, एही सन्दर्भमे एकरे समरूपमे तर्कक एक नव मनोविज्ञान उद्‌बुद्ध भए रहल छल। वस्तुतः ओ परिवर्तित राजनीतिक वातावरण सभक दिग्दर्शन करएबामे सफल भेल। एहि रूपक शंकटपूर्ण वातावरणमे वेन जॉनसनक पद्धतिपरक हास्यपरक नाटक लोकप्रिय होमए लागल। एहि रूपक नाटक सभ विशेषतः 'लितिकाइनोमल' पद्धतिक नाटक सभ जनता जनार्दनक चेतनाकेँ ओहि समस्या सभ दिश जे विवेकपूर्ण सामाजिक प्रज्ञा पर अतिक्रमण कएने छल, जगएबामे कतेक दूर धरि सफल भेल से कहब अनिश्चित, तथापि कम सँ कम एतबा तँ निश्चित जे एक प्रकारक न्यायिक तर्कप्रणालीक माध्यमसँ श्रोतावर्गकेँ अपन मूर्खताक अभिज्ञान द्वारा स्वयं अपना पर हँसबा लेल प्रेरित करबामे समर्थ भेल।

ई निश्चित रूपसँ उल्लेखनीय थीक जे यद्यपि ऐतिहासिक नाटक सभ सामान्यतया वृहत्तर अर्थमे देशभक्तिक व्याख्या कएनिहार साधन रूपमे मानल जाइत अछि तथापि बेजबरुवा सनक नाटककारक प्रमुख उद्देश्य देशभक्तिक पुनर्व्याख्यासँ वृहत्तर छल। परिवर्तित परिवेशमे रंगमंचीय आन्दोलन करबाक संगहि आधुनिक अर्थमे नाटकक परम्परा ठाढ़ करबाक श्रेय एही नाटककार सभकेँ अछि। बेजबरुवाक गम्भीर नाटक सभ-यथा 'बेलिमार', 'जयमति कुँवरि' एवं 'चक्रध्वजसिंह'क योगदान एहि अर्थमे व्यापक अछि। पी० एन० गोहाँई बरुवा तथा ई दूनू गोटे यथार्थ पथप्रदर्शक छथि।

कथाकारक रूपमे

ई सत्य थीक जे बेजबरुवाक हाथसँ आधुनिक कथा कठोरतम अर्थमे की थीक तकर रूपरेखा क्रमिक स्पष्टतासँ निरूपति होइत गेल, यथार्थतः ओ हमरा लोकनिक आधुनिक कथाक जनक छथि। चाहे जे किछु होअओ, इहो तथ्य थीक जे हुनक प्रतिभाक मिलान जेहन लोककथासँ छल तेहन आन कोनोसँ नहि। वस्तुतः बेजबरुवाक प्रारम्भिक प्रयास छल हमरा लोकनिक लोककथाक पुनर्निर्माण करब, संगहि अन्य स्रोत सभसँ, विशेषतः रूसी एवं बंगाली भाषासँ सेहो ओही रूपक कथा पैंच लेब। उदाहरणार्थ लघु-विवरण सभमे किछु हेरफेर तथा मूलमे माजन्टालि सरकार नामक विलाड़िक स्थान पर खिखिरकेँ राखब सन गौण परिवर्तनकेँ छोड़ि देल जाए तँ 'बुड़ि आइर साधु'क बुधिऔक स्याल उपेन्द्र किशोर रायचाधुरीक बंगलाकृति 'टुनटुनिरवइ'मे उपलब्ध मूल कथाक प्रतिरूप अछि। बेजबरुवा सर्वप्रथम बंगला भाषामे लिखब प्रारम्भ कएलैन्हि, किन्तु जखन ओहिमे सफल नहि भेलाह तखन असमी भाषामे लिखए लगलाह, सेहो दुर्लभ अनुरागक सँग। जहाँ धरि असमी साहित्यक गप्प अछि एहिसँ वाढ़ि असफलताक शुभ प्रहार अओर किछु नहि भेल।

वच्चा सभक लेल लिखल गेल अपन लोककथा सभमे बेजबरुवा बड़ मनोरम रूपसँ बालसुलभ कौतूहलकेँ बड़ कुशलताक संग अभिव्यक्त कएलैन्हि अछि, सेहो वच्चासभक मस्तिष्कमे मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि दैत जे कि हुनका छलैन्हि। एहि कथा सभक वर्णनमे ओएह सहजता एवं चारुता अछि जे पितामह द्वारा कहल गेल पौत्रक कथामे रहैत अछि। रवीन्द्रनाथ कथाक एहि गुणकेँ 'मधुर विसंगति सभ' कहलैन्हि अछि। बेजबरुवाक लोककथाक संग्रह थीक—'साधु कथार कूकि' (1910), 'बुड़ि आइर साधु' (1912) एवं 'ककादेता आरु नातिलोरा' (1912)।

'साधुकथार कूकि' मुख्यतः बालोपयोगी नहि अछि। एहिमे विभिन्न प्रकारक हास्य भरल अछि। जेना ईश्वरक सृष्टिमे विविधता एवं प्रचुरता अछि तहिना एहूमे अछि। एहि कथासभमे हास्यबोधक विशिष्ट शक्तिए नहि गुञ्जायमान अछि,

अर्पितु चरित्र निर्माणक सेहो विशिष्ट शक्ति समाहित अछि। वस्तुतः 'साधुकथार कूकि'केँ देखि ई कहल जा सकैत अछि जे वेजवरुवा कथा कहबामे निपुण छथि। यथा—स्वाभाविक रूपसँ बिना कोनो रूपक अतिभावुकताकेँ ई कथा कहैत छथि। 'बुढ़ि आइर साधु' एवं 'कका-देउता आरु नातिलोरा' जकाँ लेखककेँ एहि कथा सभमे कृत्रिमता एवं अति अलंकृतताकेँ तेजि देबाक यथार्थ आकांक्षा अछि। लेखक एहि कथा सभमे सहज नैसर्गिक एवं अनायास लगैत अछि।

संक्षेपमे लोककथा सभकेँ हम निरक्षरक आत्मकथा सभ कहि सकैत छी। यथार्थतः लोककथा सभ सामाजिक प्रवृत्तिक अभिलेख थीक। किछु लोककथासभ नैतिक शिक्षा दैत अछि तँ किछु कथामे कथातत्त्व प्रधान भेल अछि। उदाहरणार्थ 'बुढ़ि आइर साधु'क कथावस्तु बिना कोनो प्रत्यक्ष शिक्षाप्रद अभिप्रायक सामान्य लोककथा अछि। एतबे नहि, ओ एहन गम्भीर मानवीय हितसँ परिपूर्ण अछि एवं एहि रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि जे कि गम्भीरतर मानवीय महत्त्वक शिक्षाक अधिभारसँ युक्त अछि। उदाहरणार्थ—'तेजिमाला एक सिक्काक रत्न', 'कंचन' एवं 'चिलनि जियेकर साधु' सनक अन्य कथा सभ जकाँ सार्वभौम प्रभाव रखैत अछि। 'बुड़ा-बूढ़ि' एवं 'स्याल' बिना कोनो मानवीय पटुताक विशिष्ट महत्त्वक चतुर चित्रण थीक।

वेजवरुवा जनिका एक विशिष्ट प्रकारक मानव स्वभावक अन्वेषणमे अतिलोलुप कौतूहल छलैन्हि एक प्रतिभा सम्पन्न कथाकार छलाह। ई लोककथा सभ अबोध संसार एवं लेखकक कथावस्तु एवं वातावरणक प्राञ्जल व्याख्याक क्षमतासँ साकार सामान्य चिन्तनक जीवन्त आशुचित्र अछि। लोककथा सभक अबोध एवं सामान्य चिन्तनक एहि संसारमे पक्षी एवं पशु गप्प करैत अछि एवं मानवीय क्रिया-कलापमे भाग लैत अछि जे कि सामान्य तर्कशास्त्रक अनुसार एक असम्भव वस्तु थीक। जे प्रत्यक्ष रूपसँ असम्भव अछि ताहिमे वेजवरुवा द्वारा सत्य एवं सम्भावनाक प्रतिबिम्ब हुनक लोककथा सभमे देल गेल अछि। ई वस्तु सारगर्भित धारणाकेँ युवा पीढ़ीएक मोनमे नहि, अपितु पुरान पीढ़ीक मोनमे सेहो उत्पन्न करैत अछि।

'जोनाकी' (1889) पत्रिकाक तत्त्वावधानमे उद्‌भूत हमर आधुनिक लघुकथा जेना भारतक अन्य क्षेत्रीय साहित्यमे अछि, पाश्चात्य साहित्यक प्रभावसँ उत्पन्न प्रशाखा अछि। 1912 ई०मे वेजवरुवाक लोक-कथा सभक संग्रहक अन्तिम भाग 'कका देउता आरु नातिलोरा' प्रकाशित भेल। एही सालमे हुनक लघुकथा सभक संग्रह, प्रथम भाग 'सुरभि' सेहो बहराएल। हिनक लघुकथा सभक संग्रहक दोसर भाग 'जोनबीरी' सन् 1913मे प्रकाशित भेल।

वेजवरुवाक कथाक सम्बन्धमे 'असमीज लिटरेचर'मे कहल गेल अछि,— 'दृष्टिकोणमे परम्परागत रहितहुँ वेजवरुवाक कथा सभमे जीवनकेँ स्वाभाविक रूपमे लोकाचार एवं जीवन्तताक संग, आह्लाद एवं विषादक संग वर्णन करबाक

सर्वप्रथम गम्भीर प्रयास कएल गेल। तथाकथित नवीन वर्ग जे विदेशीक छत्रछायामे पल्लवित होइत छल तथा जकरा यथार्थक संज्ञा दैत छल, द्वारा प्रदर्शित मूर्खताक भावनासँ ई अतिशय हतप्रभ होइत छलाह। हुनक देशभक्तिक भावना एहि अन्ध सामाजिक प्रवृत्ति जकरा ई स्वीफटक दक्षताक समान व्यंग्य प्रस्तुत करैत छलाह, सँ प्रभावित होइत छल। एडिथ सिटवेलक शब्दमे बेजबरुवाक कथा सभकेँ पढ़ब अम्मत अंगूरकेँ खाएब समान छल।

बेजबरुवा जाहि समयमे भेलाह आ अपन लेखन कार्य कएलैन्हि ताहि समयक दुःखद विरोधाभास छल नवोदित वर्ग द्वारा समाजक प्रतिनिधित्व जे एके आयाममे स्तरीकृत भए गेल छल। बेजबरुवाकेँ मानवीय त्रुटि सभक अन्वेषणमे तीव्र दृष्टि छल। 'सुरभि' एवं 'जोनवीरी' कथासंग्रहमे संगृहीत अधिकांश कथा सभ एहि तथ्यमे विशेष रूपसँ प्रभावी छल। यथा—'भोकेन्दु बरुवा' नामक कथामे एवं ओकर अनुवर्ती क्रममे विना कोनो विद्वेष एवं निन्दाकेँ कतिपय तुच्छ प्रवृत्ति सभक उपहास करैत छथि—(1) ग्राम्यताक स्पर्श पावि किछु अंग्रेजी पढ़ल-लिखल व्यक्तिमे अपन मूल नाममे परिवर्तन कए आधुनिक रीतिक नाम रखबाक प्रवृत्ति जकर प्रभाव अशिष्टे होइत छल एवं (2) पुरातन सामाजिक आधार सभसँ अपनाकेँ पृथक् रखबाक प्रवृत्ति। एहि रूपक अशिष्ट प्रवृत्ति सभ पर ब्रिटेनक अपेक्षा बंगालक निम्न मध्यवर्गक प्रभाव विशेष परिलक्षित होइत छल।

उद्देश्य एवं प्रयोजन सभ दृष्टिएँ भोकेन्द्र बरुवा दम्भी छलाह। एहि रूपक वस्तु लेल बेजबरुवा असाधारण रूपसँ संवेदनशील छलाह। एहि रूपक उपहास लेल सभसँ पैघ अस्त्र हुनक व्यंग्य भावना छल जकरा ओ निर्मम रूपसँ प्रतिनियोजन करैत छलाह जेना कि 'भोकेन्द्र बरुवा' नामक कथा-संग्रहमे। किन्तु कोनो रूपेँ एहि रूपक उपहासमे ओ ग्राम्यता नहि आबए देलैन्हि। नवीन वर्गक एहि मानसिकताकेँ दूषित कएनिहार प्रवृत्तिकेँ समाप्त करबामे बेजबरुवा कतेक सफल भेलाह से कहब कठिन अछि किन्तु एहि भ्रष्ट प्रवृत्तिकेँ ई पीड़ादायी प्रकाशमे अनबामे निस्सन्देह सफल भेलाह। एडौलफस, स्कौटक सम्बन्धमे कहलैन्हि अछि—"हुनका द्वारा रचल गेल विम्ब दुपहरियाक प्रकाशमे हमर आँखिक सोझाँ प्रकट भए जाइत अछि।" बेजबरुवा सेहो सएह कएलैन्हि, ओ अपन स्मरण शक्तिसँ प्रत्यक्ष दर्शन जकाँ देखलैन्हि। एहिमेसँ अधिकांश पात्रक परिचय हुनका शैशवावस्थामे अपन आस-पासक जीवनमे भेलैन्हि अओर ओ पात्र सभ हुनक स्मृतिमे अंकित भए चुकल छलैन्हि। अनेक वर्ष धरि कलकत्तामे रहलाक पश्चात् ओ अपन स्मृतिमे अंकित एहि पात्र सभकेँ स्वच्छ कएलैन्हि तथा ओकरा गुञ्जायमान हस्तीक रूपमे जीवन्त बना देलैन्हि।

बेजबरुवा जनिक विषयवस्तुक अथवा पात्राध्ययनक क्षेत्र सामान्य रूपसँ सीमित नहि छल, अपन पात्र सभक रचना तटस्थ तिरस्कारक स्थान पर हास्यपरक

व्यंग्यसँ करैत छलाह। निरुद्देश्य क्षेत्रक सीमाहीनता लेखककेँ क्षुद्रतासभ दिश झीकि लैत अछि अओर जेना-तेना, जाहि कारणसँ हो वेजबरुवा सेहो एहि विषयमे अपवाद नहि छलाह। ई सत्य अछि जे हुनक किछु कथा सभमे यथेष्ट गति एवं दृश्यगत प्रभाव अछि तथापि अधिकांश कथा सभमे जकरा 'जीवन्मृत' कहल जाइत अछि सएह अछि। एहि ठाम हुनक लोककथा सभमे एवं कथा सभमे एक अन्तर पबैत छी। हिनक लोककथा सभ प्राञ्जल एवं नैसर्गिक अछि तथा हिनक कथा सभ शिल्प-युक्ति पर अधिकार प्राप्त करबाक जकरामे चेष्टा अछि, जाहिमे प्रवीणता प्राप्त करबामे ओ कोनो ने कोनो कारणसँ असफल रहलाह।

विषयवस्तु जे किछु होअओ, ई कहल जा सकैत अछि जे वेजबरुवाक कथा सभ सामान्यतः सुगठित अछि तथापि जकरा 'सुन्दर रूपसँ खराजल प्रतिभा' कहल जाए से नहि अछि। अधिकांश कथा सभमे अरुचिकर व्यंग्य एवं हास्य रहलो उत्तर असभ्य प्रायः नहिएँ अछि। हँ, एतबा धरि अवश्य जे ओ जे किछु लिखलैन्हि से लेखकक रूपमे हुनक सत्यनिष्ठाकेँ पुष्ट करैत अछि। वेजबरुवा आत्मचेतन आसामवासी छलाह। एच० सी० वरुवा (1835-97) केर रचना सभसँ ज्ञात होइत अछि जे ओहो—आसामवासी छलाह किन्तु हिनकामे एक अन्तर ई अछि जे हिनका आसाम-वासी होएबाक आत्म-चेतनता नहि छलैन्हि।

यद्यपि वेजबरुवा किछु उत्तम पात्रक सृष्टि कएलैन्हि तथापि चरम विश्लेषणमे हुनक प्रतिभा रचनात्मक नहि, समीक्षात्मक छलैन्हि। देशभक्ति तथा एक प्रकारक नैतिक अनुभूति हुनक रचनाक मौलिक गुण छलैन्हि। 'भेमपुरिया मौजादर', 'जयन्ती', 'मिलारामर आत्मजीवनी', 'बापीराम', 'नंगलुचन्द्र', 'मलक गुञि-गुञि' आदि एहन कथा अछि जाहिमे चरित्र अध्ययन पर प्रमुख रूपेँ ध्यान केन्द्रित कएल गेल अछि; चरित्रक उद्घाटन लेल जाहि परिस्थिति सभक चित्रण कएल गेल अछि ताहूमे हुनका लोकनिक आचरण एवं व्यवहारक विशिष्ट गुण सभपर प्रकाश देल अछि। पाखण्ड एवं अकर्मण्यता आँग्ल-असम संकर संस्कृतिक लेल दुर्बलता एवं उत्साह सभ किछु एहन स्पष्ट विशेषता अछि जे कि अतिघनीभूत पात्र सभ द्वारा रूपायित कएल गेल अछि।

'नंगलुचन्द्र'मे विषयवस्तु जन्य तत्त्व तथ्यहीन एवं कुरुचिपूर्ण अछि, एहि रूपक अनुकृतिकेँ पुष्ट करबाक लेल अकारण एहिमे एक पात्रक उपहास कएल गेल अछि। एही रूपेँ 'जागर मण्डलर प्रेमाभिनय' यद्यपि किञ्चित् व्यंग्यपूर्ण अछि तथापि ई एक सम्मोहक प्रकारक भाण अछि। कथाक प्रमुख पात्र जागर मण्डल एवं हुनक पत्नीक वैषम्य स्पष्ट रूपेँ चित्रित कएल गेल अछि तथा एकरा उपहास-हासक विषय बनाओल गेल अछि। यद्यपि कथा अर्द्ध व्यंग्यपूर्ण स्वरमे अछि तथापि वेजबरुवाक अधिकांश कथा जकाँ एहिमे उदात्त सरलता अछि तथा युक्ति एवं अलंकरण सभसँ शुद्ध राखल गेल अछि। 'घण्टाकर्ण शर्मा' एही रूपक एक उद्देश्यहीन कथा अछि,

किन्तु 'धर्मध्वज फैसलानवीस' एहन नहि अछि। पश्चातक एहि कथा सभक पृष्ठ-भूमि विशिष्ट प्रकारक सामाजिक अछि। एहि कथा सभमे धर्मक नाम पर व्यवहृत निरर्थक सामाजिक हठधर्मिताक विरोधमे कटु उत्तेजनापूर्ण भाषण अछि। एकर अतिरिक्त 'भेमपुरिया-मौजादर', 'धोआँखोवा', 'ऐरावारी' आदि कथा सभमे तथा-कथित नवोदित वर्गक पाखण्ड एवं सामाजिक हठधर्मिताक भण्डाफोड़ कएल गेल अछि संगहि 'भोकेन्द्र बरुवाक लीला', 'मलक गुञि-गुञि', 'डम्बरुधरर संसार' आदि कथा सभमे तथाकथित ओहि वर्गक लोकक जनिक किछु नव अर्जित मूल्यक प्रति मोह यथार्थ नहि भए, विशेषतः उपहासात्मक अछि, आलोचनात्मक भण्डाफोड़ अछि।

उपदेशात्मक सामाजिक उद्देश्य रहितहुँ शिल्प सौष्ठवक दृष्टिसँ हिनक 'ऐरावारी' कथापूर्ण विवरण एवं आकृतिमे बड़ रोचक अछि। बेजबरुवाक एहि कथाक संगहि किछु अन्यो कथा सभमे स्वप्न-शिल्पविधिक प्रयोग उद्देश्यक दक्षता लेल कएल गेल अछि। कथाक सामाजिक मूल्यांकन विशेषतया ओ स्थल जाहि ठाम सारु बौ केर जीवनक अन्त होइत अछि, पीड़ाजनक अछि। एही तरहेँ 'मैडम' कथामे प्रवेशक गम्भीरता अछि। ई इतिहासक अमानवीय परिच्छेद पर सटीक प्रकाश दैत अछि। कथामे स्वप्न-शिल्पविधिक व्यवहार करितहुँ ततेक पटुताक संग वर्णन प्रस्तुत कएल गेल अछि जे स्वप्न यथासम्भव यथार्थ जकाँ प्रतीत होइत अछि। हिनक कथा 'मोर सइते मोनाइर दण्ड'क सन्दर्भ प्रतीकात्मक अछि। कथाक अन्तमे चेतन एवं अवचेतन मनक द्वन्द्व प्रतीकात्मक रीतिसँ अभिव्यक्त कएल गेल अछि। 'लोभ' नामक कथामे स्वप्न-शिल्पविधि कोमल तथ्यक अनुभूतिमे एक नव मोड़ अनैत अछि।

'नकउ', 'जलकुँवरि', 'कन्या', 'भादरी' आदि एहन कथा अछि जाहिमे ने वातावरण पात्र सभकेँ निष्प्रभ करैत अछि आ न पात्रे सभ वातावरणकेँ। दूनू तत्त्व संरचनात्मक सौन्दर्यक प्रणाली एवं प्रवेशक गाम्भीर्य, पावन मंगलसूत्रमे बन्हा गेल अछि। 'नकउ'मे वातावरणसँ उत्पन्न पात्रक वैषम्य प्रस्तुत कएल गेल अछि। दोसर दिश एही लेखकक किछु कथा सभ, यथा—'मिलारामर आत्मजीवनी', 'भोकेन्द्र बरुवार लीला', 'नंगलुचन्द्रदास' आदि विस्तृत अर्थमे निबन्ध सभ अछि, एहि सभमे ने कथावस्तुमे एकता अछि आ ने उद्देश्यमे। 'कनकलता' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधृत एक प्रीति कथा अछि, इतिहास एहन जीवन प्रस्तुत करैत अछि जे परोक्ष रूपसँ किछु सामाजिक विशेषता सभक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि।

बेजबरुवाक किछु कथा। यथा—'लाओखोला', 'मालती', 'सेउती', 'कन्या', 'रतनमुण्डा', 'भुमकरोला', 'पुत्रबान पिता' आदि नैराश्यक अन्तः स्वरसँ ओतप्रोत अछि। यद्यपि हुनक किछु कथा, यथा—'भादरी', 'नकउ', 'जयन्ती', 'चोर',

'अमालोई', 'नैपाहडिवा' आदिमे विषादपूर्ण प्रभातक अन्तःस्वर अछि तथापि सुखान्त लेल सुविख्यात अछि। एहि कथा सभमे विषादपूर्ण द्वैधक अन्त स्फूर्तिदायी नीति-परक स्वरमे होइत अछि। 'लाओखोला', 'पुत्रवान पिता', 'डाक्टर बाबुर साधु', 'पण्डित मोशाइ', 'भुरुकि वान' आदि कथा सभ बंगाली जीवन एवं समाजक प्रतिच्छवि प्रस्तुत करैत अछि। जेना कि उल्लेख कएल जा चुकल अछि बेजबरुवा विवाह द्वारा बंगाली समाजसँ सम्बद्ध छलाह।

विवाह द्वारा बंगाली समाजसँ सम्बद्ध रहबाक अतिरिक्त कलकत्ताक एक सम्पन्न व्यापारी बी० बरुवाक सम्पर्क सेहो हिनका दूनू जगत—(1) व्यापार जगत तथा (2) कलकत्ताक अभिजात्य जगत, सँ अभिज्ञ करओलक। व्यवसायसँ बेजबरुवा सम्बलपुर (उड़ीसा)मे भवननिर्माणक लकड़ीक व्यापारी छलाह, एहि कारणे स्थानीय लोक, यथा कोल एवं मुण्डा सभसँ दिन प्रतिदिन हिनक सम्पर्क बढ़ैत गेल। ई सभ अनुभूति हिनक साहित्यिक सृजन एवं विषयवस्तुक क्षेत्रक परिपार्श्वकेँ विस्तृत करबामे सहायक सिद्ध भेल। दोसर दिश हिनक किछु कथा सभ, यथा—'जेने चोर तेने तनगोन' स्पष्टतः प्रहसन रूपक अछि। जेना वर्गसाँ कहलैन्हि अछि-हास्य विसंगति सभक परिणति थीक। चरित्र एवं परिस्थितिक चित्रण द्वारा हास्य सृष्टि करबामे बेजबरुवा एक अर्थमे निपुण छलाह।

'डाक्टर बाबुर साधु', 'मैडम', 'मालती' आदि कथा सभमे अलौकिकता प्रयोग अप्रासंगिक लगैत अछि तथापि ई ओहि समयक लोकप्रचलित धर्म एवं विश्वासक अंग अछि। दोसर दिश इहो अवश्ये कहल जा सकैत अछि जे एहि कथा सभक शान्त सौन्दर्य, चमत्कार पद्धतिपरक अलौकिक तत्त्व सभक समावेशसँ बाधित होइत अछि। एतदतिरिक्त आधुनिक कथा सभ लेल कपट-प्रबन्धपूर्ण घटना एवं संयोग सभ उप-युक्त कौशल नहि अछि कारण जे जँ कलाक लेल नैसर्गिकता पूर्वापेक्षित अछि तँ आधुनिक कथाक लेल निस्सन्देह ई आवश्यक अछि। कलाक एहि मार्गमे चमत्का-रिताक कोनो स्थान नहि अछि। अवक्रमिकता जे बेजबरुवाक विशिष्टता छलैन्हि, केर अतिरिक्त हुनक कथासभमे अधिकांश ओ त्रुटि सभ छैन्हि जे कि साहित्यिक विकासक संक्रान्तिकालमे सामान्यतः उत्तराधिकारमे पबैत अछि। मुदा एकरा संगहि बिना तारतम्यक कहल जा सकैत अछि जे हुनक किछु कथासभ उच्च कोटिक अछि। 'सेउती'मे अविवेकी समाज द्वारा एक अबोध नारी पर कएल गेल अमानवीय दुर्व्यव-हारक चित्रण अछि।

मानवीय रुचि, नाटकीय द्वैध (कौतूहल) एवं चरित्र अनुशीलनक दृष्टिसँ 'वापीराम' नामक कथाक स्तर आद्यन्त अविच्छिन्न अछि। एहि कथामे चाहवाटि-काक जीवन वर्णित अछि। एहिमे एक बरमहरि (लिपिक) पदोन्नतिक लोभमे अपन युवती बहिन तिलकाकेँ चाहवाटिकाक एक युरोपनिवासी व्यवस्थापककेँ समर्पित करबाक षड्यन्त्र करैत अछि। एहि नैतिक पतनक तुलनामे भावीराम नामक

एक गृहभृत्य जकरा परिवारक अटल स्वामिभक्ति छलैक केर चरित्र विशुद्ध स्वर्ण-दीप्ति जकाँ दीपित भेलैक अछि। 'मिस्टर फिलिपसन' नामक मानव रुचिक एक दोसर कथा अछि जाहिमे चाहवाटिकाक जीवनक संगहि एंग्लो-इण्डियन व्यवस्था-पकक नैतिक पतनक चित्रण भेल अछि। तरल नीललोहित हृदय रुचिक इहो कथा बेजबरुवाक अगम्भीर शैलीसँ बाधित होइत अछि।

निष्पक्ष रूपसँ ई कहल जा सकैत अछि जे बेजबरुवाक कला अतिरञ्जनक कला छल। ओ व्यंग्य, कटूक्ति, अनुकृति एवं विद्रूपिका सभक समायोजन कएलैन्हि किन्तु ओ सभ कोनो वस्तुकेँ अतिरञ्जित रूपेँ देखबाक जे विशिष्टता हिनका छलैन्हि, ताहिसँ युक्त अछि। व्यंग्य एवं कटूक्ति हिनका लेल ने विद्वेष छलैन्हि, आ ने घृणा किंवा दुर्भाव। बेजबरुवा दू भिन्न जगतक चित्रांकन एहन भाषामे कएलैन्हि अछि जे सजीव, सुस्पष्ट एवं सचित्र अछि। ई दूनू जगत अछि—(1) आसाम-वासीक सांस्कृतिक जगत एवं (2) ब्रिटिश शासनान्तार्गत संक्रान्ति जगत जकरा लेल प्रेरणा हुनका विशेषतः बंगालसँ भेटल छलैन्हि।

जतए संकीर्ण नैतिकता एवं परम्परा बंगालमे सर्जनात्मक अभिव्यक्तिक रूप लेलक, यथा—ब्राह्म समाज आन्दोलन, ततए आसाममे नवोदित वर्ग द्वारा सन्दिग्ध मूल्यक असम्बद्ध अनुकृति संकर मानसिक ग्रन्थिकेँ विकसित कएलक। एहि स्थितिसँ बेजबरुवाकेँ मर्मान्तक पीड़ा भेलैन्हि। तथापि इहो सत्य थीक जे बेजबरुवा स्वयं जकर उपदेश दैत छलाह तकर अनुपालन स्वयं नहि करैत छलाह। ई सत्य थीक जे ओ अपन शक्ति भरि मूलतः आसामी संस्कृतिमे विदेशी संस्कृतिक प्रभावक प्रचार-प्रसारकेँ प्रतिरोध करबाक चेष्टा कएलैन्हि। ई हुनका लेल साहित्यिक संघर्ष छल जे हुनक जीवनमे प्रतिबिम्बित नहि भेल। बेजबरुवा अपन धीया-पुताक 'पापा' छलाह तथा हुनक परिवारक दैनिक क्रिया-कलापक भाषा बंगला छल। बेजबरुवाक पुत्री सुरभि जे बड़ भव्य बालिका छल, आ जे पाँच वर्षक अवस्थामे दिवंगता भए गेलि अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा मात्र जनैत छलि। हुनका प्रति बिना कोनो निरादरक भाव व्यक्त कएने ई कहल जा सकैत अछि जे बेजबरुवा मध्यवर्गीय संस्कृतिक अद्भुत प्रतिनिधि छलाह।

अन्य साहित्यिक सर्जनात्मक विधा सभमे सफलता प्राप्त करितहुँ बेजबरुवा उपन्यासक क्षेत्रमे कोनो महत्त्वपूर्ण सफलता नहि प्राप्त कएलैन्हि। ने रजनीकान्त बरदोलोइक (1867-1939) 'दण्डुवाद्रोह' (1909) केर कथावस्तु पर आधृत बेजबरुवाक एकमात्र उपन्यास 'पदुम कुँवरि' (1905)मे कोनो सम्भावना बुझाइत अछि। 18म शताब्दीक उत्तरार्धसँ सम्बन्धित एहि उपन्यासक कथा अछि, सरल, कल्पना-प्रधान एहि कथाक घटनास्थल गौहाटी तथा पड़ोसी भूटानक पर्वत प्रदेश अछि। 'पदुम कुँवरि' कथाक धूरी ऐतिहासिक तथ्य अछि, अर्थात् बड़फुकन एवं हरदत्त नामक दू सम्भ्रान्त परिवारक सामन्ती कलह अछि। मुदा जेना-तेना एहि

उपन्यासमे रूपायित इतिहास, कथाकेँ अस्पष्ट परिप्रेक्ष्य एवं स्थूल पार्श्वचित्र प्रदान करैत अछि। एहि उपन्यासमे एक दिश पदुम कुँवरि एवं सूर्यकुमारक भावुक उपाख्यानकेँ तथा दोसर दिश सूर्यकुमारक प्रति फूलक भावुक आकर्षणकेँ प्रमुखता देल गेल अछि। एक व्यक्ति तथा भावुकतासँ भरल भावप्रवण दू युवती, जँ लेखक एहि कथावस्तुकेँ ढील-ढाल रीतिसँ परिचालित नहि कएने रहितथि तँ एक शाश्वत त्रिकोण उपस्थित कए सकैत छल। ई एक प्रकारक पूर्व आरोपित अतिनाटकीय पद्धतिक निर्वहन थीक जे एक प्रकारक अतिभावुकतासँ ग्रसित होएबासँ स्थितिकेँ उवारि लैत अछि।

पदुम कुँवरि एवं सूर्यकुमारक जीनवक असाधारण अन्त शेक्सपियरक 'रोमियो एण्ड जुलिएट' केर उतमोत्तम परम्परामे चित्रित कएल गेल अछि। भ्रष्टमूलक भावुकताकेँ लए पदुम कुँवरि एक दुर्बल अनुकरण अछि। उत्कर्षपूर्ण आवेग सभमे शेक्सपियरक अतुकान्त छन्द जे सफलता प्राप्त कए सकल अछि, वेजवरुवाक निस्पन्द गद्य ओकरा प्राप्त करवामे असफल रहल। उपन्यासक अन्त अतिनाटकीय अछि। दू प्रेमी पदुम कुँवरि एवं राजकुमारक साराक निकट फूलक आत्मदाह सर्वाधिक अतिनाटकीय अंश एहि कथामे अछि। एहि रूपक निष्कर्ष अतिभावुकताजन्य सत्य सेहो नहि भए सकैत अछि।

वेजवरुवा एकर कथामे किछु अऐतिहासिक पात्र सभ, यथा—फूल, कुर्मा एवं कुर्मीकेँ उपस्थिति एवं चित्रित कएलैन्हि अछि। ई सभ हिनक मौलिक सृजन अछि। ई वात नहि अछि जे ई पात्रे सभ कथाक विकासमे सहायता कएलक अछि। पात्र-सभ कठपुतली सभ जकाँ अछि, ओ सभ, स्थिति जेहन परिस्थितिक रचना करैत अछि तथा जन्म दैत अछि तकर ओ शिकार होइत अछि। कथाक आरम्भ सामान्य प्रवाहयुक्त अछि, एकर अन्त आकस्मिक अछि तथा साहित्यिक रूपसँ पूर्वकल्पित निष्कर्षक प्रति प्रपञ्च अछि। शिल्प-विधिमे दुर्बल रहितहुँ 'पदुम कुँवरि' वेसीसँ वेसी विचित्र पात्र सभक एक संग्रह अछि। शेक्सपियर तथा थोमस हार्डीक पात्र जकाँ ई पात्र सभ नियतिक हाथक कनिञा-पुतरा नहि भए डिकेन्सक पात्र सभ जकाँ अपरिपक्व घटना एवं परिस्थितिक खेलौना भेल अछि। निम्नाङ्कित उद्धरण जकाँ विभिन्न परिच्छेदक शीर्ष पर अङ्कित उद्धरण एहि उपन्यासमे लेखकक ऐतिहासिक कथावस्तुक बोधमे भावुक स्वभावक छवि प्रस्तुत करैत अछि। संक्षेपमे ई कहल जा सकैत अछि जे कथाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भावुक उच्छ्वासमे झँपा जाइत अछि।

In vain he weeps, in vain he sighs,
her cheek is cold as ashes;

Nor love's own kiss shall wake these eyes
To lift their silken lashes.

T. CAMPBELL

कथा कहबाक उत्साह प्रायः ककरो सफल उपन्यासकार बनबैत अछि। उपन्यासक लेल बीछल कथानकक बोध अओर तखन ओहि बोधकेँ शिल्प-विधिताक आदर्शक साँचमे रूपायित करबाक लेल ई आवश्यक अछि जे लेखककेँ गम्भीर अनुभूति हो अओर भूतेक नहि, वर्तमानक गम्भीरतर अन्तः प्रवाहक संग तादात्म्य स्थापित करबाक सामर्थ्य हो। एहि गुण सभक अभावमे उपन्यास लेखन सन साहित्यिक उद्योग एक भभटपनटा रहि जाइत अछि। बेजबरुवाक संग सेहो इएह भेल अछि। ई उपन्यास 'पदुम कुँवरि' ऐतिहासिक कलहमात्रे नहि प्रस्तुत करैत अछि जकरा लेल हमरा सभकेँ रजनी बड़दोलोइ केर 'मनोमती' (1900) दिश मुड़ए पड़ैत अछि, अपितु तीन युवा, अपरिपक्व, प्रणयत्रस्त आत्मा सभक कल्पनापूर्ण वा भावुक (रोमाण्टिक) कलह सेहो भेटैत अछि जकर प्रक्रियामे इतिहासे नहि उपन्यासक लेल रूपरेखा-जन्य आकृतिक सिद्धान्त सेहो साहित्यिक सृजनक उपेक्षित गर्तमे पड़ि जाइत अछि।

कविक रूपमे

मानव प्रज्ञाक देशी प्रस्फुटन तखने सम्भव अछि जखन पुरातन एवं परम्परागत बन्धन विमुक्त कए देल जाइत अछि तथा ओकर स्थान कोनो नव बन्धन अथवा परिपाटी नहि लए लैत अछि। जाहि प्रकारेँ जर्मन साहित्यमे एहन प्रस्फुटन गेटेक युगमे भेटैत अछि ताही प्रकारेँ लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा एवं सी० के० अग्रवाल सन पथप्रदर्शक द्वारा प्रवर्तित 'जोनाकी'क (1889) युग असमी साहित्यमे स्वतन्त्रता एवं परिपुटष्टा प्रदर्शित करैत अछि। बेजबरुवा तथा अग्रवाल अपन-अपन इन्द्रियग्राह्यता, रंग-सुख, भौतिक सौन्दर्य, प्रीति एवं काव्यक द्वारा ओएह परम्परा सभ प्रस्तुत कएलैन्हि अछि जे कि कल्पना-प्रधान कवि सभ सामान्यतः अनुसरण करैत छथि।

बेजबरुवा बहुतो प्रणय-गीत, प्रकृति-काव्य, वीरगाथा-काव्य तथा देशभक्तिपूर्ण गीत सभ रचलैन्हि। बेजबरुवाक कल्पना-प्रधान प्रज्ञाक अनल 'धनबरु आरु रतनि' सन छन्दोबद्ध प्रेमाख्यानमे जीवन्त ज्वाला वनि लहरि उठल अछि। प्रेयसीक शारीरिक भव्यतासँ प्रमुखतः सम्बन्धित हिनकर कविता 'प्रियतमार सौन्दर्य्य' असम साहित्यक उत्तमोत्तम कल्पनाप्रसूत प्रणय-गीत अछि। कविताक सौन्दर्य ओहि बिम्ब-परम्परामे निहित अछि जकर द्वारा प्रेयसीक चारुता ध्वनित होइत अछि।

नहि देखल अछि आइ धरि मोती केर हम हार।
यद्यपि सुनल अनेक सँ संस्तुति वारम्बार॥
प्रेयसीक आह्वान कए देल कनेक हँसि ताहि।
झहरल मोतीमाल धरि सस्मित आनन जाहि॥

यद्यपि ई इन्द्रिय-ग्राह्य प्रणय-काव्य अछि तथापि एहिमे प्रणयक चित्रण ऐन्द्रिक तत्त्व मात्रक रूपमे नहि अपितु आत्माक दर्शनक रूपमे सेहो कएल गेल अछि। वस्तुतः ई सौन्दर्यक पार्थिव मोहकता जतए 'कम्पित काम शयन' रहैत अछि, मात्रसँ सम्बन्धित नहि अछि, अपितु वाह्य रूपक नैसर्गिक उदासीनताक उपरान्तो शाश्वत प्रीति अछि।

चाही प्रणयक हमरा ओ मदिरा,
जे शाश्वत सम्मोहनदायक हो॥

बेजबरुवाक लेल प्रकृति प्रीति एवं सौन्दर्यक भण्डार छल, कवि एक एहन अनुग्रह-युक्त आत्मा अछि जकरा हाथमे एहि भण्डारकेँ उन्मुक्त करबाक हेतु स्वर्णिम कुंजी देल अछि। यद्यपि मनुष्यक जीवन मृत्युक सीमामे बान्हल अछि तथापि प्रीति स्थायी अछि। बेजबरुवाक एवं टैगोरक मतेँ मृत्युक कीचो मे प्रीति निरन्तर बनल रहैत अछि।

प्रीति होइछ विजेता,
ओ मृत्यु ओकर दासी।

बेजबरुवाक प्रीति-भावनामे ओएह अनधीत सौन्दर्य अछि जे कि वृक्ष अथवा पुष्पमे पाओल जाइत अछि। ओ सौन्दर्य सरलताक तीव्र दीप्ति सँ आलोकित रहैत अछि जे कविक अपन होइत अछि। चाहे जे हो, बेजबरुवाक कल्पनामे वस्तुतः सरल लोक धुन तथा वीरगाथाक गीत सभक तत्त्व भरल अछि, विशेष रूपसँ हिनका वीरगाथा गीतकारक मस्तिष्क एवं ध्वनि छलैन्हि। अबोध व्यक्तिक आवेगपूर्ण जीवनक अभिव्यक्ति हिनक सर्वाधिक प्रिय वस्तु छलैन्हि। बेजबरुवा एक आनन्दक कवि छलाह, एक परितृप्तिक कवि छलाह। हुनक आनन्द एक सरल कृषकक आनन्द छल। हुनक सुरुचिपूर्ण गीत, यथा—'मालति' एकर प्रमाण अछि जे ओ महान् सौकर्य एवं आनंदक संग वीरगाथा-काव्यक दोलायमान छन्दमे रचना कए सकैत छलाह।

कविक रूप मे बेजबरुवा दू जगतक कवि छलाह—1. चेतनकलाक जगत तथा 2. नैसर्गिक लोक-काव्यक जगत। स्वर एवं भावमे हिनक 'मालति' सरल लोक-गीत जकाँ संगीत प्रस्तुत करैत अछि। बेजबरुवाक काव्यक दोसर उल्लेखनीय विशेषता अछि अस्वस्थ चिन्तनक अभाव। हुनक कवितामे कविक आत्मा, कविक मनःस्थिति, कविक मानसिक व्यथा आदिक वैयक्तिक कल्पना-प्रधान कविक रचनामे भेटैत अछि। वैयक्तिक स्मृति एवं पीड़ा सभक अभाव बेजबरुवाक कविताक आवश्यक आकर्षण अछि।

जेना बेजबरुवाक काव्य-रचना सभसँ प्रतीत होइत अछि हुनक प्रकृति-चित्रण एक एहन व्यक्तिक कृति अछि जे प्राकृतिक दृश्यक भावक चित्रणमे वरदान पओने अछि। हिनक रचना भावपूर्ण अछि। आदिम कालक शिशुवत् आत्माक भावसँ युक्त अछि। प्रकृतिक मूर्तिपूजाकेँ कवि स्वीकार कए नेने छलाह। तथा समस्त वादसँ मुक्त अध्यात्मिकताक संग ओ सामञ्जस्य कए नेने छलाह। आस्थावान् वैष्णवक भावसँ ई शाश्वत अध्यात्मिक सत्यकेँ प्रकृतिक सामान्यतम वस्तुमे अन्वेषण कए नेने छलाह।

दुर्वादल यद्यपि पएरक तर थकुचल अछि
ईश्वरत्व गन्ध तदपि साँस साँसमे पहुँचल अछि।

बेजबरुवाक प्रकृति-चित्र आनन्दक निविड़ उल्लाससँ परिपूर्ण अछि तथा चिन्तासँ

पूर्णमुक्त अछि। हुनक सहज एवं सहज-प्रसन्न शैली मानवक प्रीतिकर रूपक छवि अंकन करैत।

शंकरदेव एवं माधवदेव सन वैष्णव सन्त दर्शनसँ सम्पोषित वेजबरुवाकेँ एकर प्रतीति भेलैन्हि जे रचनाक माध्यमसँ गहन अध्यात्मिक उद्देश्य प्राप्त भए सकैत अछि। अध्यात्मिक भावनासँ ओतप्रोत हुनक कविता सभ अछि—'ईश्वर आरु भक्त' 'बहिन', 'महाप्रयाणर यात्री' आदि। 'प्राकृत जीवन', 'सुखबोध', 'मान अपमान' आदि सभ कविता सभमे रचयिता महोदय प्राञ्जल रीतिसँ नैतिक सूक्ति सभकेँ अभिव्यक्ति देलैन्हि अछि। तथापि वेजबरुवा, नलिनी देवी (जन्म 1938) तथा ए० जी० राय चौधुरी (1885-1967) जकाँ रहस्यवादी कहियो नहि छलाह।

कविता नामक अपन प्रगीतमे वेजबरुवा काव्यक परिभाषा एना करैत छथि—

अवसादक गान, एक कल्पैत तान
भग्न हृदयक विलाप
नोर भरल पिपनी
आ चुभैत कछमछी।

तथापि वेजबरुवा रचना सभमे कल्पना भरल आदर्शवाद नहि प्रतिविम्बित भेल अछि। ओ एहि विचारकेँ स्वीकार नहि कएलैन्हि जे ई विश्व एक माया अछि, मृग मरीचिकाक परिदृश्य अछि। ओ जीवनकेँ सत्य मानलैन्हि।

कहथु आन जे किछु कहता से,
ई जीवन कथमपि नहि सपना छी।

वेजबरुवा जीवनकेँ दार्शनिक तटस्थताक भावसँ स्वीकार कएने छलाह, हुनक जीवन-दर्शन ने अवसादपूर्ण छल आने निराशापूर्ण, आने लक्ष्मीधर शर्मा जकाँ मृत्युकेँ विषयी आनन्दसँ आभूषित कएने छलाह। यद्यपि ओ मुख्यतः पश्चिमक साहित्यिक मतबाद सभसँ प्रेरणा ग्रहण कएने छलाह तथापि ओ एहि सभमे निमग्न नहि भए गेल छलाह। "असमीज लिटरेचर"मे कहल गेल अछि—'एक अन्य बात सेहो हमरा स्मरण रखबाक थीक—यद्यपि हमर साहित्य ब्रिटिश शासनमे अंग्रेजी साहित्यसँ पर्याप्त प्रभावित भेल छल एवं प्रेरणा ग्रहण कएने छल तथापि विदेशी प्रभावक क्षुद्र जलस्रोत शीघ्रे ओहि नदीमे तिरोहित भए गेल जे कि विस्तृत निर्झरसँ प्रवाहित भेल छल।" वेजबरुवा अपन कलामे विषय-वस्तुएमे नहि अपितु शिल्प-विधानमे सेहो अपन पृथक् व्यक्तित्व सुरक्षित रखने छलाह।

वीर-कथा वेजबरुवाक विशिष्टता अछि। जँ 'फूलकुंवर', 'मणिकुँवर', 'बड़-फुकनेर गीत' सन लोकप्रिय वीरकथाकेँ तेजियो देल जाए तथापि हिनक भावुक प्रेरणाक अग्नि 'वनगीत' तथा 'विहूगीत' सन कृषक-गीतक प्रचुर भण्डारसँ प्रज्वलित भेल छल। हुनकामे पश्चिम केर कल्पना-प्रवण कवि सभक जे ग्राम-जीवनक वीर-कथाक परम्पराक सृजन एवं सम्प्रेषण कएने छलाह आदर्शक सेहो

योगदान छल। परम्परागत लोक-गीत सभक तुलनामे ई नव साहित्यिक रचना सभ कलात्मक बूझल जाइत अछि। साहित्यिक व्यक्तिक रूपमे बेजबरुवा जनिक स्वभाव नागरिक परम्परा सभक अपेक्षा ग्रामीण परम्परा सभसँ बेसी मेल खाइत छल, अपनाकेँ सहजहिँ ग्राम्य-गीत सभक कल्पनापूर्ण वातावरणमे समाविष्ट कए देलैन्हि। बेजबरुवा बहुधा लोक-गीत सभक टुकड़ा एवं धुनकेँ संग्रह कए अपन मस्तिष्कक खलमे राखि लैत छलाह आ ओकरा अपन वीर-गीतक रचनामे काव्यत्मक वस्तु जकाँ उपयोग करैत छलाह।

हम पर्वत ओ पहाड़ी सभ पर चढ़लहुँ
किन्तु बल्लरि पर चढ़ब बड़ कठिन अछि
हम सनकल हाथीकेँ सम्मत कएलहुँ
किन्तु अहाँक प्रीतिकेँ वशीभूत करब बड़ कठिन अछि।

उदाहरणार्थ ई लोक-धुन बेजबरुवाक सुन्दर वीर-गीत 'धनवर अरु रतनि' नामक रचनामे प्रत्यक्ष प्रस्फुटित भेल अछि। एहि रूपेँ ई रचना आसामवासीक निजी लोक गीत परम्परासँ अपनाकेँ सहयोगी बनविते अछि संगहि कल्पनापूर्ण समाजक वातावरणक सृष्टि सेहो करैत अछि।

गद्य होअए अथवा पद्य अपन शब्द-चयन एवं विम्ब विधान मे बेजबरुवा विशिष्ट रूपमे असमिया मानस केर प्रतिनिधित्व करैत छथि। 'धनवर ओरु रतनि' नामक रचना मे प्रयुक्त सखिनी, जखिनी आदि शब्द एकर दृष्टान्त अछि। लोक-धुनिक उत्तमोत्तम परम्परामे रचित एहि कृतिमे नदीक बालुतट पर बैसल एवं परस्पर संगतिक सुखक आनन्दानुभूति लैत चिड़िया सभक विम्ब-विधान विपरीत लक्षणा सँ प्रेमीक एकाकीपनक बोध करबैत अछि। मौलिक संवेग एवं सरल सांगीतिक आरोह अवरोह सँ युक्त एकर कथा नदीक पृष्ठपटक दृश्य केँ उद्घाटित करैत अछि। अभागल प्रेमी धनबर दिखउ तटक मीरी तरुण अछि। एहि नदी एवं परिपार्श्वक वातावरण विहूगीत सभ एवं वनगीत सभक भावुक सम्पर्कसँ ओतप्रोत अछि। प्रीतिक टीससँ व्यथित रतनि नामक कुमारि निश्छल मीरी आवादी लेल विख्यात धनसिरी तटक अछि। प्रेमी-प्रेमिकाक दू गोट स्वगत कथन द्वारा कथाक प्रस्फुटन भेल अछि। एहि दूनू स्वगत कथनमे धनबरक पाश्चात्ताप विशेष सारगर्भित अछि। एहिमे आरम्भसँ अन्त धरि शोक गीतक मार्मिकता अछि। कविता अपन प्रवाहक प्रत्येक पदमे तीक्ष्ण नाटकीय शक्ति सँ सुगन्धित एवं प्रदीप्त छन्द-सौन्दर्यसँ ओतप्रोत अछि। दोसर स्वगत कथन 'रतनिर विलाप' हृदय विमुग्धकारी कोइलीक कलितकाकली सन मर्मस्पर्शी अछि।

रतनि शाश्वत नारीक प्रतिरूप अछि जे सहजात प्रकारक नारी-भावनाक निकट अछि। धनबर चिन्तासँ मलिनवदन युवक अछि जकरा प्रीतिक टीस जीवनक वेदना सँ मुक्ति, मृत्युक द्वारसँ प्राप्त करैत अछि। ब्रह्मपुत्र जे लुइत नामसँ लोकविश्रुत

अछि, केर आह्लादमयी वेदनाक संग, शीतल आलिंगन धनवर मृत्यु द्वारा प्राप्त करैत अछि।

हे पिता ! लुइत
हमरा अहाँ शरण दी
अपना कोरमे स्थान दी
हम अपन रतनि कें हेरा आएल छी
हम अपन सर्वस्वान्त कए नेने छी ।।

'धनवर आरु रतनि' एक एहन भाव-प्रवण पवित्र प्रेमाख्यान अछि जाहि मे आदर्श रूपमे प्रस्तुत ग्राम्य दृश्यपटमे रंग ओ काव्यात्मकता प्रदान कएल गेल अछि। दोसर दिश 'मालती' एक एहन मृदु प्रेम-गीत अछि जाहिमे अनाघ्रात सौन्दर्यक छवि प्रस्तुत भेल अछि। वेजबरुवाक संगीत अन्तरंग, आत्मीय एवं मधुर तथा शान्त चरित्रक नैतिक सौष्ठवसं परिपूर्ण अछि।

वेजबरुवा तत्त्वतः राष्ट्र प्रेमक कवि छथि। असमीक राष्ट्रगीत 'ओ मोर आपनर देश' केर रचयिता छथि। रौवर्ट ब्राउनिंग केर रचना 'होम थोट्स फ्रोम एब्रोड' जकाँ ई छोट कविता एक स्वतः निर्वासित लोकक अपन मातृभूमिक स्वप्न संसार अछि। ओहिमे एहन दृश्यक कोमलता भरल अछि जे अपन मातृभूमिक अनन्त विविध कमनीयता कें स्वप्न मे साकार करैत अछि।

हे हमर भूमि
हे हमर प्रिय भूमि
हे मधुर स्रोत सभक भूमि
फल-फूलक सौरभपूर्ण भूमि
मनमोहक एहन हमर भूमि।''

देशक मातृवत कल्पना मूलतः भारतीय अछि अओर वंकिमचन्द्रक गीत 'वन्दे मातरम्' मे जे भाव प्रकट भेल अछि। वेजबरुवाक 'ओ मोर आपनर देश'मे सेहो सएह भाव निहित अछि।

वेजबरुवाक राष्ट्र प्रेम सम्बन्धी किछु गीत अत्यन्त सम्मोहक रीतिएँ ओजस्वी अछि। 'वीण आरु वैरागी' नामक चारण-गीत एक एहन गीत अछि जाहिमे प्रतीक राष्ट्र प्रेमक गम्भीर आवेग सँ ओतप्रोत अछि। एहि कवितामे ऐतिहासिक अतीतक लोकप्रिय प्रतीकात्मकता अपन सौन्दर्य एवं गरिमामे स्पष्ट एवं विशद् अछि। ककरो ई नहि बिसरबाक थीक जे चारणक ई स्वर बिसरल अतीतक प्रति आवेगपूर्ण प्रतिक्रिया सभसँ प्रकम्पित आजुक स्वर थीक। ई कहब कोनो अत्युक्ति नहि होएत जे एहि कविता मे पुनर्जाग्रत असमक भावना व्यक्त भेल अछि। वायरन 'आइल्स ऑफ ग्रीस' जकाँ अतीतक किछु महत्त्वपूर्ण हस्ती कें जकर लेखा-जोखा नाना बिम्ब-विधान द्वारा भेल अछि, गणना कएल गेल अछि।

शब्दाडम्वर सँ मुक्त वेजबरुवाक काव्य-कौशल, हुनक गद्य सँ भिन्न, संयम एवं शब्दक अपूर्व मितव्ययताक लेल ख्यात अछि। कविक कलाक एहि पक्षक सटीक उदाहरण हिनक 'असम संगीत अछि।

हम निर्धन नहि छी, हम कहियो निर्धन नहि भए सकै छी,
हमरा सभ किछु छल, हमरा सभ किछु अछि।
हम ओकर चिन्तन नहि करै छी, वा ओकरा बुझवाक चेष्टा नहि करै छी।

पात्रक अथवा अतीतक क्रिया-कलापक उपस्थापनक कारणे 'असम-संगीत' मनोहर नहि अछि अपितु रूपक तेज एवं ऐतिहासिक कल्पनाक प्रभा काव्य मे होए-वाक कारणे मोहक अछि। साधारण शब्दाश्रित वेजवरुवाक काव्यक भाषा लोक-प्रिय एवं कलात्मक भाव सँ परिपूर्ण दूनू अछि।

संक्षेपमे हमरा ई नहि विसरवाक थीक जे वेजबरुवाक कृति कें अपन निजी सीमा अछि। हुनक आधा दर्जन कविता कें छोड़ि, हुनक अन्य कविता सभसँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनक काव्यात्मक उपलब्धि अस्थिर अछि। ई अस्थिरता वौद्धिक अल्पताक परिणाम निश्चिते नहि अछि। वहुधा परिपूर्णताक परिणाम सेहो अस्थि-रता होइत अछि। वेजवरुवाक रचना मे एहने अस्थिरता देखवा मे अवैत अछि। यद्यपि मूलतः ओ अंग्रेजी साहित्यसँ प्रेरित भेल छलाह तथापि विदेशी भूमिक कोइ-लीक स्वरक अनुकरण सेहो नहि कएलैन्हि अछि। एहि रूपक वैशिष्ट्य ओ अपन सभ रचना मे दक्ष कला-कौशलक संग अक्षुण्ण रखवाक चेष्टा कएलैन्हि अछि।

कीट्स कहने छथि—'गाछमे पात जेना नैसर्गिक रूपसँ प्रस्फुटित होइत अछि तेना यदि कविता उद्‌भूत नहि होइत अछि, तँ कविता नहि रचल जाए सएह नीक'। यथार्थ मे सन्देहास्पद अछि जे वेजबरुवाक काव्य जेना गाछ मे पात नैसर्गिक रूपसँ आविर्भूत होइत अछि', तेना उद्‌भूत भेल अछि। इएह कारण थीक जे हिनक काव्य बहुधा असम्वद्ध रीतिक भए गेल अछि आ एक अन्य सन्दर्भ मे प्रयुक्त आल्डुअस हक्सलेक शब्द मे 'लावण्यहीन एवं मन्दाग्निग्रस्त' प्रतीत होइत अछि। वेजबरुवाक कविता-संग्रह 'कदमकली 1913 मे प्रकाशित भेल छल।

उपसंहार

सामान्यतया कहि सकैत छी जे जीवन बहुधा विचित्र एवं अपव्ययी होइत अछि। वेजवरुवाक मूल्यांकनक समय ई विषय विसरबाक नहि थीक। उच्च उदार प्रकृति, साहसपूर्ण भावना एवं 'आधारभूत नीक बुद्धि' ई सभ गुण भव्य रूपसँ हिनक रचनामे उद्दीप्त होइत अछि। डिकेन्स जकाँ वेजवरुवाक दर्शन, श्रवण, मनन, अंग-सञ्चालन एवं लेखन सभ वस्तु द्रुत छल। दोसर शब्दमे ई कहल जा सकैत अछि जे वेजबरुवा कार्लाइल जकाँ सर्वग्रासी नेत्र एवं चित्रदक्ष हाथ तँ प्राप्त कए नेने छलाह किन्तु जेना-तेना ओ हुनक 'रूपान्तरकारी स्पर्श' नहि प्राप्त कए सकल छलाह। अपन सभ गुण एवं त्रुटिसँ युक्त रहितहुँ वेजवरुवा स्पष्टतः एक सिद्धहस्त एवं माजल लेखक छलाह जनिक तत्त्वावधानमे भापा गौरव शिखर पर आसीन भेल। मोटामोटी, हुनक साहित्यिक जीवन 'जोनाकी'(1889) नामक पत्रिका जकरा हमर साहित्यिक पुनर्जागरणक दिशासूचक कहल जा सकैत अछि, सँ आरम्भ भेल। वेजबरुवाक साहित्यिक जीवन प्रायः आधा शताव्दी धरि प्रसृत रहल। ओ 'वह्नि', 'उषा', 'आवाहन' आदि पत्र-पत्रिकाक लेल नियमित रूपसँ लिखैत छलाह।

जाहि युगमे वेजबरुवा जीवैत छलाह एवं रचना करैत छलाह से युग असमी समाजमे स्वर एवं सामञ्जस्यक अभावक युग छल। व्रिटिश शासनक पूर्ववर्त्ती वर्ष सभ घटना सभक संगहि आसाममे ओकर प्रारम्भिक संघटनक वर्ष सभक घटना सभ, हमर सामाजिक तानी-भरनीमे वहुतो रुक्ख विभेद सभकेँ एवं परस्पर विरोध सभकेँ जन्म दए देने छल। निश्चित रूपसँ कहि सकैत छी जे असमी जीवनक विविध चित-वृत्ति एवं भावभंगिमासँ वेजवरुवा निविड़ रूपसँ सम्वद्ध छलाह जकरा ओ अपन रचनामे हल्लुक एवं गाढ़तर छविमे प्रतिविम्वित कएलैन्हि अछि। वेजवरुवाक प्रतिभा व्याख्यात्मक छल, तथापि ई कहल जा सकैत अछि जे हुनका वस्तु सभकेँ एहन कोण सभसँ देखबाक अद्भुत क्षमता छल जे आकस्मिक दृष्टिसँ देखलासँ असन्तुलित प्रतीत होइत अछि। संक्षेपमे कहि सकैत छी जे वेजबरुवाकेँ सतर्क नेत्र छलैन्हि। वेजबरुवा जकाँ असमी जीवनक विचित्रता सभक उपहास केओ आन नहि कए सकलाह अछि, अओर तथापि ओ समाजकेँ सह्य भेलाह। एतवे नहि, हुनक

विपटइसँ युक्त रचना सेहो सह्य भेल कारण पाठक जनैत छलाह जे वेजवरुवा जे किछु कहथु हुनक असमी जनताक प्रति स्नेह आधारभूत अछि।

जेना सामान्य धारणा प्रचलित अछि ई मानव भ्रम होएत जे लक्ष्मीनाथ वेजवरुवा अट्टहासक अतिरिक्त अओर किछु नहि छलाह। वेजवरुवाक व्यक्तित्वकेँ एहि रूपेँ कोनो एक आयामक परिधिमे वान्हिकेँ नहि देखल जा सकैत अछि। विक्टर ह्यूगो जकाँ साधिकार आधुनिक असमी साहित्यक दृश्यपटल पर प्रायः अर्द्धशती धरि शासन कएनिहार एहि व्यक्तिक समग्र व्यक्तित्व गम्भीर प्रेरणादायक एवं लक्ष्यक निश्चिय गम्भीरतासँ चिन्हित छल।

वेजवरुवा अपना समयक छलाह, हुनक समय जेना सभ संक्रान्तिकाल सामान्यतया होइत अछि, भ्रान्तिक समय छल। ब्रिटिश शासनक संघातक अधीन नव सांस्कृतिक दृष्टिकोण सभ समाविष्ट भए रहल छल। निस्सन्देह ई विवेकपूर्ण छल, किन्तु विवेकपूर्ण वनएवाक प्रक्रियामे नव समस्या सभ उत्पन्न भेल। समाज अपन प्राचीन मान्यता सभसँ धीरे-धीरे दृढ़ताक संग हँटल जाइत छल एवं एहि प्रक्रियामे ई एक एहन अनमेल समिश्रणमे पहुँच गेल छल जे ने एतहि छल आने ओतहि। ई वात नहि छल जे वेजवरुवामे सृजनात्मक शक्ति नहि छल। आसामक कोनो लेखक, असमी जीवनक विविध भंगिमा सभकेँ वुझवा एवं चकमकाइत गद्यमे अभिव्यक्ति देवामे हिनका सन नहि भेलाह।

लेखकक रूपमे वेजवरुवाक उपकरण दू रूपक छल—(1) पर्य्यवेक्षण एवं तद्जन्य अनुभव जे ओ अपन पूर्व आसामक वासस्थलक परिसरमे विशेषतः शिवसागर एवं उत्तरी लखीमपुरमे पुरुष एवं स्त्रीगण, रीति एवं सामाजिक दृष्टिकोण सभ, धारणा एवं विनोद सभकेँ देखि प्राप्त कएने छलाह, (2) हुनक मानवीय एवं वौद्धिक निजी अनुभव सभ जकरा ओ घरसँ वाहर वहुत दूर विशेषतः कलकत्ता एवं संवलपुरमे विश्लेषण एवं रूपान्तरित कएने छलाह। घरसँ वाहर रहवाक ई दूरी विशुद्ध तटस्थ एवं निरपेक्ष रूपमे वस्तु सभकेँ आकलन करवाक भावक स्वतन्त्रता प्रदान कएलक। ओ अपन स्मृतिक खोह सभमे जतवा देखलैन्हि एवं वुझलैन्हि तकर पूर्ण एवं प्रिय अनुभव सुरक्षित रखलैन्हि एवं अपन पश्चातवर्ती जीवनमे व्यंग्य एवं विनोद, गम्भीरता एवं परिहास केर छवि सभमे अभिव्यक्ति कएलैन्हि। वस्तु सभकेँ सत्यताक संग देखवाक आवेश एवं एकर वहन कएनिहार पारदर्शी शैली, निरीक्षणप्रिय मानवीयता एवं दृष्टिकोणक विस्तार ई सभ वस्तु वेजवरुवाक साहित्यिक कृतिक विलक्षण सौन्दर्यकेँ सृष्टि करैत अछि।

ग्रन्थ-सूची

लक्ष्मीनाथ वेजवरुवा रचित ग्रन्थ सभ (1868-1938)

समाज अध्ययन

सभापतिर अभिभाषण, वह्निप्रकाश कार्यालय, कलकत्ता, 1945 ।
गौहाटीमे सम्पन्न असम साहित्य सभाक सातम अधिवेशनमे देलगेल अध्यक्षीय अभिभाषण ।

काव्य

कदमकली, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1951 ।

नाटक

वेलिमार, द्वितीय संस्करण, वह्नि पब्लिशिग हाउस, कलकत्ता। चन्द्रकान्त सिंहक राजत्व कालसँ सम्बद्ध असम बुरंजी पर आधृत ।
चक्रध्वज सिंह, प्रथम संस्करण, 1915, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1950, पाँच अंकक ऐतिहासिक नाटक ।
चिकरपति-निकरपति, साहित्य प्रकाश, गौहाटी। जयमति कुँवरि, टिम्बर एण्ड स्टोर एजेन्सी, हावड़ा, 1915।
लितिकाइ, साहित्य प्रकाश, गौहाटी। प्रहसन। पाचनि, साहित्य प्रकाश, गौहाटी ।

कथासाहित्य

जुनुका, लेखक द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण 1910। द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1933 ।
बुञिआइर साधु, तृतीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1950 ।
जोनबीरी, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1949 ।
सुरभि, लेखक द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण, 1909 ।

द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 196 ।
ककादेउता आरु नातिलौरा, तृतीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1951 । बालोपयोगी लोककथा सभ ।
पदुम-कुँवरि, साहित्य प्रकाश, गौहाटी । ऐतिहासिक उपन्यास ।
साधु-कथार कूकि, तृतीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1948 ।

निबन्ध

बाखर, पी० सी० दास, कलकत्ता, 1915 ।
तत्त्वकथा, असम साहित्य सभा, गौहाटी, 1963 ।
भागवतकथा, लेखक द्वारा प्रकाशित, 1915 ।

हास्य एवं व्यंग्य

बरबरुवार भावर बुड़बुड़ानी, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1951 । भूमिका लेखक—विरिञ्चि कुमार बरुवा एवं सत्येन्द्रनाथ शर्मा ।
कामत कृतित्व लभिवर संकेत, द्वितीय संस्करण, असम बंगाल स्टोर्स, कलकत्ता, 1916 ।
कृपाबर बरुवार काकाटार टोपला, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश, गौहाटी ।
बरुवरुवार बुलनी, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1969 ।
कृपाबर बरुवार ओवतनी, लेखक द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण, 1909 । द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाश गौहाटी, 1960 ।

इतिहास एवं जीवनी

डाँगरिया दीनानाथ बेजबरुवार संक्षिप्त जीवन-चरित, कलकत्ता ।
शंकरदेव, द्वितीय संस्करण, बरकटकी एजेन्सी, कलकत्ता, 1926 ।
श्री शंकरदेव अरु श्रीमाधवदेव, लेखक द्वारा प्रकाशित, 1914 ।
गदाधर सिंह, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1966 ।
मोर जीवन सौवरण, भाग-1, वह्नि प्रकाश कार्यालय, कलकत्ता, 1945 ।
मोर जीवन सौवरण, भाग-2, असम साहित्य सभा, गौहाटी, 1961 ।
बेजबरुवार वंशावली, लेखक द्वारा प्रकाशित ।
लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा सम्बन्धी पोथी सभ :—
विश्वरसिक बेजबरुवा, कमलेश्वर चलिहा, बरकटकी कम्पनी, जोरहाट, 1939 ।
बेजबरुवार साहित्य प्रतिभा, साहित्य सभा द्वारा संपादित, साहित्य प्रकाश, गौहाटी, 1961 ।

Indian
117171
19/12/04

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

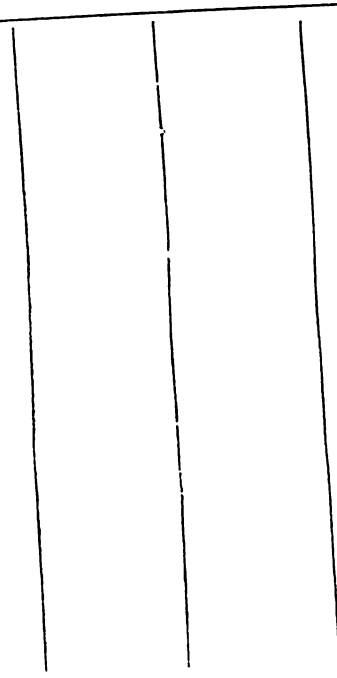

CP&SHPS—519.I.I.A.S./2004-25-6-2004-20000.

असमियाक राष्ट्रीय गीत 'ओ मोर आपनर देश'क स्रष्टा लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा (1868-1938) केर सम्बन्ध मे ई कहल जा सकैत अछि जे हुनक नामक चर्चा असमबासीक बीच मे राष्ट्रध्वज फहराएब जकाँ अछि।

ई आश्चर्यजनक बात अछि जे आत्मनिर्वासित देशभक्त आधुनिक असमिया साहित्यक प्रमुख शिल्पीसभ मे सँ एक छथि। जेना आइ हमरा लोकनि कैं ज्ञात अछि हिनक प्रतिभा सँ निबन्ध, नाटक, कथा-साहित्य एवं कविता सभ श्रीसम्पन्न भेल अछि। प्रायः हिनक समकालीन केओ आन व्यक्ति अपन अद्‌भुत निष्ठा एवं बहुआयामी प्रतिभा सँ हिनका जकाँ असमिया या साहित्यक श्रीवृद्धि मे योगदान नहि कएलैन्हि अछि।

''असमीज लिटरेचर'' नामक पोथीक रचयिता प्रो॰ हेम बरुवा प्रस्तुत पुस्तिका मे असमिया साहित्य मे लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाक स्थान निरूपण पण्डितक प्रज्ञा एवं कविक सम्वेदनाक संग कएलैन्हि अछि।

Library IIAS, Shimla
MT 891.450 92 B 469 B
00117171

कवर डिजाइन : सत्यजित रे
रेखाचित्र : श्यामल सेन

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00